श्री सिद्ध किशोरी
चरितामृत-सागर

जानें। इतने पर भी जब आप को संतोष नहीं हुआ, तो कबूतर की तेरही के दिन उसके कल्याणार्थ स्थान में कुछ साधू संतों को निमन्त्रित करके उसका भंडारा भी करा दिया। अन्त में उस कबूतर की जय बुलाकर सब महात्माओं को कुछ भेंट बिदाई दे दिला कर ही बिदा किया। अहा! एक पक्षी के लिये भी आप का इतना प्रेम और उस पर इतनी दया व अनुकम्पा। धन्य है आपके इस प्रकार के कोमल हृदय एवं दयालु स्वभाव को!

पाठको! श्री सिद्धकिशोरी जी को हमारे समाज में सात वर्ष स्वरूप बनते व्यतीत हुये परन्तु हमने आपके मुखारविन्द पर कभी किसी प्रकार की चिन्ता, फ़िकर, दु:ख, शोक, मलाल, नहीं देखा। आप निरन्तर प्रसन्नचित्त एवं परमानन्द में ही मग्न रहा करती थीं। आप का हृदय अहर्निश प्रफुल्लित दिखाई पड़ता था। घण्टों तक शृंगार धारण करके झूला झूलने या झाँकी में भी आपका चित्त कभी दु:खी या उदास नहीं देखा गया। यदि आपको कभी दु:ख होता था तो केवल ग़रीबों एवं दुखियों की दयनीय दशा को देख-देख कर। संसार क्या है, इसका तो आप को कुछ भान ही न था, घर का क्या हाल-चाल है, इन बातों की आप को कभी परवाह तक न रहती थी। अपने शुद्ध अन्त:करण का परिचय देते हुये यदि किसी प्रेमी ने आपको प्रेमपूर्वक मैया-मैया कह दिया उसको बेटा-बेटा कह कर या तो दुलरुवा कहते हुये अपनी गोदी में बैठा लेने में भी आपको कभी कोई संकोच न होता था। आपके प्रधान दुलरुवा तो पटना श्री किशोरी बाग निवासी श्री जगत बाबू ही हैं, जिनको अपनी प्यारी मैया (श्री सिद्धकिशोरी जी) की गोदी में बैठने का कई बार सौभाग्य प्राप्त हुआ। एवं इस जीवनी के लेखक (भैया श्री लक्ष्मीनिधि जी) भी जब कभी श्री किशोरी जी को श्री बहिन जी कह कर बुलाते तो भरे दरबार में नि:संकोच भैया-भैया कह

कर उनको गोदी में भी आन कर बैठ जातीं, केवल इतना ही नहीं उनके मुँह तक को चूमने लग जातीं। आप को इस में कोई संकोच भी नहीं होता था। कारण कि आपका हार्दिक भाव तथा प्रेम कोई बनावटी तो था नहीं, बिल्कुल सच्चा ही था, इसके अतिरिक्त आप अपने अन्तर्यामीपने के कारण भी पहिले सब प्रेमियों की हार्दिक भली- बुरी भावनाओं को अच्छी प्रकार टटोल कर तब उनसे व्यवहार, एवं प्रेम-बर्ताव करती थीं। उनके गुणों का कहाँ तक वर्णन करूँ। जब उनकी याद आ जाती है, तो हृदय फटने लगता है। जैसे देखने में श्री सिद्धकिशोरी जी सुन्दर थीं उससे भी कहीं अधिक उनका सरल हृदय था। व्यवहार और बर्ताव से भी अति सुन्दर थीं। यदि सरल हृदय न हो और कितनी भी सजावट की जाय, तो सब की सब व्यर्थ और दुखप्रद होती है।

(३८) श्री हनुमत निवास में श्रृंगारी श्री रामानुजदास जी रहते हैं। श्री पुजारी जी का कथन है कि उनके दिल में कभी यह शंका उत्पन्न हुई कि बिहौतीभवन की श्री किशोरी जी यदि हमको भी कोई चमत्कार दिखावें तभी हम उनको "श्री सिद्ध किशोरी जी" कहेंगे। एक दिन श्री युगल सरकार श्रावण मास में श्री सद्गुरुसदन में झूला झूल रहे थे। अकस्मात् रामानुज-दास जी भी पहुँच गये और श्री रामायण गान करने लगे, रामायण गान होने के पश्चात् श्री सिद्धकिशोरी जी ने उन को अपने पास बुला कर उनका हाथ पकड़ एक बीड़ा पान देते हुये कहा कि आप तो महात्मा हैं, और लीलास्वरूपों के श्रृंगारी भी हैं! आपके मन में इस प्रकार की शंका का उत्पन्न होना उचित नहीं था। जाओ फिर इस प्रकार की शंका अपने मन में कभी नहीं लाना। इतना सुनते ही श्रृंगारी जी ने लज्जित होकर सरकारी चरण पकड़े और तब से आप

नित्यप्रति दर्शनार्थ विहौती भवन आने जाने लगे। शृंगारी जी का कहना है कि न जाने श्री सिद्धकिशोरी जी में क्या आकर्षण था, क्या जादू था, कि जब तक मैं प्रतिदिन उनका दर्शन न कर लेता मुझे कल ही न पड़ती थी।

(३६) श्री पुजारी जी इस प्रकार कथन कर रहे हैं कि जिस की इच्छा विशुद्ध एवं विश्वास प्रबल होता है, उसके लिये संसार में कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहता। श्री सिद्ध-किशोरी जी के अनन्य प्रेमी, श्रद्धालु भक्तवर श्री विभूतिनाथ झा जी I. A. S., जो कि पहले श्री गया जी में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे (और आज कल मुजफ्फरपुर में जिला मजिस्ट्रेट हैं) अपने मकान पर श्री सिद्धकिशोरी (युगल सरकार) द्वारा श्री विवाह-कलेवा उत्सव एवं झाँकियों का पूर्णानन्द प्राप्त करते-करते श्री सिद्धकिशोरी जी में पूर्ण श्रद्धा के अतिरिक्त आप को इस बात का भी अनुभव हो गया था, कि श्री किशोरी जी जो बात अपने मुखारविन्द से कह देंगी वह कभी निष्फल नहीं होगी, इसी दृढ़ विश्वास के आधार पर ही तो आप ने उस समय परीक्षा दे कर उसमें उत्तीर्ण होने के लिये श्री किशोरी जी के चरणों में नम्र प्रार्थना की थी, यद्यपि आपका उस समय की दी हुई कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना असम्भव था, तथापि आप का सच्चा प्रेम, श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास देख कर श्री सिद्धकिशोरी जी ने आपके मस्तक पर अपना करकमल फेरते हुये परीक्षा उत्तीर्णार्थ आशीर्वाद दे ही तो दिया, और आप भी कृतकृत्य हो गये। आपके हृदय में दृढ़ विश्वास जम गया कि श्री सिद्धकिशोरी जी का आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं जा सकता।

श्री पुजारी जी का कथन है कि कुछ दिन बाद हमको बाबू बल्लभसहाय जी वकील के निमन्त्रण में देवरिया जाना पड़ा।

यहाँ से बिदा हो वहाँ पहुँचने पर उत्सव आरम्भ होने लगा, श्री गया जी से देवरिया में एक पत्र श्री मजिस्ट्रेट साहब का हमारे नाम पहुँचा, उसमें लिखा था कि दुर्भाग्यवश हम परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुये। उसी रात को श्रृंगार हो चुकने के पश्चात मैंने वही पत्र श्री किशोरी जी की सेवा में उपस्थित करते हुये प्रार्थना की कि आपने मजिस्ट्रेट साहब को गया जी में बिना सोचे समझे आशीर्वाद तो दे दिया था कि आप पास हो जायँगे, परन्तु वह लिखते हैं कि हम पास नहीं हुये। अब वहाँ के लोग आपकी कितनी हँसी करते होंगे! उस पत्र को देखते ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने तुरन्त उत्तर दिया कि हम इस पत्र को नहीं मानतीं, यह झूठा है, श्री झा जी कदापि फेल नहीं हो सकते, वे तो पास हो चुके हैं। इधर चार पाँच दिन के पश्चात् श्री झा जी का फिर दूसरा पत्र आता है, उसमें लिखा था कि श्री सिद्धकिशोरी जी के आशीर्वाद एवं कृपा द्वारा हम पास थे, हमारा नम्बर भूल से अखबार में नहीं निकला था, इसी से हमने अनुमान कर लिया था कि हम फेल हो गये। किन्तु आज परीक्षा गजट देखने से मालूम हुआ कि हम पास हैं। देखिये सज्जनो! श्री सिद्धकिशोरी जी का अन्तर्यामीपना एवं भविष्य-वाणी कितनी सच्ची निकली, उन्होंने तो पहिले से ही कह दिया था कि "श्री झा जी पास हो चुके हैं। वह कदापि फेल हो नहीं सकते।"

(४०) श्री पुजारी जी का कथन है कि श्री गया जी में बाबू राघो जी (पेशकार साहब) के मकान पर श्री युगल सरकार की रात्रि समय झाँकी हुई। श्री सिद्धकिशोरी जी की आज्ञानुसार ही ब्यारू में साग पूड़ी न बन कर केवल चार सेर दाल चावल की खिचड़ी और साग ही हमारे समाज के लिये बना। झाँकी में दर्शनार्थ बहुत से साधु महात्मा एवं कई परिचित प्रेमी दर्शक

भी एकत्रित हो गये थे। झांकी समाप्त होने पर जब ब्यारू की तैयारी हुई तो बहुत से प्रेमी दर्शक एवं साधु मण्डल भी प्रसाद सेवनार्थ पंगत में बैठ गये। मूर्ति अधिक हो जाने के कारण इधर मुझे संकोच था कि सामान कम पड़ जाने से भारी हँसी होगी, उधर सब के हृदय की जाननहारी श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपनी सिद्धाई का एक अपूर्व चमत्कार दिखलाया। मुझे अपने समीप बुला कर आज्ञा दी कि जो कोई भी भोजन के निमित्त पंगत में बैठ जावे उसको प्रेम से ब्यारू कराया जावे, किसी का निरादर न होने पावे तो सामान में कभी कमी न पड़ेगी। सज्जनो! उस समय गिनने से मालूम हुआ पंगत में छिहत्तर (७६) मूर्ति थे, सबने पेट भरकर खिचड़ी, साग का भोजन किया। छिहत्तर मूर्ति छक गये पर सामान कम नहीं पड़ा। बल्कि एक थाली खिचड़ी बच भी गई, इस अनुपम चमत्कार को देख सुन कर लोग दंग रह गये।

(४१) श्रावण में झूलन महोत्सव पर जब कि श्री युगल सरकार झूला झूल रहे थे। तब हमारे श्री वैष्णव समाज के वयोवृद्ध, बीतराग पूज्यपाद पं० श्री रामबल्लभाशरण जी महाराज श्री जानकी घाट निवासी भी दर्शनार्थ पधारे। भगवत् भागवत् के अतिरिक्त आप तो श्री लीलाबिहारी स्वरूपों के भी भावुक थे ही, कारण कि (आपको एक समय श्री लीला स्वरूपों ने प्रत्यत्त दर्शन भी दिया था। और उनकी आज्ञा आपके लिये हो चुकी थी कि जिस समय लीलास्वरूपों का शृंगार हुआ हो, उस समय उनमें एवं मन्दिर की मूर्तियों में कोई भेद भाव न समझना चाहिए, यदि कोई अभाव करता है, या ग्लानि करता है तो उसको भारी अपराध लगता है। और इसके साथ हो साथ आपको यह भी सरकारी आज्ञा मिली थी कि आप संसारी लोगों को कथामृत पिला-पिला कर तृप्त करें) इतना

कह कर श्री युगल सरकार लीलास्वरुप अन्तर्धान हो गये थे। तब से आप शृंगार किये हुये स्वरूपों को साक्षात् पूर्णब्रह्म साकेताधिपति ही मानने लगे थे। श्री रामायण प्रेस लहरिया सराय द्वारा छपी हुई श्री महाराज जी की जीवनी देखो पेज नं० ४४। श्री सिद्धकिशोरी जी की ज्यों ही आप पर दृष्टि पड़ी, बड़े प्रेम उत्साह से उनका हाथ पकड़ कर अपने झूले के समीप बिछे हुये सुन्दर कालीन पर सादर बैठाया। फूलमाला, इलाइची, पान द्वारा सत्कार करके इत्र से भरी हुई शीशी लेकर अपने ही करकमलों द्वारा श्री महाराज़ जी की सफेद दाढ़ी को इतना तर किया कि उसमें से इत्र की बूँदें टपकने लगीं। श्री महाराज जी भी अपने ऊपर सरकारी कृपा को देखकर कृत-कृत्य हुये। प्रेम पूर्वक श्री युगल सरकार की रूप छटा का अवलोकन करते-करते भावावेश में हो गये। सरकारी अधरों पर मधुर मुस्कान एवं बड़े-बड़े नेत्र कमलों की कटीली चितवन निहारते-निहारते तथा उनके दूसरे अंगों की मनोहरता को भी देख-देख कर आपकी तृप्ति ही नहीं होती थी। आनन्द का श्रोत आपके हृदय में उमड़ने लगा, रात्रि के दो बजे झूला समाप्त होने पर ही आप ने श्री युगल सरकार को अपने हृदय से लगाया एवं श्री सिद्धकिशोरी जी के कुशल व्यवहार की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये बिदा होकर अपने स्थान पर पहुँचे।

(४२) श्री पुजारी जी का कथन है कि हमको किसी आवश्यक कार्य के निमित्त बरेली अन्तर्गत उनई रियासत में जाना था। रविवार का दिन था हमने श्री सिद्धकिशोरी जी से जाने के लिये आज्ञा माँगी तो उत्तर मिला कि आप जा सकते हैं। परन्तु इस बात को भूलना नहीं कि आपके पीती सुन्दरपाण्डेय जी जो कि कई दिनों से बीमार पड़े हैं वे आज से पाँचवें दिन गुरुवार साढ़े सात बजे शाम को इस लोक से बिदा होने वाले

हैं ! आपको यदि गुरुवार से पहिले वापस आ जाना हो तब तो ठीक है, नहीं तो इनके लिये कफन आदि सामग्री का प्रबन्ध करके ही जाना। देखिये पाठको ! श्री सिद्धकिशोरी जी के कथनानुसार गुरुवार को साढ़े सात बजे शाम को पाण्डेय जी हमेशा के लिये इस लोक से विदा हो ही तो गये। अब जरा विचारिये तो। कि पाँच दिन पहिले किसी का मरण समय निश्चित कर लेना क्या कोई साधारण बात है ? इस प्रकार की भविष्यवाणी भला सिद्ध पुरुषों के अतिरिक्त किसी की क्या शक्ति है कि कह सकें ?

(४३) श्री पुजारी जी का कहना है कि एक समय रियासत उनई (जो कि बरेली से लभग १६ मील है) में हमारे समाज को निमंत्रित होकर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ पहुँचने पर कई दिनों तक श्री विवाह-कलेवा एवं झाँकियों का अपूर्व आनन्द हुआ। विदाई के समय स्टेशन तक पहुँचाने के लिये श्री राम जी ने तो घोड़े की सवारी पसन्द की, और श्री किशोरी जी ने सेजगाड़ी। वहाँ से विदा होकर हम लोग जब कुछ दूर पहुँचे तो श्री किशोरी जी ने घोड़े पर चढ़ने की इच्छा प्रकट की, परन्तु श्री राम जी उनको घोड़ा देना नहीं चाहते थे। मेरी प्रार्थना पर उन्होंने कुछ समय के लिये घोड़ा श्री किशोरी जी को दे दिया, और स्वयं सेजगाड़ी में बैठ गये। घोड़ा बड़ा चञ्चल था इसलिये मैंने महात्मा श्री महावीर दास जी से कहा कि आप भी इस घोड़े पर सवार होकर श्री किशोरी जी को अपनी गोदी में ले लें। दोनों घोड़े पर सवार होकर चलने लगे, थोड़ी देर के बाद श्री राम जी सेजगाड़ी से उतर कर अपना घोड़ा वापस लेने के लिये मचलने लगे, परन्तु श्री किशोरी जी घोड़ा नहीं देना चाहती थीं। फिर दुबारा श्री राम जी ने श्री किशोरी जी तथा श्री महावीर दास जी से भी कहा, कि मान जाओ

घोड़ा हमें वापस दे दो नहीं तो मन्त्ररूपी बाण चला कर तुम दोनों को हम नीचे गिरा देंगे। जब घोड़ा नहीं दिया तो श्री राम जी ने एक ऐसा संकेत किया कि वह दोनों घोड़े पर से नीचे गिर पड़े मगर चोट किसी को भी नहीं लगी। इधर घोड़ा खाली देख कर श्री राम जी घोड़े पर सवार हो गये। और श्री सिद्ध-किशोरी जी सेजगाड़ी में बैठ गईं। अब तो श्री किशोरी जी ने भी सेजगाड़ी में बैठे-बैठे श्री राम जी को चुनौती दी कि आप ने तो धोखा देकर हमको घोड़े से नीचे गिराया है इसलिये अब आप भी सावधान हो जायँ हम बदला जरूर लेंगी आपको भी घोड़े से नीचे गिराये बिना नहीं मानेंगी। सज्जनो! यद्यपि उस समय श्री राम जी कुछ सम्भल कर सावधानतापूर्वक घोड़े पर डटे हुये थे परन्तु इधर से श्रीकिशोरी जी का संकेत पाते ही वे भी नीचे गिर पड़े और उनको भी कहीं चोट नहीं लगी। अब घोड़े को बाँस बरेली स्टेशन तक खाली ही चलना पड़ा। श्री युगल सरकार सेजगाड़ी द्वारा स्टेशन तक पहुँचे। सज्जनो! यों तो श्री राम जी, श्री अवधबिहारीशरण जी, श्री मनमोहन सरकार, श्री साकेतबिहारीशरण जी, श्री जुल्फ़ वाले सरकार, श्री मौरसर वाले सरकार एवं इन सबकी श्री महारानियों के भी चमत्कारी चरित्र बहुत से हैं। परन्तु भैया लक्ष्मीनिधि जी (लेखक) इस समय तो श्री सिद्धकिशोरी जी की जीवनी को ही लिख रहे हैं, इसलिये केवल उन्हीं के चरित्रों का वर्णन हो रहा है।

(४४) डी. आई. जी. पुलिस मुजफ्फरपुर के बड़े बाबू श्री रामदैनी सिंह जी का कथन है। कि सन् १६३६ में कसियावे जिला मुंगेर में एकादशी के दिन से गंगातट पर श्री सीतारामी यज्ञ प्रारम्भ होना था, उसके उपलक्ष में बिहौतीभवन समाज को भी परिकर सहित निमन्त्रण था। जिस समय हम वहाँ पहुँचे

तो श्री युगल सरकार सवारी पर से नीचे उतर कर यज्ञभूमि तक पैदल चलने लगे, इनकी सादी पोशाक पीताम्बर चौबन्दी, दुपट्टा, सिर पर जरीदार टोपियाँ, मस्तक पर चन्दन का तिलक, केशर की खौर, घुँघराले चिकने केश, हाथों में चाँदी की मूठ लगी सुन्दर छड़ियाँ तथा चरणों में मखमली जड़ाऊ जूते पहिने देखकर कुछ देहाती लोग इनकी मनोहर मुस्कान एवं श्याम-गौर सुन्दर झाँकी निहारते ही ऐसे प्रभावित हुये, उन्हें उस समय ऐसा भान होने लगा, मानो यह दोनों सुन्दर सुकुमार बालक आज इस यज्ञ भूमि के हवनकुंड से ही प्रकट हुये हैं। प्रेमावेश में आकर उन लोगों ने गाँव में जाकर हल्ला मचा दिया कि आज इस हवनकुंड में से दो सुन्दर बालक प्रकट हुये हैं। पटना लेजिस्लेटिव ऐसेम्बली के स्पीकर बाबू रामदयालुसिंह जी, पं० श्री दुर्गादत्त जी रिटायर्ड डिप्टीकलेक्टर, श्री मस्तराम जी, श्री वैष्णव दास जी, श्री जटिल बाबा जी और भी कई महात्मा व प्रेमी लोग श्री युगल सरकार के साथ-साथ चल रहे थे। ज्यों ही देहाती लोगों में इस घटना की चर्चा फैली, जिस किसी ने भी सुना, सब दर्शनार्थ जिस दशा में थे घरों से दौड़े आये। जनता की अपार भीड़ जमा हो गई जिसकी कोई गणना न थी, यहाँ तक कि हम लोगों को यज्ञ भूमि तक जाना कठिन हो गया, रास्ते ही में सब देहाती लोगों ने श्री युगल सरकार को चारों ओर से घेर लिया। भीड़ को हटाने के लिए प्रबन्ध कर्ताओं ने विवश होकर लाठियों से भी काम लिया, परन्तु उस समय वहाँ किसी की दाल न गली। दर्शक लोग टस से मस न हुये। सब अपनी जगह पर दर्शनार्थ डटे रहे! केवल इतना ही नहीं, लाठियों की मार एवं धक्कों मुक्कों को सहन करना तो उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया, मगर बिना दर्शन किये घरों को लौट जाना किसी को भी स्वीकार न हुआ। स्पीकर

सा० के कई सिपाहियों द्वारा भी काफी प्रबन्ध होने पर जब कोई सफलता प्राप्त न हुई, श्री युगल सरकार बराबर उसी प्रकार रास्ते में ही रुके रहे, तब तो सब प्रेमी लोग बड़े असमंजस में पड़ गये कि अब क्या करना उचित है।

सज्जनो! आर्त एवं दीन दुःखी भक्त की करुण पुकार और प्रार्थना को आर्तहरण दीनबन्धु भगवान भला कब टाल सकते हैं? एवं किसी प्रेमी की सच्ची लगन और पुकार क्या नहीं कर सकती? उसी समय श्री किशोरी जी ने अपने करकमलों के इशारे मात्र से समस्त खड़े हुये दर्शकों को ढाढ़स देते हुये अपनी अपनी जगह पर बैठ जाने की आज्ञा प्रदान की, सरकारी संकेत पाते ही सब लोग तुरन्त बैठ गये। दो कुर्सियाँ मँगवाई गईं, किसी मकान की छत पर रखवा कर श्री युगल सरकार को उन पर विराजमान करा दिया गया, इस प्रकार समस्त दर्शकों को श्री युगल सरकार ने अपना शुभ दर्शन देकर कृतार्थ किया। जब दर्शन करके सब लोग अपने-अपने घरों को चले गये, तभी श्री युगलसरकार अपने परिकर सहित यज्ञभूमि तक पहुँच सके, इसी प्रकार निरन्तर सात दिन तक हजारों जनता प्रतिदिन दर्शनार्थ एकत्रित होती रही, उनमें से कोई-कोई तो यज्ञभूमि का दर्शन करता, नहीं तो सब लोग श्री युगल सरकार के दर्शनार्थ आते और दर्शन करके वापस अपने घरों को लौट जाते।

जिस दिन सरकार वहाँ से दूसरी जगह जाने के लिये प्रस्थान करके रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो जनता की अधिक भीड़ के कारण रेलगाड़ी को भी आधा घंटा तक रुकना ही पड़ा। किसी की बारात को उसी गाड़ी से जाना था, समस्त बराती लोग अपने सामान सहित रेलगाड़ी में बैठ गये। जब दूल्हा को कहार लोग पालकी द्वारा स्टेशन के समीप लाये तो लोगों की अपार भीड़-भाड़ के कारण रास्ता न मिलने से कहारों ने दूल्हा की

पालकी को वहाँ रख दिया, और कुछ आगे बढ़ कर वह कहार भी श्री युगल सरकार की अनुपम झाँकी का दर्शन करने लगे, कहार लोग दर्शन करने में इतने मग्न हो गये कि वह अपने दूल्हा की पालकी की सुध भी भूल गये। परिणाम यह हुआ कि समस्त बराती तो उस रेलगाड़ी से चले गये, मगर दूल्हा साहब अकेले पालकी में ही बैठे रह गये। इधर श्री किशोरी जी को दूल्हा की दशा देखकर दया आई और उन्होंने उसको भोजन के अतिरिक्त एक लोटा और गिलास भी जल पीने को दे दिया, कारण कि दूल्हा को गाड़ी कई घण्टे बाद मिलनी थी।

(४५) बाबू रामदैनी सिंह जी का कथन है कि बेगूसराय के समीप एक तलरथ स्टेशन है। श्री बिहौतीभवन समाज वहाँ पहुँचा तो रेलगाड़ी छूट गई थी। वहाँ के स्टेशन मास्टर साहब ने ज्योंही श्री युगल सरकार की अनुपम सुन्दर छटा को अवलोकन किया, आप तो देखते मात्र ही ऐसे आकर्षित एवं मोहित हुये कि अपने शरीर की सुध बुध तक भूल गये। आपने बड़े प्रेम उत्साह के साथ समस्त समाज के भोजन एवं आराम करने का प्रबन्ध कर दिया और गाड़ी आते ही हम लोग तलरथ से चलकर सलोना स्टेशन पर पहुँचे। उस समय वहाँ के स्टेशन मास्टर श्री ब्रह्मदेवनारायण जी थे। उन्होंने केवल आगत स्वागत ही नहीं किया, वह तो मारे प्रेम के श्री पुजारी जी महाराज के शिष्य ही बन गये।

शकरपुरा स्टेट के राजा साहब की वर्ष गाँठ के उपलक्ष में हमारे समाज को निमंत्रण मिल चुका था इसलिये वहाँ पहुँचकर कई दिन तक श्री विवाह-कलेवा उत्सव झाँकियाँ भी हुईं। राजा साहब ने अपनी सेवा और उदारता का पूर्ण परिचय दिया, खूब प्रेम से सेवा की। किसी दिन दोपहर के समय

श्री पुजारी जी को अपने किसी शिष्य के अधिक आग्रह करने पर सरकारी आज्ञा लेकर केवल तीन चार घण्टे के लिये समीप के एक ग्राम में जाना था। उनके चले जाने के पश्चात् चार अनाथ स्त्रियाँ पहुँचीं जिनके शरीर पर केवल एक-एक फटी पुरानी साड़ी थी, उनकी इस प्रकार की दैन्य एवं शोचनीय दशा भला श्री सिद्धकिशोरी जी से कब देखी जा सकती थी? आपने उन चारों को तुरन्त अपने समीप बुलाकर कुछ जलपान कराया और चार नई साड़ियाँ भी उनको पहना दीं, और घर में ले जाने के लिए कुछ चावल दाल भी गठरी में बाँधकर उनको दे दिये। आहा! धन्य कितनी उदारता है, कितनी निःस्वार्थ दया है, ठीक भी है। उदारता एवं दयालुता तो अनाथ, गरीब तथा दुखी की सेवा करने पर ही शोभा देती है, भरे को अधिक भरने में भला कौन सी उदारता है? श्री सिद्धकिशोरी जी को दूसरों को खिलाने में बहुत ही सुख मिलता था, सच है! खाने का आनन्द तो जीव का है, एवं खिलाने का आनन्द ईश्वर का। जिसको खिलाने का स्वाद मिल गया तब उसके स्वयं खाने का स्वाद भी फीका पड़ जाता है। ठीक यही हाल श्री किशोरी जी का था। सन्ध्या समय जब श्री पुजारी जी अपने सेवक के घर से लौट कर आये तो आते ही तुरन्त उन्हें सब वृतान्त कह सुनाया। श्री महाराज जी सुनकर अति प्रसन्न हुये और प्रसन्नता के मारे श्री किशोरी जी को प्यार से गोदी में ले लिया।

(४६) कानपुर हटिया बाजार के भक्त श्री रामकृपालशरण जी का कथन है कि एक समय हम चार मूर्ति कानपुर से श्री अयोध्या जी दर्शनार्थ गये, और कुछ काल रह कर दर्शन किये। घर लौटते समय श्री अयोध्या जी से चार पीतल के साधू-शाही बड़े लोटे बाजार से खरीदे उनको श्री सरयू जी में माँज धोकर शुद्ध किया। तब यह निश्चय किया कि इन नये लोटों में पहिले भगवान को

कुछ दूध भोग लगा दें। बाजार से उन चारों लोटों में दूध लिया गया, तब हम लोग श्री बिहौतीभवन पहुँचे। वहाँ जाकर श्री पुजारी जी से उस दूध को श्री युगल सरकार के भोग लगाने के निमित्त प्रार्थना की। श्री पुजारी जी दूध को देखते ही अपना मत्था ठोंक कर आँसू बहाने लगे, हमने उनसे पूछा कि इसका क्या कारण है क्या हमसे कोई अपराध हो गया है ? महाराज बोले नहीं, आपसे क्या अपराध होना था, आप तो बड़भागी हैं जो आज श्री किशोरी जी की अभिलषित वस्तु को भोग के निमित्त लाये हैं, हम ही अभागे हैं जो हमसे आज श्री किशोरी जी की आज्ञा की अवहेलना हो गई। आज प्रातः काल श्री किशोरी जी ने बड़ी कृपा कर केवल आधा सेर दूध मँगवाने की हमें आज्ञा दी थी हम दूध मँगवाना भूल गये। आपसे पहिले भी तीन प्रेमी दूध ला चुके हैं, (वह देखो कड़ाही में औट रहा है) इधर आप लोग भी दस सेर दूध ले आये हैं आज तो शाम तक दूध ही दूध आयेगा, यही तो श्री सिद्धकिशोरी जी की विचित्र लीला है। हम लोग बातचीत कर ही रहे थे कि इतने में दो प्रेमी आये वह भी दो लोटों में कुछ दूध ही ले आये। दूसरे दिन मालूम हुआ था कि उस दिन सवेरे से रात्रि तक जो कोई भी प्रेमी दर्शनार्थ आया कोई दूसरी वस्तु न लाकर केवल दूध ही दूध सरकारी भोग के लिये लाया। सज्जनो ! इसी को कहते हैं "उर प्रेरक रघुवंश विभूषण"। यदि श्री सिद्धकिशोरी जी की प्रेरणा न होती तब आज सब प्रेमी कोई दूसरी वस्तु न लाकर केवल दूध ही दूध क्यों लाते ?

(४७) श्री लक्ष्मणशरण जी का कथन है कि श्री हनुमत निवास में एक परम प्रसिद्ध पूज्य महात्मा श्री रामकिशोरशरण जी महाराज निवास करते हैं, मैं निरन्तर उन्हीं की सेवा में रहा करता था और अब भी उन्हीं की सेवा में रहता हूँ।

सम्वत् १९९० में श्री सिद्धकिशोरी जी के कुछ चमत्कार देख सुन कर उन्हीं की सेवा में निरन्तर रहने लगा, जिससे श्री महाराज जी की सेवा भी कुछ काल के लिये मुझसे छूट गई। एक दिन श्री किशोरी जी ने मेरे राम से पूछा कि आप अपने घर कब जाओगे? मैंने उत्तर दिया कि जिस घर को छोड़ आया फिर वहाँ क्या जाना। दुबारा श्री किशोरी जी ने संकेत करते हुये कहा, कि साधुओं का घर श्री मिथिला जी है। उसी घर में तुम्हें अवश्य और शीघ्र जाना पड़ेगा। यद्यपि श्री महाराज की सेवा छोड़ कर मेरे मन में कहीं भी जाने का कभी विचार नहीं उठता था, मगर यह श्री सिद्धकिशोरी जी की ही लीला थी, उन्हें अपने वचन को सत्य करना था, इसलिये दूसरे ही दिन से मेरा चित्त उचाट होकर श्री मिथिला जी के स्वप्न देखने लगा। दो-चार ही दिन में श्री मिथिला जी के दर्शनों की लालसा अधिक बढ़ने लगी, मैंने कार्तिक शुक्ल अक्षयनौमी को श्री अयोध्या जी की चौदह कोसी परिक्रमा की, और श्री युगल सरकार के चरण स्पर्श कर उनकी आज्ञा और आशीर्वाद ले दूसरे ही दिन श्री जनकपुर (मिथिला) के लिये प्रस्थान कर दिया। अपने आधार के निमित्त मैंने केवल श्री युगल सरकार की फ़ोटो साथ में ले ली, इसी प्रकार श्री जनकपुरी के दर्शन करके मैं फिर कुछ दिन पश्चात् श्री अयोध्या जी लौट आया। सज्जनो! श्री महाराज जी की सेवा को छोड़ कर कहीं भी बाहर जाने का मेरा कदापि स्वप्न में भी संकल्प नहीं हुआ था, यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की भविष्यवाणी की लीला एवं वाक्यसिद्धि का चमत्कार ही था, जिसने प्रत्यक्ष मुझे श्री महाराज जी की सेवा से पृथक कर श्री जनकपुर में भेज दिया।

(४८) श्री लक्ष्मणशरण जी का कहना है कि एक दिन रात्रि के आठ बजे थे। श्री सिद्धकिशोरी जी ने मुझे बुला कर

Scanned by CamScanner

कहा कि तुम नित्य प्रति सेवा के लिये कहा करते हो, क्या आज हमारी सेवा करने को आप स्वीकार करेंगे ? मैंने उत्तर दिया अहोभाग्य ! जो भी सेवा होगी तुरन्त बजा लाऊँगा। तब श्री किशोरी जी ने आज्ञा दी कि अच्छा जाओ-मूँग की दाल की कुछ ताजी पकौड़ी बनाकर लाओ। मैंने उत्तर दिया कि अब सात बजे हैं, मूँग की दाल कब भीगेगी, कब पिसेगी, कब पकौड़ी तैयार होंगी, इसलिये कल बनाकर सेवा में अर्पण करूँगा। अभी वार्तालाप हो ही रही थी कि अकस्मात श्री हनुमत निवास के श्री उर्मिलाशरण जी आ पहुँचे, और करबद्ध प्रार्थना करने लगे कि श्री युगल सरकार के लिये मूँग की दाल के गरम-गरम पकौड़े मैं स्वयं अभी बना कर लाया हूँ, कृपा करके इनको स्वीकार किया जाय। श्री युगल सरकार उनके इस उपहार को लेकर सेवन करने लगे, तो इतने में पं० दुर्गादत्त जी का नौकर पहुँचा, वह भी डिप्टी साहब की ओर से मूँग की दाल के पकौड़े ही ले आया, उसको भी सरकार भोग लगाने लगे। इधर ज्यों ही आठ बजे कि श्री लवकुशशरण जी के मकान से भी मूँग की दाल के पकौड़े ही पहुँच गये।

इस प्रकार का अपूर्व चमत्कार देखकर मैं तो लज्जित हुआ और सरकारी चरणों में गिर कर क्षमा माँगी। अब तो मेरी श्रद्धा उनमें प्रति दिन बढ़ने ही लगी, और मैं श्री सिद्धकिशोरी जी को पूर्ण आदर की दृष्टि से देखने लगा। मुझे कई बार का अनुभव है कि जो भी इच्छा आप की होती वह अवश्य पूरी हुआ करती, कभी निष्फल नहीं जाती थी।

(४६) श्री लछमन शरण जी का कथन है कि रात के ११ बजे थे और सब लोग शयन कर चुके थे, श्री किशोरी जी शयन करना ही चाहती थीं, कि एक परदेशी कहीं से आकर उनके

समीप बैठ गया, जब कई बार कहने पर भी वह बाहर नहीं गया तब श्री किशोरी जी ने उससे प्रेमपूर्वक पूछा, सच-सच बताओ तुम कौन हो, यहाँ किस लिये आये हो और तुम बाहर क्यों नहीं जाते ? उसने कहा कि मैं चोर हूँ मेरे पास खर्चा नहीं रहा, बताओ अब मैं कहाँ जाऊँ ? देखा पाठको ! यदि कोई दूसरा होता तो चोर-चोर कह कर शोर मचा देता और उसको पकड़वा कर पुलिस के हवाले कर देता, परन्तु श्री किशोरी जी ने भारी साहस करते हुये अपने दयालु एवं भोले स्वभावानुकूल उस चोर से कहा कि हमारे पास तो केवल श्रृंगार ही रक्खा है, उसको लेकर तुम क्या करोगे ? यदि कुछ कपड़ों की आवश्यकता हो तो साड़ी और धोती मैं तुमको दे सकती हूँ, और यदि रुपये पैसे की आवश्यकता है तो श्री हनुमत निवास में चले जाओ वहाँ खूब धन मिलेगा। ज्योंही वह चोर उठ कर चरण स्पर्श कर जाने लगा, तब उसको फिर बुला कर कहा कि देखो। श्री हनुमत निवास के महाराज जी सिद्ध महापुरुष हैं, उनके स्थान में बहुत से साधू-सन्त भी रहते हैं, अगर पकड़े गये तो वहाँ खूब पिटोगे भी ! इसलिये पं० लवकुशशरण जी के मकान पर (गोला घाट) चले जाओ वहाँ कुछ मालटाल तुमको मिल ही जावेगा। देखा पाठको ! सब लोग तो सो गये थे अकेली श्री किशोरी जी ने (जिनकी आयु उस समय केवल १० वर्ष की थी) एक चोर को किस चतुरता एवं बुद्धिमत्ता से अपने मकान से बाहर कर दिया। ज्योंही चोर बाहर निकला आप भी दरवाजा बन्द करके अपने पलंग पर शयन कर गईं। श्रावण मास था रात्रि के बारह बज गये थे, श्री लवकुशशरण जी सद्गुरु सदन में झूलन उत्सव के आनन्द में मग्न हो रहे थे। इधर सचमुच वही चोर श्री सिद्ध-किशोरी जी के वचनों का विश्वास करके उनके मकान पर पहुँच ही तो गया। और जो कुछ भी जेवर, रुपया-पैसा उसके हाथ

पड़े, उसी मंगल को मन्दिर भगवान के झूलन के साथ-साथ एक झूला लीलाविहारी स्वरूपों का भी अवश्य पड़ता और उसी रात को सरकार झूला झूल कर विश्राम करते और यही अन्तिम झूला माना जाता था।

एक समय की बात है। कि श्री हनुमत निवासी साधुओं में दो पार्टी हो गईं, एक पक्षवाले तो श्री सिद्धकिशोरी जी के लिये और दूसरे श्री पंजाबी भगवान के लिये लालायित थे। वर्तमान संत सेवी महन्त श्री रघुनन्दनशरण जी ने जो श्री लीला विहारी स्वरूपों के भी भावुक प्रेमी हैं, अपनी उदारता का पूर्ण परिचय देते हुये यह निश्चय किया कि इस साल दोनों झूले सजाये जावें, लीलास्वरूपों के दोनों युगल यहाँ पधार कर झूलें। भविष्य के लिये भी लीलाविहारी स्वरूपों के दोनों झूलों का नियम बाँध दिया (जो कि अभी तक बराबर चल रहा है) उसी समय श्री विहौतीभवन के श्री पुजारी जी एवं शृंगारी स्वामीदास जी को भी निमंत्रण भेजा गया, इधर दोनों पक्ष के प्रेमी साधुओं ने अपने-अपने श्री युगलसरकारों के निमित्त दोनों झूले बड़े प्रेम से सजाये, जिन पर सन्ध्या समय दोनों श्री युगल सरकार पधार कर झूलने लगे। रात्रि के नौ बजते ही श्री अयोध्या जी के एक नामी कथक "बल्देव" जी ने भी मन्दिर में पहुँच कर अपना गाना बजाना आरम्भ कर दिया। सर्व प्रथम उनका गाया हुआ पद यह था।

"कौशिल्या के कुँवर पर मुकदमा हम चलायेंगे।
न लेंगे माले मनकूला, न लेंगे गैर मनकूला
दो तरफा जुल्फ की कुर्की सियाबर की हम करायेंगे"

इतना सुनते ही श्री पंजाबी भगवान ने कथक से कहा कि हमारी जुल्फ की कुर्की मत कराओ इसके बदले में हमसे कुछ इनाम ले लो। इनसे प्रसाद इनाम एवं फूल माला लेकर कथक

जी अब दूसरे झूले के समीप पहुँचे, और वहाँ भी यही पद गाया, उधर से भी उतना इनाम इनको मिल गया। दूसरी बार फिर कथक जी श्री पंजाबी भगवान के समीप गये तो पहले से दूना इनाम, प्रसाद इनको मिला, इसी प्रकार दूसरे झूला से भी दूना ही मिला, ऐसा होते-होते परस्पर होड़ बँध गई। अब तो दोनों तरफ के प्रेमी भी सरकारी न्योछावरें करने लगे, कथक जी की मुट्ठी खूब गरम हो गई। फिर अपने उदार स्वभाव के अनुकूल श्री पंजाबी भगवान जी ने अपनी स्वर्ण की अंगूठी उतार कर कथक को देने का संकेत किया तो दूसरी तरफ से भी श्री सिद्धकिशोरी जी के सरकार कब चूकने वाले थे, उन्होंने तो अपने स्वर्ण के कड़े उतार कर देने का इरादा किया। शृंगारी स्वामीदास जी इस प्रकार का परस्पर सरकारी संकेत देख कर घबरा उठे और तुरन्त इसकी सूचना श्री धर्मभगवान जी को (जो कि वहीं उपस्थित थे) दे दी। तब श्री धर्मभगवान जी ने अपनी तीव्र बुद्धि द्वारा दोनों युगल के श्री सरकारों को समझाया, कि आप तो दोनों शाहन्शाह हैं, आपको क्या परवाह है, परन्तु परस्पर होड़ में बेचारे शृंगारी पिस जायँगे। इसलिये अब आप कथक को आभूषण देने का हठ न करें। हाँ ! अगर प्रेमी सन्त चाहें तो आपकी न्योछावर करके कथक को रुपया पैसा अपनी ओर से दे सकते हैं इसमें कोई आपत्ति नहीं है। श्री धर्मभगवान जी के स्वभाव तथा प्रभाव से समस्त लीलास्वरूप एवं शृंगारी परिचित थे ही, इसलिये उनके न्याय को टाल नहीं सके। यदि उस समय श्री धर्मभगवान जी पहुँच कर इस प्रकार का निर्णय न कर देते तो थोड़ी ही देर में श्री सिद्धकिशोरी जी के झूले के श्री युगल सरकारों का हजारों रूपयों का जेवर कथक की भेंट हो जाता। कारण कि श्री सिद्ध किशोरी जी ने पहिले से ही अपने गुरू महाराज से निश्चय

कर रक्खा था कि आज परस्पर की होड़ में हम पीछे न रहेंगे हम दोनों स्वरूप समस्त आभूषण उतार कर कथक को भेंट कर देंगे। इस प्रस्ताव को श्री पुजारी जी ने भी श्री सिद्ध-किशोरी जी की रुचि पर ही रख छोड़ा था कि जैसी आपकी इच्छा हो करें, हमको इसमें कोई भी आपत्ति नहीं है, हमको तो केवल सरकारी प्रसन्नता में ही प्रसन्नता है। फिर आपकी प्रसन्नता के सामने भला यह आभूषण किस गिनती में है।

सज्जनो ! इसी प्रकार झूला झूलते-झूलते प्रातःकाल होगया, न तो श्री युगल सरकार झूला झूलने में उकताये, और न ही दर्शक एवं प्रेमीजन बैठने से घबराये। अन्तिम आरती के समय जब कथक जी ने पद गाये, तो दोनों तरफ से प्रेमियों द्वारा सरकारी न्योछावरें होने लगीं यहाँ तक कि कथक जी की अधूरी थैली भी अब पूरी भर गई, और सब लोग सरकार की जय जयकार मनाते हुये अपने-अपने घरों के लिए बिदा हो गये।

(४२) श्री हनुमत निवास के वर्तमान महन्त श्री रघुनन्दन शरण जी के एक शिष्य थे जिनको सब लोग बंशी वाले बाबा कहा करते थे, वह प्रथम श्रेणी के नकाल और विदूषक भी थे। एक दिन सन्ध्या समय श्री बिहौतीभवन में श्री युगल सरकार की झाँकी होनी थी, शृंगार हो ही रहा था, कि अचानक बंशी बाबा पहुँच गये। श्री सिद्धकिशोरी जी ने इनको देखते ही अपने समीप शृंगार घर में बुलवा लिया और उनको कुछ नकलें सुनाने और जानवरों की बोलियाँ बोलने के लिये आदेश दिया। महात्मा जी अपना कर्त्तव्य दिखाने लगे। इनकी वजह से शृंगार में देरी होने लगी, उधर दर्शकगण जल्दी मचाने लगे, तो श्री पुजारी जी ने दो तीन बार शृंगारी जी को जल्दी शृंगार करने की सूचना भेजी, परन्तु जब उनकी बात की कोई सुनाई न

हुई, तो पुजारी जी कुछ रुष्ट होकर श्रृंगार घर में पहुँच गये। पहिले तो नक्काल जी को फिर मुझको भी (ल० शरण) श्रृंगार घर से बाहर निकाल कर श्रृंगारी जी को जल्दी श्रृंगार करने के लिये कह कर चले आये। इस प्रकार की घटना से श्री सिद्ध-किशोरी जी के चित्त पर भारी धक्का लगा। आप ने दुःखी होकर श्रृंगारी जी से कहा कि आप नीचे जाकर समस्त दर्शकों को सूचना दे दें कि वह सब अपने-अपने घरों को वापस लौट जावें आज झाँकी नहीं होगी। दर्शकगण श्रृंगारी द्वारा इस सूचना को पाते ही पुजारी जी के समीप जाकर इसका कारण पूछने लगे। तब श्री पुजारी जी ने श्री सिद्धकिशोरी जी से श्रृंगार घर में जाकर रुष्ट हो जाने का कारण पूछा तो उत्तर मिला कि यह कोई नाटक मण्डली अथवा मदारी का खेल तमाशा तो है नहीं, हमने न तो कोई टिकट बेचा है और न किसी से कोई रुपया-पैसा ही लिया है, तब हमको क्यों बार-बार दबाव दिया जाता है कि जल्दी करो जल्दी करो। हमारी प्रसन्नता एवं सुख में जब कि दर्शकगण इस प्रकार की बाधा पहुँचायेंगे, जब स्वयं हमारा ही चित्त प्रसन्न न होगा, तो हम दूसरों को क्या सुख दे सकेंगे। इसमें भाव भक्ति कहाँ रही ? यह तो नाटक जैसा केवल स्वाँग और खेल तमाशा ही हो गया। प्रेमियों को तो हमारी रुचि के ही अनुकूल रहना चाहिये, दबाव देकर हम पर शासन करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है, हम किसी के बन्धन में कैदी बन कर नहीं रहना चाहतीं। यह लो अपना श्रृंगार। बस, इतना कह कर श्री सिद्धकिशोरी जी अपना श्रृंगार उतार-उतार कर फेंकने लगीं, यह दृश्य देखते ही समस्त प्रेमीजन काँपने लगे, एवं बहुत से दर्शकगण तो श्री युगल सरकार के चरणों में गिर कर गिड़गिड़ाने एवं अपने अपराधों की क्षमा माँगने लगे। उधर श्री पुजारी जी ने भी नम्रता पूर्वक प्रार्थना की कि सरकार ! भूल

हो गई है क्षमा किया जाय, भविष्य में फिर ऐसा अनुचित कार्य कभी न होगा, सरकार की रुचि के प्रतिकूल कोई भी कार्य न होकर आपकी रुचि अनुकूल ही सब कार्य होंगे। इतना सुनते ही श्री सिद्धकिशोरी जी का दुखी हृदय कुछ शान्त हुआ, तुरन्त बंशी बाबा को बुलवाया, वह आये और उनसे फिर कुछ नकलें सुनने लगीं, और यह भी कहा कि जिस किसी को दर्शन करना हो वह नीचे जाकर बैठें, और जिनको घर जाना हो वह अपने घर चले जावें, एक घण्टा के बाद शृंगार होकर झाँकी होगी। श्री किशोरी जी के प्रभाव से प्रभावित होकर समस्त दर्शकगण लज्जित हुये, सबने क्षमा माँगी और नीचे जाकर बैठ गये। थोड़ी देर के बाद शृंगार होकर युगल झाँकी होने लगी।

सज्जनो देखा! श्री सिद्धकिशोरी जी का इतनी छोटी अवस्था में भी कितना भारी प्रभाव, साहस एवं निडरपन था। इस घटना से तो मानो आप ने समस्त भावुक लीलाकर्ताओं को एक प्रकार का उपदेश ही दे डाला, कि श्री लीलाबिहारी सरकारों की प्रसन्नता एवं सुख में ही सब लोगों को प्रसन्नता एवं सुख मानना चाहिये, न कि अपने सुख एवं आनन्द के लिए सरकारों को अनुचित दबाव देकर उनको संकुचित, दुखी करके, उन पर शासन करना। श्री लीलाबिहारी स्वरूपों से इस प्रकार का अनुचित व्यवहार एवं बर्ताव करना भारी अनर्थ एवं अमंगल का ही सूचक होता है। ऐसा व्यवहार करने वाले शृंगारी, व्यास, अथवा सेवक, प्रेमी कहे जाने के अधिकारी नहीं हो सकते, किन्तु वह तो केवल स्वार्थी और टके के गुलाम ही कहे जा सकते हैं। पाठको! इसी को धर्म की आड़ में पाप कहा जाता है। इसलिए ऐसे लोग किसी पुण्य के भाजन न बनते हुये भारी पाप और अपराध के भागी बनकर नर्क गामी होते हैं। इसके लिये चरित्र नं० ४१ को अवलोकन करें (लेखक)

(४३) श्री ब्रज वृन्दावन निवासी सन्यासी महात्मा श्री मस्तराम जी (पंजाबी) का कथन है कि विहौतीभवन समाज में श्री सिद्धकिशोरी जी के अनोखे पवित्रभाव, शील स्नेह तथा सरल स्वभाव में बाल्यकाल से ही कोई ऐसा आकर्षण, चुम्बक अथवा जादू था, कि जिसके कारण केवल मुझे ही नहीं किन्तु मेरे और भी दो साथियों (सन्यासी महात्माओं) श्री वैष्णव दास जी एवं श्री जटिल बाबा जी को लगभग पाँच छै वर्ष तक श्री युगल सरकार की सेवा में निरन्तर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्री भैया जी (अधिकारी श्री रामगोपाल दास जी) द्वारा लिखित उनकी इस पावन जीवनी के कई चमत्कारी चरित्र तो हम तीनों की उपस्थिति में ही हुये थे। इसके अतिरिक्त इनके और भी अनेकों चरित्र हैं कहाँ तक लिखा जाय। इनका तो प्रतिदिन कोई न कोई विचित्र चरित्र हुआ ही करता था, जिसको देख सुन कर लोग चकित हो जाते थे। यदि इनको चरित्रों की खान कहा जाय तो भी कुछ अनुचित न होगा। ये देखने में तो एक बालक थे, परन्तु कोई साधारण बालक न थे, वे तो बालक रूप में साक्षात् श्री जनकदुलारी ही थीं। जो कि हम जैसे संसारी पामर जीवों के कल्याणार्थ ही इस मृत्युलोक में पधारी थीं। और अपने अद्भुत चरित्रों द्वारा भक्तों को शिक्षा दीक्षा दे दिला कर फिर तुरन्त अपने साकेत धाम को (हम सब की दृष्टि से ओझल होकर) चली गईं।

आपकी इस प्रकार की असीम अनुकम्पा द्वारा श्री लीला मण्डलियों को भी महान गौरव की प्राप्ति हुई है। आपकी अमर कीर्ति को सुन कर प्रेमी एवं दुखीजन भी सब आपके दर्शनार्थ बहुत दूर-दूर से आते और आपके वचनामृत का पान करते ही कृतार्थ एवं पूर्ण मनोरथ हो जाते थे। एक समय आपकी भारी ख्याति सुनकर श्री वृन्दावन से तो परम

आदरणीय वीतराग महात्मा श्री उड़ियाबाबा जी महाराज, झूंसी (प्रयाग) से परम पूज्य प्रातःस्मरणीय ब्रह्मचारी श्री प्रभुदत्त जी महाराज एवं ग्वालियर से मानस मार्तण्ड महात्मा श्री रामदास जी महाराज भी श्री अवधधाम में आपके दर्शनार्थ पधारे थे। श्री सिद्धकिशोरी जी का शील, स्नेह, सुन्दर व्यवहार एवं सरल स्वभाव देख सुन कर तीनों महानुभाव बड़े ही प्रेम एवं शिष्टाचारपूर्वक आप से मिले। उनके हर्ष एवं हुलास का पारावार न था, आपके बर्ताव एवं स्वभाव से तो सब सन्तुष्ट एवं मुग्ध थे! बिदा होते समय सबने आपकी मुक्तकंठ से भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री ब्रह्मचारी जी महाराज को एक बार श्री सीतामढ़ी में और एक दो बार श्री प्रयागराज एवं श्री अवध में भी श्री सिद्धकिशोरी जी के शुभ दर्शन हुये थे, इसके लिये इनकी लिखित भूमिका को अवश्य पढ़ें।

(५४) श्री मस्तराम जी का कुछ अपने विषय में भी वर्णन है कि मैं कोई भारी विद्वान पंडित या व्याख्यान दिवाकर तो था ही नहीं। मैं तो केवल एक साधारण बुद्धि का अल्पज्ञ जीव हूँ, यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम कृपा एवं आशीर्वाद का ही फल है कि उन्होंने मुझे ऐसी वाक्यशक्ति प्रदान कर दी थी जिसके कारण मुझे आज तक अनेक धर्म सभाओं में निमन्त्रित होकर जाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। केवल इतना ही नहीं श्री सिद्धकिशोरी जी के कथनानुसार मुझे तो थोड़े ही दिनों में 'व्याख्यान केसरी' की उपाधि भी मिल गई थी, जिसके कारण मेरी राजनैतिक क्षेत्र से लेकर भक्ति क्षेत्र तक पहुँच हुई। यदि श्री किशोरी जी की इतनी अनुकम्पा न होती तो मैं सच कहता हूँ कि मैं कदापि स्वयं इस योग्य न था, और न ही किसी साधनों द्वारा मेरी इतनी ख्याति हो सकती थी। मैं तो निरन्तर उन्हीं की जय जयकार मनाता हुआ उन्हीं के

बल भरोसे पर निश्चिन्त हो आनन्दपूर्वक विचरा करता हूँ।

यों तो भगवान की अपने समस्त जीवों पर निरन्तर कृपा बनी ही रहती है, वह किसी भी प्राणी का कभी अनिष्ट नहीं चाहते, परन्तु मैं तो अपने को विशेष बड़भागी मानता हुआ उनका आजन्म आभारी और ऋणी हूँ। मैं अनेकों जन्मों में भी उनके उपकारों से उऋण हो नहीं सकता।

आप में एक विशेष गुण यह भी था कि आप कभी किसी भी वस्तु की किसी प्रेमी से याचना न करती थीं। यदि कोई प्रेमी आप को सेवा के निमित्त बाध्य करता तो आप उनसे सर्वप्रथम यह प्रश्न किया करती थीं कि आप हमको बालक मानते हैं या किशोरी जी? यदि किशोरी जी मानते हैं, तो बताओ कि किशोरी जी के दरबार में किस चीज की कमी है जो आपसे याचना करें। ऐसी भावना वालों को तो हम से ही याचना करनी चाहिये। बस इतना सुनते ही प्रेमी लोग निरुत्तर होकर लज्जित भी हो जाया करते थे।

माया के मोहक प्रलोभन को इस प्रकार ठुकरा देना क्या कोई साधारण बात है? और सच भी है कि—

"बिन माँगे मोती मिलैं, माँगे मिलै न भीख।"

बिना माँगे ही जब कि सरकारी दरबार में अनेक प्रकार की वस्तुयें भक्तों द्वारा प्रतिदिन पहुँच जाया करती थीं-तब उनको माँगने की आवश्यकता ही क्या थी। और जो कोई परमार्थ पथ पर अग्रसर होते हैं, उनकी दृष्टि लक्ष्मी के विलासों पर कभी भी नहीं अटकती। इस के साथ-साथ बालकपने में भी जैसी जिसकी आदत पड़ जाती है वह अन्त तक नहीं छूटती। श्री सिद्ध किशोरी जी के बालकपन से ही उदारता

दयालुता एवं परोपकार करना उनके जीवन का एक व्रत ही था, तब वह किसी से किस चीज़ की याचना करतीं ?

(५५) महात्मा मस्तराम जी का कथन है कि जिस समय श्री बिहौतीभवन समाज ने श्री जनकपुरधाम (मिथिला जी) की चौरासी कोसी परिक्रमा की थी, उस समय समाज के साथ कई वैष्णव साधु थे, किन्तु मैं केवल एक ही सन्यासी साधु अकेला सरकारी सेवा में था। परिक्रमा होरही थी। एक दिन कुछ वैष्णव साधुओं से मेरा व्यक्तिगत तक़रार होगया तो उन्होंने इसका बदला चुकाने के लिये श्री किशोरी जी को बाध्य किया कि या तो मस्तराम को अपने समाज से पृथक कर दें, या वह सन्यास धर्म को छोड़कर कंठी तिलक धारण करके वैष्णवी दीक्षा को ही ग्रहण कर लें। तब श्री सिद्धकिशोरी जी ने उत्तर दिया कि परिक्रमा पूरी होने पर ही इसका न्याय होगा। जब परिक्रमा पूरी हो गई तो श्री किशोरी जी ने सब वैष्णवों को एकत्रित करके एक दरबार किया और सबसे पूछा कि आप लोग हमको बालक मानते हैं या किशोरी जी ? यदि बालक मानते हैं तब तो मैं न्याय कर ही नहीं सकती, श्री महाराज जी के पास जाकर जो कुछ कहना हो उनसे कहो। और यदि किशोरी जी मानते हैं तो तुम सब को वचनवद्ध होकर पहिले यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि मैं जो कुछ भी न्याय करूँगी वह सब को मान्य होगा। आपके मुखवाक्य सुनते ही सब ने मुक्तकंठ से कहा कि हम तो आपको साक्षात् श्री किशोरी जी ही मानते हैं आप जो कुछ भी न्याय करेंगी वह हम सब प्रसन्नतापूर्वक बिना किसी आना-कानी के मानने को तैयार हैं। हमारा तो सर्वस्व तन, मन, धन केवल आप कीआज्ञा पर न्योछावर है। समस्त वैष्णवों को वचनवद्ध करके आप ने ऐसा सुन्दर न्याय किया कि जिसको देख सुन कर समाज के साथ-साथ परिक्रमा

करने वाले अन्य महात्माओं के अतिरिक्त स्पीकर साहब, डिप्टी साहब, राय साहब, दीवान रुद्रदत्त सिंह जी, श्रीमान मुंसिफ साहब, डाक्टर साहब एवं श्री दारोगा जी इत्यादि भी चकित एवं मुग्ध हो गये।

सर्वप्रथम आप ने मस्तराम को अपने समीप बुला कर आज्ञा दी कि तुमको सन्यासी भेष त्याग कर वैष्णवी भेष धारण करते हुये वैष्णवी दीक्षा भी ग्रहण करनी होगी। फिर वैष्णवों से कहा कि आप सब लोगों को अपनी-अपनी कंठी माला के अलावा शिखासूत्र को भी उतार कर श्री दूधमती गंगा के अर्पण करते हुये मस्तक का चन्दन, तिलक भी गंगा जी में धो देना होगा, उसके बाद काषाय वस्त्र पहन कर सन्यास को ग्रहण करना होगा। इतना सुनते ही मस्तराम जी ने प्रसन्नचित्त से आप के चरणों को पकड़ कर निवेदन किया, सरकार! मेरा समस्त शरीर आप के ही अर्पण है, आप स्वयं अपने कर कमलों द्वारा जो भी चाहें करें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उधर दूसरी पार्टी वाले साधुओं के मुख फीके पड़ गये, गर्दनें नीचे झुक गईं और सब मौनी बन कर बैठ गये, किसी के मुख से हाँ या न कुछ भी नहीं निकला। श्री किशोरी जी के बारम्बार पूछने पर वह कहने लगे कि सरकार! श्री गुरु महाराज की दी हुई कंठी तिलक को त्याग कर हम सन्यास कैसे ग्रहण करें, इस भारी असमञ्जस के कारण शोकोसोच सागर में गोते खा रहे हैं, अपने कल्याण का कोई मार्ग हमको नहीं सूझता, इसलिये आप हमारे अपराधों को क्षमा करती हुई हमारी रक्षा करें। बस यही करवद्ध प्रार्थना है। तब श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि न तो आप लोगों को पहिले मस्तराम से विरोध करते समय सूझ आई और न ही हमसे प्रतिज्ञा करते समय कुछ सोचा विचारा।

यदि आप सबको मेरा समझौता स्वीकार नहीं था, तो

पहिले ही मना कर देना था, झूँठी प्रतिज्ञा करके अब झूँठा आडम्बर क्यों रच रहे हैं ? जिस समय आप लोगों ने, मस्त-राम को समाज से पृथक करने अथवा उसको वैष्णव बनाने का प्रस्ताव मेरे सामने रखा था, तो क्या उस समय आप सब की बुद्धि जंगल में घूमने चली गई थी ? क्या आप सब लोग यह नहीं जानते थे कि मस्तराम को भी तो उनके गुरु जी महाराज ने ही सन्यास धर्म की दीक्षा दी है। तब इनको कंठी, तिलक धारण कराकर वैष्णवी दीक्षा कैसे दी जा सकेगी ? देखिये ! आप सब की प्रार्थनानुसार यदि मुझे एक सन्यासी को वैष्णव बनाने का अधिकार है तो आप सब की प्रतिज्ञानुसार मैं आप सब वैष्णवों को सन्यासी भी बना सकती हूँ। मस्तराम की प्रतिज्ञा कितनी सच्ची और दृढ़ है कि वह तो हमारी आज्ञानुसार श्री वैष्णवी दीक्षा ग्रहण करने को तैयार हैं। और आप लोग प्रतिज्ञा करके भी मेरी आज्ञा का उल्लंघन करते हुये टाल मटोल कर रहे हैं। इसका कारण केवल इतना ही है कि मस्तराम ने तो हमको हृदय से श्री किशोरी जी मान लिया है और आप सब ने केवल ऊपर से तो हमें श्री किशोरी जी मान रखा है परन्तु हृदय से बालक मानते हैं। हमें जब न्यायाधीश बनाया गया है तो हम अन्याय कैसे करें ? अब यदि सचमुच आप लोग सोच सागर में गोते खाते-खाते घबड़ा गये हों तो परस्पर मिलजुल कर सब लोग हमारी सेवा में रहें। अगर मेरा यह अन्तिम न्याय भी स्वीकार न हो, तो मस्तराम को समाज से पृथक करने वाले स्वयं इस समाज से पृथक हो जायें। इतना सुनते ही सब लज्जित हुये और श्री किशोरी जी के चरणों में गिरते हुये अपने अपराधों की क्षमा माँगी और मस्तराम जी को सबने बारी-बारी गले से लगाया, और परस्पर प्रेमपूर्वक रहने को वचन देकर

अपनी-अपनी सेवा में लग गये, मानो कोई झगड़ा था ही नहीं। न्यायाधीश श्री सिद्धकिशोरी जी के जयजयकार के नारे लगा-लगा कर सब महात्मा श्री युगल नाम का कीर्तन करने लगे।

सज्जनो ! न्याय हो तो ऐसा हो, न्यायाधीश के लिये तो न्यायप्रियता इतनी होनी चाहिये कि शत्रु की भी प्रशंसा करे, एवं मित्र की बुरी बात की भी वकालत न करे। श्री सिद्धकिशोरी जी ने ऐसा ही किया। किसी का भी पक्षपात न करते हुये ऐसा सुन्दर न्याय किया कि शत्रु-मित्र सब को उनकी प्रशंसा करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

(५६) श्री मस्तराम जी का कथन है कि श्री जनकपुर धाम की चौरासी कोसी परिक्रमा समाप्त होने के पश्चात् इस समाज को माणीपुर ग्राम के (श्री सिद्धकिशोरी जी की जन्मभूमि) निमंत्रण में जाना पड़ा, जहाँ कई दिनों तक रह कर श्री विवाह-कलेवा उत्सव बड़ी धूमधाम से पूर्ण हुआ। उस समय सरकारी सेवा में दस वैष्णव और मैं अकेला एक सन्यासी (मस्तराम) भी था। एक दिन श्री किशोरी जी ने सब प्रेमियों की प्रेमपरीक्षार्थ एक अनोखे चरित्र की रचना की। शाम के पाँच बजे अपने समाज के समस्त प्रेमियों के सहित अपने ही गन्ने के खेत में से एक गन्ना तोड़ कर कुएँ की मुँडेरी पर बैठ उसको चूसने लगीं। सब प्रेमी खड़े-खड़े सरकारी दर्शन कर रहे थे, आप ने उस आधे चूसे हुये गन्ने को जानबूझ कर ही कुँवे में गिरा दिया और लगीं रोने कि हाय-हाय हमारा गन्ना कुएँ में गिर पड़ा है, कोई प्रेमी इसको शीघ्र निकाल दे। सब प्रेमियों ने कहा, सरकार गन्ने की कौन कमी है, हजारों गन्ने तो इसी खेत में लगे हैं, इससे भी अच्छा गन्ना (ऊख) हम अभी लाते हैं, आप गन्ने के लिये रुदन क्यों कर रही हैं। परन्तु आप

का हठ था, कि नहीं हम दूसरा गन्ना नहीं लेंगी, वही कुएँ में गिरा हुआ गन्ना निकाल दो।

सज्जनो ! कुआँ कुछ गहरा था जब कि रस्सा भी वहाँ रक्खा था, परन्तु किसी की हिम्मत उस कुआँ में उतरने की न पड़ी। उसी समय मस्तराम जी भी स्नान करके वहाँ आ पहुँचे। समाचार मिलने पर जब श्री सिद्धकिशोरी जी का रोना उनसे सहन न हुआ तो आपने आव देखा न ताव तुरन्त छलाङ्ग मार कर कुएँ में कूद ही तो पड़े। उनके कूदते ही इधर से तुरन्त श्री किशोरी जी ने रस्सा कुएँ में लटकवा दिया, जिसके सहारे वह प्रसादी गन्ना लेकर ऊपर चढ़ आये। आप ने मस्तराम को शीघ्र गले से लगा लिया और वही गन्ना प्रसादी रूप में देकर और अधिक प्रसन्न होती हुईं उनको आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी वाक्य-शक्ति के कारण साधुसमाज तथा गृहस्थ समाज में भी भारी प्रतिष्ठा होगी। उसी समय से मुझ पर श्री सिद्ध-किशोरी जी की अनुपम कृपा हो ही तो गई। सज्जनो ! यह है श्री सिद्धकिशोरी जी की प्रेम परीक्षा लीला।

(५७) श्री मस्तराम जी का कथन है कि बैशाख ज्येष्ठ के दिनों में मैं प्रतिदिन श्री युगल सरकार के निमित्त केवल बादाम, मिश्री की ठंडाई दो गिलास तैयार करके उनको पिला दिया करता था, एक दिन ठंडाई सेवन करते समय दो बाहरी प्रेमी भी आ पहुँचे, और श्री युगल सरकार से प्रसादी रूप में थोड़ी सी ठंडाई की याचना की तो युगल सरकार ने तुरन्त आधा-आधा गिलास ठंडाई प्रसादी रूप में उनको दे दिया। खैर ! दो तीन दिन की तो कोई बात ही न थी, किन्तु यह दोनों प्रेमी प्रतिदिन ठंडाई के ही समय आते और आधा-आधा गिलास प्रसादी ठंडाई पी कर चल देते। मैं तो केवल श्री युगल सरकार

के ही निमित्त इतना परिश्रम करके ठंडाई बनाता था, जब वह दोनों प्रेमी प्रतिदिन आने लगे, तो एक दिन मुझे मन में कुछ दुःख तो जरूर हुआ, यद्यपि मैंने किसी से कुछ कहा नहीं, परन्तु अपने सेवकों के मन की गति को जानने वाली श्री सिद्धकिशोरी जी ने मेरे मन की गति को भी जान लिया, तभी तो एक दिन ऐसी विचित्र लीला रची कि वह दोनों प्रेमी छक गये। घटना इस प्रकार है। एक दिन श्री किशोरी जी ने मुझे आदेश किया कि आज ठंडाई नहीं बनाना, कल देखा जायगा। उस दिन ठंडाई नहीं बनी, परन्तु उन दोनों प्रेमियों को यह क्या मालूम था कि कि आज ठंडाई नहीं बनी, वह तो अपने समय पर आ ही डटे। देखा कि अभी ठंडाई नहीं बनी, वह प्रसादी ठंडाई की प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि श्री किशोरी जी ने उन दोनों प्रेमियों द्वारा नीम की कुछ कोमल-कोमल पत्तियाँ मँगवाई, और उनको आज्ञा दी कि इसको पीस-छान कर दो गिलास ठंडाई शीघ्र तैयार कर दो। नीम की ठंडाई तैयार होने पर श्री युगल सरकार ने केवल आधा-आधा घूँट उसमें से स्वयं पान किया, बाकी सब प्रसादी उन दोनों प्रेमियों को दे दी। सरकारी प्रसादी का निरादर न हो! इसलिये किसी न किसी तरह वह दोनों प्रेमी आँख मूँद कर उस कड़वी ठंडाई को पी तो गये, परन्तु कल से फिर कभी भी उन दोनों का शुभदर्शन ठंडाई के समय नहीं हुआ, वह डर गये ऐसा न हो कि फिर भी कभी नीम की ठंडाई पीनी पड़े। प्रभु के खेल बड़े विचित्र और निराले होते हैं, उन की लीला भी बड़ी अनोखी है, न जाने वह कब क्या और क्यों करते थे? इसी प्रकार उनके कई विनोद नित्यप्रति हुआ ही करते थे कहाँ तक लिखा जाय।

(५८) श्री लक्ष्मीप्रसाद जी वर्मा क्लर्क दफ्तर सुपरिण्टेण्डेण्ट आर० एम० एस० पटना से आप पत्र द्वारा श्री सिद्ध

किशोरी जी के दो चरित्र लिखते हैं। फाल्गुन के महीने में चन्द्रग्रहण के अवसर पर जब कि श्री सिद्धकिशोरी जी भी श्री महाराज जी के साथ हमारे ग्राम में थीं, ग्रहण में श्री महाराज जी, श्री राम जी तथा श्री सिद्धकिशोरी जी एवं अन्य लोगों के साथ-साथ हम लोग भी श्री नारायणी गंगा (गण्डकी) में स्नान करने गये थे, स्नान होने के बाद वहाँ रामायण गान होने लगा, इधर-उधर के घाटों पर जो दूसरे गाँव के कुछ लोग स्नान कर रहे थे वह भी रामायण गान सुनने के लिये आ गये। करीब पचास-साठ आदमियों की भीड़ थी, अन्त में श्री महाराज जी ने एक पुड़िया किशमिश की जेब से निकाल कर श्री किशोरी जी को दी और सब लोगों में प्रसाद बाँट देने के लिये कहा। मैंने देखा कि उस पुड़िया में मुश्किल से करीब बीस-पचीस किशमिश थीं मगर जितने भी वहाँ आदमी थे सब को प्रसादी मिल गई, और अन्त में करीब दस-बारह किशमिश बच भी रहीं। इस घटना को देख कर हम लोग सब अवाक् से रह गये।

(५६) दूसरी घटना। श्री लक्ष्मी प्रसाद जी का कथन है कि सन् १६३८ के फरवरी महीने की बात है कि मैं उस समय मैट्रिक (Matric) परीक्षा की तैयारी में लगा था। यों तो मुझे श्री रामायण कीर्तन के प्रति रुचि बहुत जोरों की थी, मगर जब मैं दसवीं क्लास में आया तो मेरी रुचि और भी बढ़ी एवं अध्ययन के बजाय मेरा मन इधर अधिक खिंचने लगा। हमारे ग्राम के पूज्य बाबू श्री रामदेनीसिंह जी की कृपा से, जो कि अभी डी० आई० जी० पुलिस मुजफ्फरपुर के बड़े बाबू हैं। पूज्य श्री १०८ श्री महाराज जी और युगल सरकार के साथ जिनमें श्री किशोरी जी का स्वरूप श्री सिद्धकिशोरी जी थीं, हमारे ग्राम वृन्दावन में पधारे और नित्य झाँकियों द्वारा नगरवासियों को कृतार्थ करने लगे, मैं उस समय श्री महाराज जी का शिष्य नहीं था, मगर न

जाने मेरा मन श्री सिद्धकिशोरी जी की तरफ क्यों खिंचने लगा ? जब तक सरकार वहाँ रहे, तब तक मुझे खाना-पीना, पढ़ना-लिखना करीब-करीब सब भूल गया। आठों पहर श्री युगल सरकार के दर्शनों के लिये मेरा मन लालायित रहने लगा। जब सरकार पन्द्रह दिन तक आनन्द की वर्षा करते हुये हम सब को कृतकृत्य करने के बाद हमारे ग्राम से बिदा हुये, तो और लोगों की तरह मैं भी श्री महाराज जी की चरणरज लेने लगा। उसी समय रामदैनी बाबू जी ने श्री महाराज जी से कहा, कि इस लड़के ने रात दिन सरकारी सेवा में रह कर लिखना-पढ़ना भी सब बन्द कर दिया है, कल इसको परीक्षा में जाना है, आप आशीर्वाद दें कि पास हो जाय। तब महाराज जी ने मुझे कहा कि तुम जाकर श्री सिद्धकिशोरी जी के चरण छुओ। मैं जब उनके चरण छूने लगा, तब श्री महाराज जी ने भी श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रार्थना कर दी कि सरकार इसको आशीर्वाद दिया जावे। श्री सिद्धकिशोरी जी ने ज्योंही मुझे आशीर्वाद देकर मेरी पीठ पर हाथ फेरा तो तुरन्त मुझे यही मालूम पड़ा कि मैं निश्चय ही पास हो जाऊँगा। इसी विश्वास के साथ मैं मुजफ्फ़रपुर यूनीवर्सिटी परीक्षा देने के लिये चल पड़ा, परसों से इम्तिहान आरम्भ होना था, ऐसा संयोग हुआ कि मैं अपनी सीट भी मुजफ्फ़रपुर जिला स्कूल में खोजने निमित्त न जा सका। परीक्षा के प्रथम दिन मुझे डेरे पर कुछ देर भी हो गई और मैं जिला स्कूल में कुछ बिलम्ब से पहुँचा। बाहर के लोगों ने मुझे देखकर कहा कि तुम जल्दी जाओ, परीक्षा आरम्भ हो गई है। यह सुनकर मुझे बड़ी घबड़ाहट हुई, तब श्री सिद्धकिशोरी जी की याद करके उनका ध्यान करने लगा। इस दशा में दौड़ते हुये स्कूल के मध्य में जो बड़ा हाल था, मैं उसमें पहुँचा। उसमें पाँच छः गार्ड थे, परीक्षा देर से आरम्भ हो चुकी थी, मुझे घबराया हुआ

देख कर गार्ड ने पूँछा क्या है ? मैंने उत्तर दिया कि परीक्षा देने आया हूँ और मुझे अपनी सीट भी मालूम नहीं है, मेरा एडमीशन कार्ड देख कर उन्होंने कहा कि आप की सीट दो तल्ले पर है, और रास्ता भी बतला दिया। अब मैं दौड़ा-दौड़ा उस कमरे में पहुँचा तो देखा कि गार्ड हमारा प्रश्नपत्र एवं प्रश्नोत्तर वापस लौटाने के लिये बाहर निकल रहे हैं, उनके पूँछने पर भी मैंने घबराते हुये यही कहा कि परीक्षा देने आया हूँ, देरी हो रही है (और हृदय में उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी के चरणों का ध्यान करने लगा) तब प्रेम से उन्होंने मुझे धैर्य दिया और कहा घबड़ाओ मत, शान्त हो जाओ। करीब पन्द्रह मिनट के बाद जब मैं शान्त हुआ तो उन्होंने मुझे परचा दिया। सज्जनो ! श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम अनुकम्पा से ही मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ, और सेकंड डिवीजन (द्वितीय श्रेणी) में निकला।

(६०) पटना श्री किशोरीबाग से श्री जगत नारायन सिनहा ने श्री सिद्धकिशोरी जी के विषय में दो तीन घटनायें लिखकर भेजी हैं कि सन् १६३५ में नैपाल पहाड़ के एक महात्मा जी आये और उन्होंने मुझ से कहा कि तुम्हें थोड़े ही दिनों में श्री राम जी का शुभ दर्शन होगा। उस साल अश्विन मास में श्री रामदैनी बाबू के यहाँ श्री पुजारी जी महाराज बिहौती भवन (मेरे गुरुदेव) श्री युगल सरकार के सहित पधारे। तब मेरे मित्र रामविलास बाबू मुझे यह कह कर ले गये कि चलो मैं तुमको श्री राम जी का दर्शन कराऊँगा। मैंने वहाँ जाकर श्री युगल सरकार का ज्योनार के समय में दर्शन किया। उसी समय मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी (मैया के) कई प्रकार के दर्शन किये। उसके बाद जब मैंने दण्डवत् किया तो आशीर्वाद मिलते ही मुझे पूर्ण शान्ति मिली, और तभी से मुझे यह अनुभव होने

लगा, कि मुझे जीवन का फल मिल गया। तब से मेरी यही भावना है कि श्री किशोरी जी मेरी मैया हैं।

(६१) दूसरी घटना इस प्रकार है कि एक समय श्री सिद्ध-किशोरी जी (मैया) मेरी संसारिक जन्मभूमि से रफ़ीपुर गईं, मुझे भी अपने साथ ले लिया। वहाँ झाँकी हुई तो रात्रि को श्री किशोरी जी झाँकी में ऊँघने की लीला करने लगीं, और सवेरे भी मुझसे एक बात नहीं बोलीं तो मुझे इसका दुःख हुआ, मैं श्री गुरु महराज (श्री पुजारी जी) से आशीर्वाद लेकर रोता हुआ चल दिया। रास्ते में मैं अपने भाग्य को कोसता और कुढ़ता चला जा रहा था, भूख-प्यास से व्याकुल होकर थक भी गया था परन्तु मन में यही प्रण था कि जब मैया (श्री सिद्धकिशोरी जी) खिलायेंगी तभी कुछ खाऊँगा और पियूँगा भी। उसी समय एक आदमी ने आकर कहा कि तुम बहुत प्यासे हो, मैं जल भर कर लाया हूँ (वह बतासे और जल लाया) और मुझे खिला पिला के न जाने कहाँ चल दिया। तब मार्ग में चलते समय मुझे यही भान हो रहा था कि मैया (श्री सिद्धकिशोरी जी) मुझे मना रही हैं, और मेरे साथ-साथ चल रही हैं, और मैं उनसे रूठता ही जा रहा हूँ। उसी रात मैं पटना आ गया, खाना-पीना सब छोड़ रखा था। यहाँ से दूसरे दिन पत्र पहुँचा कि श्री सिद्ध-किशोरी जी कुछ पूजा स्वीकार नहीं कर रही हैं। पूजा का सब सामान तितर-बितर कर देती हैं, बहुत आग्रह करने पर कहती हैं कि वहाँ जगत बाबू 'दुलरुवा' भूखा प्यासा पटने में तड़प रहा है, इसलिये मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। अतः तुम खूब खाओ पियो और लिख भेजो कि मैं खूब प्रसन्न होकर खाने-पीने लगा। और दस्ती पत्र भी लिख भेजा कि मैं खूब प्रसन्न

होकर खाता पीता हूँ, तो उसके बाद मैया ने स्वयं पत्र लिख कर मुझे श्री अयोध्या जी में बुलाया। तभी से सब सन्त समाज में यह बात फैल गई, कि यह जगत बाबू श्री सिद्ध किशोरी जी का प्रिय दुलरुवा है। मामा जी (भैया लक्ष्मी निधि जी) ऐसी अनेकों घटनायें हैं, कहाँ तक लिखूँ। भवदीय श्री माँ जी का दुलरुवा "जगत"।

(६२) प्रिय सज्जनो! श्री जगत बाबू वास्तव में श्री सिद्ध-किशोरी जी के अनन्य सच्चे भक्त (दुलरुवा) हैं, आप इस समय पटना सेक्रेटेरियेट में मुलाजिम हैं। आप का श्री किशोरी जी के प्रति प्रेम भाव, श्रद्धा एवं विश्वास अकथनीय है। तब से आज तक आप उनको माता की ही भावना से मान रहे हैं, इसलिये उन्हीं की असीम कृपा अब भी आप की समस्त मनोकामनाओं को बराबर पूर्ण कर रही है। आप यदि उनसे धन की याचना करते तो आज आप अवश्य लाखपति करोड़पति होते। किन्तु आप की भावना है कि भगवान से धन जैसी नाशवान तुच्छ वस्तु को क्या मांगना?

आप ने "श्री सिद्धकिशोरीजी" की स्मृति में अपनी फुलवारी का शुभनाम श्री किशोरी बाग़ रक्खा है। उसी बाग़ में ही आप का शुभ निवास स्थान (क्वार्टर) भी है। आप के भजन पूजन का कमरा पृथक है, उसमें आपने श्री सिद्धकिशोरी जी के कई प्रकार के चित्रपट सिंहासन पर पधरा रक्खे हैं। आप प्रतिदिन सन्ध्या, सबेरे उन चित्रों को विधिवत् सेवा पूजा करके भोग राग भी प्रेमपूर्वक अपने ही हाथों से लगाया करते हैं। आप के उसी किशोरी बाग़ एवं पूजाभवन में दो तीन महात्माओं को श्री सिद्धकिशोरी जी का अपूर्व शुभदर्शन भी प्राप्त हो चुका है। अभी अभी सन् १६५१ माघ मास में जब कि श्री

बिहौती भवन के आठों सरकार मय परिकर आपके मकान पर पहुँचे थे तो उस समय मैं (भैया लक्ष्मीनिधि) भी सरकारी सेवा में था। आप के पूजा भवन में श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट का दर्शन करते मात्र ही आप के गुरुदेव (पुजारी श्री रामशंकर शरण जी महाराज) कुछ देर के लिये आवेश में आकर बेसुध हो गये थे, और उनकी अश्रुधारा चलने लगी थी। उनके पश्चात् मैंने जब श्री सिद्धकिशोरी जी के उसी चित्रपट का दर्शन किया तो मेरी भी वही दशा हो गई। और मैं भी बेहोश होकर लेट गया जब उस समय श्री उर्मिला जी के स्वरूप ने अङ्क भर कर उठाया और कहा "कि देखो भैया जी ! मैं सिद्धकिशोरी आ गई, चलो भोजन कर लो "। जब मैंने आँख खोली तो क्या देखता हूँ कि श्री उर्मिला जी के ही स्वरूप में श्री सिद्धकिशोरी जी अपनी झाँकी दिखला कर छिप गईं, उनका यह चमत्कार मुझे आप के पूजा भवन में ही सब स्वरूपों के एवं आप के सामने ही तो हुआ था ! (लेखक)

(६३) अधिकारी मौनी श्री हरि सेवक दास जी देवरही कुटी· देवरिया से श्री सिद्धकिशोरी जी के समय की दो तीन घटनायें पत्र द्वारा इस प्रकार लिखते हैं कि एक समय श्री बिहौतीभवन के श्री युगल सरकार का देवरही कुटी में श्री विवाह-कलेवा उत्सव हुआ, चौथारी उत्सव के उपलक्षमें जब कि श्री सिद्ध किशोरी जी दुर्गा पूजन कर रही थीं, उस समय श्री दुर्गा जी की मन्दिर मूर्ति के हाथ का झटका ऐसा लगा जिससे कुछ पुष्प भी बिखर गये, उस समय वहाँ भटवाँ ग्राम निवासी श्री मंगल प्रसाद जी त्रिपाठी एवं बहुत से भक्त भी उपस्थित थे। श्री सिद्ध किशोरी जी में कोई ऐसा चुम्बक अथवा आकर्षण था कि उनके दर्शनमात्र से ही सब लोगों के समस्त संशय छिन्न-भिन्न हो जाया करते थे, और उनके मन में जो इच्छा हुआ करती थी,

वह अवश्य पूरी हो जाती थी। कभी निष्फल नहीं होने पाती थी।

(६४) श्री मौनी जी का कथन है कि एक समय जब कि हम लोग श्री चित्रकूट श्री जानकीकुण्ड पर थे, वहाँ भी कई दिनों तक विवाह कलेवा उत्सव एवं झाँकियाँ हुईं। एक दिन मुझे श्री किशोरी जी की आज्ञा हुई कि आप यहाँ किस लिये आये हैं ? जाइये आज श्री हनुमान-धारा आदि का दर्शन कर आइये। परन्तु मेरी इच्छा सरकार को छोड़कर कहीं भी अकेले जाने की नहीं थी। परन्तु दोबारा श्री किशोरी जी की मेरे लिये आज्ञा हुई, कि जाओ, दर्शन कर आओ, और लौटते समय हमारे भोग के लिये वहाँ के समीपी ग्राम से कुछ खोवा भी मोल लेते आना। सज्जनो ! मैं सेवा का तो नाम सुनते ही अति प्रसन्न हुआ, और दो बजे दिन के श्री जानकीकुण्ड से चल दिया। देवाँगनां आदि में रात्रि हो गई। व्याघ्र आदि का सम्पर्क भी हुआ, परन्तु उसने हमको सताया नहीं। ठीक उसी समय इधर श्री सिद्धकिशोरी जी झाँकी स्वरूप में हँस २ कर श्री राम जी एवं प्रेमियों से कह रही थीं, कि मौनी जी इस समय बन बिहार में हैं अर्थात् बन में व्याघ्र से खेल कर रहे हैं। मैं रात्रि में वहाँ से ग्यारह बजे वापस लौटा तो आते ही श्री किशोरी जी ने कहा कि क्या बन बिहार कर आये हो। व्याघ्र-देवता अच्छे तो हैं ? पाठको ! श्री सिद्ध किशोरी जी के वर्तमान समय में उनकी सभी कीर्तियाँ अलौकिक थीं, कहाँ तक लिखी जायें।

(६५) श्री अवध मणिपर्वत निवासी बाबा रामचन्द्रदास जी (स्वयं पाकी) स्थान श्री पौहारी जी महाराज का कथन है कि मौनी हरिसेवक दास जी श्री पौहारी जी महाराज के कृपापात्र हैं। टहलते टहलते एक दिन वह अकस्मात् बिहौती भवन में श्री जुगुल सरकार के दर्शनार्थ चले गये। दण्डवत् करते करते

ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने इनको एक बीड़ा पान अपने कर कमलों द्वारा दिया, पान का बीड़ा लेते ही मौनी जी पर न जाने कौन सा जादू चढ़ बैठा, वह तो सरकार पर लट्टू हो गये, इनको खान पान और स्थान तक भूल गया, और वहीं निरन्तर सरकार की सेवा में रहने लगे। स्वयंपाकी जी का कहना है कि लीलास्वरूपों के प्रति पहले मेरी न तो श्रद्धा थी और न प्रेम ही था। इसलिये मैंने और दूसरे साधुओं ने भी मौनी जी को खूब समझाया-बुझाया कि गृहस्थ बालकों की सेवा से क्या लाभ ? तुम तो विरक्त साधु हो इस लिये स्थान में चल कर भगवान एवं अपने श्री गुरु महाराज की सेवा पूजा करो। मगर मौनी जी नहीं माने। फिर भी कई बार उनको समझाया, उनकी भली भाँति हँसी भी उड़ाई कि विरक्त साधु होकर गृहस्थ लड़कों का जूठन खाते और उनकी सेवा करते हो। परन्तु तो भी वह टस से मस नहीं हुये, और अपनी सेवा पर डटे रहे। स्वयंपाकी जी का कहना है कि भक्तों के हृदय की जाननहारी श्री सिद्ध किशोरी जी को मेरे भी अहंकार एवं लीलास्वरूपों के प्रति अश्रद्धा को भङ्ग करना था, इसलिये मेरे लिये भी एक अनोखी लीला रची। एक दिन मुझे किसी साधु द्वारा अपने पास बुलवाया। मैंने सोचा कि शायद हमको बुलाकर मौनी जी को हमें सौंपने का विचार हुआ है। इसलिये मैं तुरन्त उसी साधु के साथ साथ श्री सिद्धकिशोरी जी के पास चला आया। मुझे देखते ही उन्होंने मेरे हाथ में केवल दो इलायची दे दीं। फिर न जाने उन इलायचियों में कोई आकर्षण था, कोई टोना जादू अथवा वशीकरण ही था, या श्री किशोरी जी के स्पर्शमात्र में ही कोई बिजली के करेन्ट का सा असर इनमें पहुँच गया था, मैं कुछ कह नहीं सकता। मेरी यह दशा हुई कि मैं उस दिन से प्रतिदिन बिना बुलाये उनके दर्शनार्थ बिहौती भवन में आने जाने लगा।

इसी प्रकार दो चार दिन के बाद उनसे एक क्षण भी पृथक होने को जी नहीं चाहता था; इसलिये उनके समाज भर की रसोई बनाकर उनको भोजन कराने की सेवा ही अपने मत्थे ले ली। इसके अतिरिक्त और भी जो कुछ सेवा मिल जाती तो उसको भी कर देता। इसी बहाने से दर्शन करके दिन बिताने लगा। जब इस समाज को श्री चित्रकूट जाने का निमंत्रण आया तो श्री सिद्धकिशोरी जी का बिछोह मुझसे सहन न हो सका। चित्त बहुत दुखी और व्याकुल होने लगा, इसलिये मैं भी उनके साथ साथ चित्रकूट चला गया। सज्जनो ! मैं तो प्रतिदिन श्री मौनी जी को समझाता तथा उपदेश देता था कि लड़कों की सेवा छोड़ो उनका जूठन खाना बन्द करो, स्थान में चलकर अपना कार्य देखो, परन्तु मुझे क्या मालूम था कि मैं स्वयं भी श्री युगल सरकार के प्रेमपाश में ऐसा फँसूंगा कि निकलना भी कठिन हो जायगा।

लीलाधारी भगवान की लीला बड़ी विचित्र है। मैं समझ गया कि मेरे अभिमान को चूर करने के निमित्त ही सरकार ने यह लीला रची है, अब इन्हीं की सेवा सुश्रूषा से मेरा कल्याण होगा इसलिये कुछ दिन साथ में रहकर सेवा कर लूँ। श्री चित्रकूट पहुँचते ही श्री जानकीकुण्ड पर कई दिनों तक बड़े समारोह के साथ विवाह-कलेवा उत्सव होता रहा। विवाह उत्सव समाप्त होने के पश्चात् समाज को पटना के विवाह उत्सव के लिये निमन्त्रण में जाना था। प्रस्थान के समय हम लोग जल्दी-जल्दी तैयारी करने लगे तो श्री किशोरी जी ने कहा कि इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो, धीरे धीरे अपना कार्य करो, कारण कि हम लोग आज गाड़ी पर सवार न हो सकेंगे। जब हम लोग गाड़ी के टाइम से एक घंटा पहिले ही कर्वी स्टेशन पर पहुँच गये ! तब पूछने पर श्री किशोरी जी ने कहा कि हम लोग तो गाड़ी से पहले पहुँच गये इससे क्या होता है, सामान की मोटर लारी रास्ते में

बिगड़ी पड़ी है, वह दो घंटा से पहले तैयार न होगी; तब बिना सामान के हम लोग कैसे जा सकेंगे ? इसलिये आज रात को कर्वी के धर्मशाला में ही निवास करना पड़ेगा। सो ठीक हुआ भी ऐसा ही, जिस लारी द्वारा हमारा सामान चित्रकूट से कर्वी स्टेशन आरहा था, उस लारी का एक पहिया रास्ते में फट गया। उसके सुधारने में दो घंटा देर हो गई। इसलिये हम लोग उस गाड़ी से नहीं जा सके, तो कर्वी की प्रेमी जनता के आग्रह करने पर उस रात कर्वी स्टेशन की धर्मशाला में झाँकी भी हुई।

कर्वी से विदा होकर हम लोग इलाहाबाद पहुँचे। एक रात इलाहाबाद रह कर फिर पटना चले गये। तब मैं भी समाज के साथ-साथ पटना चला गया। वहाँ से वापस आने के लिये मेरा चित्त बहुत दुखी हुआ। इसलिये बहुत दिनों तक इनके साथ-साथ परदेश में भ्रमण करने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज कल समाज में आठ स्वरूप रहते हैं, परन्तु उस समय केवल श्री युगल सरकार ही रहते थे और प्रतिदिन अष्टयाम विधि भी होती थी। गरीबों, अनाथों एवं दुखियों पर तो श्री सिद्ध किशोरी जी की विशेष कृपा एवं अपार दया रहा करती थी। उनके दरबार से कोई याचक कभी खाली हाथ वापस जाते मैंने नहीं देखा, जो कोई जिस चीज की भी याचना करता वह अवश्य श्री सिद्धकिशोरी जी के द्वारा उसको मिल जाती। श्री पुजारी जी ने उनका इस प्रकार का दयालु स्वभाव देख सुनकर समस्त भंडार एवं खजाना उन्हीं को सौंप रखा था।

(६६) स्वयं पाकी जी का कथन है कि बिहार लेजिसलेटिव असेम्बली पटना के स्पीकर बाबू रामदयालु सिंह जी को मैंने पटना में देखा था, उनको लीलास्वरूपों के प्रति उस समय न तो कोई

श्रद्धा थी और न ही भावभक्ति। अकस्मात् एक दिन सरकारी झाँकी में पहुँच गये, उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी ने उनको अपूर्व चमत्कार द्वारा ऐसा आकर्षित किया कि वह स्वयं खिंचे हुये चले आये, और श्री युगल सरकार के चरणों में गिर पड़े घटना इस प्रकार है—

श्री युगल सरकार केवल दो ही थालों में बालभोग कर रहे थे, परन्तु स्पीकर साहब को श्री युगल सरकार के सम्मुख पूरे छप्पन थाल अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थों से सुसज्जित दृष्टि गोचर हुये। उन्होंने श्री युगल सरकार को उन सब थालों में से आजानुभुजा द्वारा सामग्री उठा-उठा कर आरोगते हुये स्वयं देखा केवल इतना ही नहीं, उस समय की माधुरी, अनुपम छटा एवं मन्द-मन्द मुस्कान ने उन पर वशीकरण चला दिया, तभी तो सरकार की जुल्फे जंजीर में वह ऐसे फंसे और जकड़ गये कि मरते दम तक उसमें से निकलना और छूटना उनके लिये असम्भव हो गया, यहाँ तक कि उनके घर भर के सब लोग श्री पुजारी जी महाराज के कृपापात्र बन गये।

श्री लीलाविहारी सरकार के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा, प्रेम भक्ति थी कि जब तक आप यहाँ इस मृत्युलोक में रहे, प्रतिवर्ष सरकारों को कभी पटना में, कभी हाजीपुर में, तो कभी अपनी जन्मभूमि में ही सादर बुलाते, उनका मान सम्मान करते हुये श्री विवाह कलेवा उत्सव का आनन्द भी प्राप्त करते रहे। धन्य है आपकी श्रद्धा, भाव, प्रेम और भक्ति को। यहाँ रह कर तो आप ने अपना लोक सुधारा, अब साकेत लोक में भी श्री सिद्ध-किशोरी जी के समीप उनकी सेवा में रहते हुये अपना परलोक सुधार रहे हैं। आप के घर के लोगों का तो यह नियम हो गया था कि जब तक श्री युगल सरकार का दर्शन करके उनका

चरणामृत न ले लेते और उनको कुछ जलपान न करा देते तब तक कोई जल भी न पीता था। आप सबकी साधु सन्तों में भी पूर्ण श्रद्धा थी। कोई अभ्यागत या अतिथि आपके द्वार से कभी खाली न जाता था।

आप से बिदा होते समय ऐसा प्रतीत होता था, मानो घर से लड़की की बिदाई हो रही हो। आप की भावना भी यही थी। आप श्री राम जी को अपना दामाद एवं श्री किशोरी जी को अपनी पुत्री मानते थे, तभी तो बिदाई के समय अनेक प्रकार की वस्तुयें दहेज की तरह बिदाई में भेंट किया करते थे।

(६७) बाबा रामचन्द्र दास जी का कथन है कि जिस समय मौनी हरसेवक दास जी अपने स्थान का सब कार्य छोड़ कर दिन रात श्री युगल सरकार की ही सेवा में रहने लगे। उस समय बहुत से साधु संत इनको दिक करने लगे और इनकी निन्दा शिकायत भी करने पर उतारू हो गये। सब के हृदय की जाननहारी अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी ने मौनी जी को तब अपने समीप बुलाया, और इनके हृदय को भी भली भाँति टटोला, जब उनका हृदय कुछ संकुचित पाया तो पूछा कि सच-सच कहो तुम क्या चाहते हो ? मौनी जी ने केवल श्री अयोध्या जी का वास, एवं सरकारी भक्ति को माँगा। परन्तु श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि जिस में हम तुम्हारा कल्याण देखेंगी वही करेंगी, कहिये आप को स्वीकार है ? तब श्री मौनी जी ने चरण पकड़ कर प्रार्थना की, कि सरकार भला मैं आपकी आज्ञा का कैसे उल्लंघन कर सकता हूँ। इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने उनके सिर पर अपना हस्तकमल फेर कर आज्ञा दी कि अभी तुम को श्री गुरु सेवा ही करनी उचित है। इसी में आपका कल्याण, आबरू एवं मान सम्मान होते

हुये कई स्थानों का पूर्ण अधिकार भी प्राप्त होगा। और यदि हठपूर्वक मेरी आज्ञा को न मान कर हमारी ही सेवा में रहने का आग्रह किया तो तुमको हमारे बिछोह में अधिक पछताना और रोना भी पड़ेगा, कारण कि मैं यहाँ से बहुत जल्दी साकेत जाने वाली हूँ। न जाने श्री किशोरी जी के उस वाक्य, स्पर्श, में अथवा आशीर्वाद में ही कौन सी अपूर्व शक्ति थी या उच्चाटन ही था, कि मौनी जी उसी दिन श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद लेकर अपने श्री गुरु महाराज जी की सेवा में पहुँच कर तन-मन-धन से उनकी सेवा करने लगे।

सज्जनो! इधर से ज्यों-ज्यों श्री सिद्धकिशोरी जी का आशीर्वाद फला त्यों-त्यों उधर से श्री मौनी जी भी फलने फूलने लगे। प्रतिदिन इनकी मान प्रतिष्ठा बढ़ने लगी, श्री पौहारी जी महाराज के समस्त स्थानों का कार्य एवं प्रबन्ध इनके हाथों में सौंपा गया, और आप वहाँ के प्रधान अधिकारी बना दिये गये। जिस समय श्री सिद्धकिशोरी जी अस्वस्थ रहीं, उस समय श्री मौनी जी ने उनकी तन-मन धन से सेवा की, और लगभग तीन हजार रुपये के आपने उनके निमित्त दान, पुण्य औषधि एवं भंडारा इत्यादि में भी खर्च करते हुये अपने सच्चे प्रेम, उदारता एवं त्याग का पूर्ण परिचय दिया।

(३८) श्री हनुमान प्रसाद जी हेडमास्टर हाई स्कूल गड़ीघाट पोस्ट सिंहपुर जिला बाँदा से पत्र द्वारा (लेखक जी को) लिखते हैं कि मैं श्री सिद्ध किशोरी जी के दो चमत्कारी चरित्र लिखकर भेज रहा हूँ, आशा करता हूँ कि आप इस लेख को भी उनकी जीवनी में छापने के लिए स्थान देंगे। इसके अतिरिक्त और भी कई चरित्र हैं मगर माँ (श्री किशोरी जी) के विषय

में अधिक क्या लिख सकता हूँ। मैं तो छुद्र बुद्धि वाला हूँ। मैं सन् १९३७ में प्राइमरी स्कूल ओरा से तनज्जुल होकर प्राइमरी स्कूल सीतापुर (चित्रकूट) में आ गया था। उसी साल श्री जानकीकुंड में बिहौती भवन सरकारों द्वारा विवाह-कलेवा उत्सव बड़े ही धूम धाम के साथ मनाया गया। बरात के लिये दो दिन पहिले से ही तैयारियाँ होने लगीं; मैं उस समय सेठ साधूराम तुलाराम की धर्मशाला में रहता था। रजौला जागीर से भी हाथी मँगाया जाना था, तथा दरी गलीचा आदि मँगाने की लिखा पढ़ी हम लोग कर रहे थे। उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपने मुखारबिन्द से कहा था कि मास्टर साहब आप इतने परेशान क्यों हो रहे हैं, परसों इतना पानी होगा कि सामान सब भीग कर बिगड़ जायगा। हमने पूछा कि क्या सचमुच वर्षा होगी ? तो सरकार ने कहा कि हाँ खूब वर्षा होगी। आकाश बिल्कुल साफ था, कार्तिक का महीना था, बादल का कहीं नामोनिशान न था, बिवाह के एक दिन पहिले शाम तक आकाश निर्मल रहा, परन्तु दो बजे से हवा तेज चलने लगी सूर्योदय होते-होते आकाश में बादल छा गये और थोड़ी-थोड़ी बूँदें भी पड़ने लगीं, धीरे-धीरे जैसे सूर्य चढ़े पानी अधिक बरसने लगा, और दो घंटे दिन चढ़े तक तमाम गलियों में कीचड़ ही कीचड़ हो गया। बार-बार भक्तों के प्रार्थना करने पर श्री सिद्ध किशोरी जी ने मुस्कराते हुये केवल इतना ही कहा कि शादी विवाहादि शुभअवसरों में ऐसा होना माँगलिक है।

(६६) श्री हनुमान प्रसाद जी हेडमास्टर का कथन है कि मैं किसी कारणवश बोर्ड से ३०) माहवार से २०) माहवार पर तनज्जुल होकर जब सीतापुर (चित्रकूट) की मास्टरी पर आया था, उस समय दुःखी दशा में मेरी बुद्धि भी ठिकाने नहीं रहती थी। अकस्मात् मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी से एक दिन

प्रार्थना की, कि सरकार ! आप तो बरसात समाप्त करके यहाँ से श्री अवध को जा रहे हैं, मुझे भी आशीर्वाद देते जायें ताकि मैं अपनी असली पोस्ट (हेडमास्टरी) पर चला जाऊँ। श्री माता जी ने कहा कि घबरायें नहीं, आप शीघ्र ही यहाँ से अपने असली पद पर चले जायेंगे। सज्जनो ! केवल आठ ही दिन के बाद हुक्म आया कि आप अपील से बहाल कर दिये गये हैं, और प्राइमरी स्कूल पचोखर तहसील नरैनी की हेडमास्टरी पर आप ३०) माहवार पर मुक़र्रर किये गये। श्री सिद्धकिशोरी जी के इन चरित्रों को देख-सुन कर हमें तो भारी सुख हुआ, और उनमें अटूट श्रद्धा बढ़ी, तब से मैं प्राय: श्री अवध में दर्शनार्थ आने-जाने लगा।

(७०) श्री अयोध्या जी सद्गुरु सदन के श्री सियाकिशोरी-शरण जी पुजारी का कथन है कि मेरे राम को भी शृंगारी पद पर बिहौतीभवन में सरकारों की सेवा में दो-तीन साल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैंने उनके कई अनोखे चमत्कारी चरित्र देखे थे जिनको भइया जी (श्री रामगोपाल-दास जी) ने उनकी इस पावन जीवनी में लिखा है।

(७१) पाठको ! अब मैं रामगोपालदास (लेखक) चेला अनन्त श्री स्वामी महन्त श्री जयदेवदास जी महाराज, आनरेरी मजिस्ट्रेट जमींदार, माफ़ीदार, संस्थापक श्री जयदेव वैष्णव संस्कृत कालेज कर्वी (चित्रकूट) श्री सिद्धकिशोरी जी के प्रति अपने हृदय के उद्‌गार, प्रथम दर्शन एवं उनके कुछ चमत्कारी चरित्रों का भी वर्णन करूँगा, जिनका मुझे सरकारी सेवा में रह कर अनुभव हुआ था।

श्री अयोध्या जी से बिहौतीभवन समाज नवम्बर १६३६ में श्री जानकीकुण्ड (चित्रकूट) पहुँचा तो दूसरे ही दिन मुझे श्री मस्तराम जी ने शुभ सन्देश सुनाया कि पूज्य श्री स्वामी जी,

महाराज एवं श्री धर्मभगवान जी भी पधारे हैं। कार्तिक शुक्ल ५ से श्री रामविवाह-कलेवा उत्सव प्रारम्भ होगा। श्री स्वामी जी की आज्ञानुसार आप भी कल संध्या समय तक अवश्य वहाँ पहुँच जाना। साथ ही साथ श्री सिद्धकिशोरी जी की भारी प्रशंसा करते हुये यह भी कहा, कि इस समय का सुख, आनन्द, अकथनीय है ऐसा आनन्द आपको कभी न मिला होगा। मैं भी ३-४ वर्ष से श्री युगल-सरकार की सेवा में रहता हूँ। इस प्रकार की प्रशंसा सुनकर मेरे तो हृदय में सरकारी दर्शनों की उत्कट लालसा जग उठी, यहाँ तक कि उस रात्रि का कटना भी कठिन हो गया, दूसरे दिन श्री गुरू जी महाराज की आज्ञा लेकर कुछ भोग की सामग्री साथ में ले ३-४ सन्तों के साथ-साथ मैं श्री जानकीकुँड में पहुँचा तो देखा कि श्री रामजी महाराज का दूल्हा शृंगार हो चुका है और वह शृंगार-भोग आरोग रहे हैं। शृंगारी रामविलास शरण जी एवं श्री मस्तराम जी सेवा में उपस्थित हैं। मैंने भी तुरन्त एक थाल में भोग की सामग्री सजाई और ज्योंही श्री राम जी की सेवा में जाने लगा, उस कुंज के बाहर दरवाजे के समीप बैठे हुये एक बालक ने सहसा मुझसे कहा "भैया जी दण्डवत्"। मैंने भी कोई गृहस्थ का बालक समझ कर जै सीताराम कह दिया, और भोग का थाल लेकर कुंज के अन्दर श्री राम जी के समीप चला गया। उनके सम्मुख भोग का थाल रखकर दण्डवत् प्रार्थना की कि कर्वी स्थान से आ रहा हूँ। कुछ देरी हो गई है क्षमा करते हुये इस भोग को भी स्वीकार किया जाय तो बड़ी कृपा होगी। सरकार ने मेरी प्रार्थना को सुनकर उस भोग को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करते हुये प्रेम से आरोगा। श्री मस्तराम द्वारा मेरा परिचय कराये जाने पर फिर सरकार ने अपने करकमलों द्वारा मुझे अपनी सीथ प्रसादी भी दी। अब दूसरा थाल श्री सिद्धकिशोरी जी के निमित्त मैंने

तैयार करके जब मस्तराम जी से उनका ठिकाना पूछा तो मस्त-राम जी ने मुस्कराते हुये मुझसे कहा कि इसी कुंज के बाहर ही तो श्री सिद्धकिशोरी जी बिना शृंगार किये बैठी हैं क्या आपने उनको नहीं पहिचाना ? इतना सुनते ही मैं भारी लज्जित हुआ, जाकर श्री सिद्धकिशोरी जी से क्षमा माँगी और भोग का थाल उपस्थित करते हुये प्रार्थना की कि सरकार ! आपको पहिचान नहीं सका, इसलिये भूल के कारण दण्डवत्-प्रणाम भी नहीं किया। इतना सुनते ही दयासागरी श्री सिद्धकिशोरी जी ने तुरन्त मेरा हाथ पकड़ कर अपने समीप बैठा लिया, और मेरे सिर पर अपने कर कमल का स्पर्श करती हुई बोलीं कि बहिन को भैया भले ही भूल जाय परन्तु बहिन अपने भैया को कैसे भूल सकती है ? मैंने फिर प्रार्थना की कि आज प्रथम ही सरकार का शुभदर्शन हुआ है, अज्ञानवश आपको न पहिचान सका, इसलिये क्षमाप्रार्थी हूँ। इस जीव का तो स्वभाव ही भूलने का है, मगर आप तो सर्वज्ञ हैं, फिर आप अपने जन को कैसे भूल सकती हैं। आपके प्यार एवं अमृतभरी बोलन ने तो मेरे सूखे प्राणों को भी हरा भरा कर दिया है, और आपने जो मुझे भैया की उपाधि देकर सम्बोधित किया है, मैं एक अपराधी एवं अपात्र जीव भला इस योग्य कहाँ हूँ जो आपका भैया कहलाऊँ ? मैं तो अपने क्षुद्र कर्मों के कारण आपको अपना मुख भी दिख-लाने योग्य नहीं हूँ, परन्तु यह तो आपकी असीम अनुकम्पा है कि आप जीवों के कल्याणार्थ उन पर सदैव दयादृष्टि एवं कृपा ही किया करती हैं। परन्तु कितने दुख का विषय है कि यह जीव आपके समस्त उपकारों को भूल कर आपकी आज्ञाओं की अव-हेलना करता हुआ आपसे सदैव विमुख रहता है। जिसके परि-णामस्वरूप उसे चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है।

सरकार ! जिस किसी भी जीव की ओर आपकी कृपादृष्टि

हो जाय, अथवा जीव, हो आप कोअपनी प्रेम भरी निगाह से देख ले, तब तो वह कृतार्थ ही हो जाये, भवसिन्धु में गोते खाता हुआ पार हो जाय। मैं तो आप के श्री चरणों की रज अपने सिर पर धारण कर आपको सादर सप्रेम प्रणाम करता हुआ प्रार्थना करता हूँ कि आप तो कृपासागरी हैं, जीवों पर दया करना एवं उन्हें कुपथ से हटाकर सुपथ पर लगाना तो आप का स्वभाव ही ठहरा, आपकी प्रत्येक चेष्टायें जीवों के कल्याण के ही निमित्त हुआ करती हैं, आपकी जो कुछ भी प्रशंसा की जाय-सो कम है। मेरी प्रार्थना को सुनते ही श्री सिद्धकिशोरी जू ने तो मानो पूर्ण दया का भंडार ही खोल दिया। कहने लगीं भैया जी! पापी हों, अधम हों, मार डालने योग्य हों, कैसे भी अप-राधी क्यों न हो, श्रेष्ठ पुरुषों को ऐसे सभी जीवों पर करुणा ही करनी उचित है, कारण कि कोई किसी का अपराध नहीं करता। सब कोई अपना-अपना कर्मफल भोगते हैं। और संसार में ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं है कि जिससे भूल न होती हो।

पाठको! मैं इसी चिन्ता में रात दिन घुला करता था, कि मेरे जन्म जन्मान्तरों के पाप ताप कैसे दूर होंगे? प्रथम तो मैं किसी साधना द्वारा इनकी निवृत्ति करने में असमर्थ, दूसरा मेरा अपना निजी कोई ऐसा प्रबल पराक्रम था ही नहीं, तीसरे मेरे ऐसे कोई सुकृत भी न थे, जो सरकारी शुभदर्शन एवं सत्सङ्ग प्राप्त कर सकता, किसी साधना द्वारा भी यह कार्य होना असम्भव था। जिस पर भगवान कृपा करें जिसे अपनायें वही तो उनकी कृपा एवं प्रेम का भाजन बनकर समस्त पाप ताप से छूट सकता है। श्री सिद्धकिशोरी जू के शुभ दर्शन करते ही मुझे तो निश्चय हो गया कि मेरे जीवन में यह स्वर्ण अवसर बड़े भाग्य से आया है। उनका निष्कपट व्यवहार, कृपा एवं स्नेह अपने ऊपर देख कर मुझे तो भारी प्रसन्नता हुई मेरे हृदय

की कलियाँ खिल गईं, मैं उन पर मुग्ध हो गया, एवं आपके दयापूर्ण श्री मुखवाक्य सुनते ही कुछ देर तक मैं तो मूक सा हो गया, मानो किसी ने मेरे मुख पर ताला लगा दिया हो। थोड़ी देर के बाद अनायास ही मेरे मुख से उनके प्रति यह शब्द निकले, अहा धन्य! प्रभु की दया, अनुकम्पा, एवं कृपा की साक्षात मंगलमई मूर्ति माँ मैथिली जू ही हैं। क्यों न हो दया एवं कृपा का पूर्ण विकास तो मातृ हृदय में ही माना गया है। वास्तव में यदि माता बच्चे के अपराध ही देखने लगे, तब तो दया धर्म का दिवाला ही निकल जाय। अहा कितनी उदारता है आप के कोमल अन्तःकरण में, भला बताओ तो सही, ऐसी रसपूर्ण माँ की गोदी में बैठने का व पुनः उनकी चरणों की रज में लोटने का किसका जी नहीं चाहता होगा? ऐ माँ श्री मैथिली जू! यद्यपि मैं कुपात्र हूँ तो भी बुरा भला जैसा भी हूँ आप ही का तो बालक और सेवक हूँ। बस यही प्रार्थना और विनय है, यही भिक्षा भी माँगता हूँ कि मेरी प्रेम रूपी लता को अब कृपा रूपी जल देकर विशाल किया जावे, बीच में कहीं मुरझाने न पावे, अब अपना के फिर कभी त्यागना भी नहीं। सज्जनो! मेरी प्रार्थना सुनने के बाद श्री सिद्धकिशोरी जी ने पहिले तो मेरा हाथ पकड़ कर अपने ही आसन पर बैठा लिया और फिर प्रेम की अमृत धारा बरसाती हुई कहने लगीं, भैया जी! आप सेवक कैसे हैं? आप तो मेरे लक्ष्मीनिधि भैया हैं। देखिये, हमारी दोनों की माता श्री सुनयना अम्बा जू एवं पूज्य पिता श्री विदेह जू महाराज हैं। भैया जी! क्या आप भी अभी से विदेह हो गये जो अपने आप को एवं अपनी बहिन को भी भूल गये? "श्री सिद्धकिशोरी जू के निष्कपट प्रेम ने मुझे तो नहला दिया, म बड़ी असमञ्जस में पड़ कर सोचने लगा परन्तु कुछ निर्णय नहीं हो रहा था कि मैं कौन हूँ।

इतने में मन्द-मन्द मुसकानयुक्त श्री किशोरी जू ने अपनी प्रसादी आधा पान मेरे मुख में अपने ही करकमलों द्वारा भर दिया, तब तो मेरी आँखें खुल गईं और मेरी पहिली भावना काफूर होकर श्री सिद्धकिशोरी जी मुझे मेरी प्रिय बहन नजर आने लगीं, और मैं उनका प्रिय भैया राजकुमार लक्ष्मीनिधि।

पाठको ! मैं उस समय के सुख एवं हृदय आनन्द से आप लोगों को कैसे परिचत कराऊँ, जब कि हृदय के नेत्र नहीं, और नेत्रों को हृदय ही नहीं है। आहा ! लोहे को स्पर्श मात्र से कञ्चन बना डालना इस प्रकार का अनुपम चमत्कार तो मुझे केवल श्री सिद्धकिशोरा जू में ही प्रतीत हुआ। न जाने उस स्पर्श में कोई जादू था एवं पान में ही कोई वशीकरण, सीथ प्रसादी में क्या कोई टोना था, या उस प्यार एवं स्नेह में ही कोई मोहनी मन्त्र ? जिसने मेरी पहली दास भावना को बिलकुल ही भुला दिया। मैं इस योग्य कहाँ था कि श्री किशोरी जू का भैया कहला सकता ? परन्तु जिसे कृपाकर आप अपना लेवें वही तो आप के अनुग्रह का पात्र बन सकता है। जिस प्रकार पारस लोहे की कुपात्रता पर ध्यान न देते हुये अपने स्वाभाविक धर्मानुसार उसको स्वर्ण बना देता है, उसी प्रकार श्री सिद्धकिशोरी जू ने भी अपने दयालु स्वभाववश मेरी कुपात्रता पर ध्यान न देते हुये मुझ कुपात्र को भी अपना कर अपना भैया बना ही तो लिया। अहा मैं आज अपने भाग्य की कहाँ तक सराहना करूँ, मैं कितना भाग्यशाली हूँ, जो मुझे आप के दैव दुर्लभ शुभदर्शनों का सर्वोत्तम सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रतीत होता है कि मेरे पूर्वजों के पुण्य प्रताप एवं आप की असीम अनुकम्पा द्वारा ही मुझे यह शुभ अवसर प्राप्त हो सका। केवल अपने पुरुषार्थ से प्रयत्न करके यदि कोई आप को पाना चाहे, या आप से कोई दृढ़ नाता ही जोड़ना चाहे तो असम्भव

है। आप जैसे सिद्ध महानपुरुषों का दर्शन संसार पंकक में फँसे हुये विषयासक्त हम जैसे प्राकृत पामर जीवों को होना असम्भव ही था। जय हो हमारी कृपा सागरी श्री बहिन जी की।

बहिन! अब तो मैं आप के शुभदर्शन पाकर एवं दृढ़ सम्बन्ध होने से निश्चिंत हो गया, तथा मुझे यह भी पूर्ण विश्वास हो गया कि आप साक्षात श्री जनकनन्दिनी जू हैं, आप ही संसार में फँसे दीन हीनों, साधन हीनों पर कृपा करके अपने दर्शनों से उन्हें कृतार्थ करने के लिये कभी-कभी किसी न किसी स्वरूप में इस मृत्युलोक में चली आया करती हैं, आपने मेरे अवगुणों की तरफ ध्यान तक नहीं दिया। जो भाग्य देवताओं को भी दुर्गम है, आज भाग्यवश मुझे स्वतः ही प्राप्त हुआ। अब तो मैंने आप की शरण गहली है, नाता भी दृढ़ हो गया है, इसलिये मुझे तो अपनी दुर्गति का भय भी नहीं रहा। आपके वचन मुझे अत्यन्त सुखकर प्रतीत हो रहे हैं, आप का एक-एक वचन मेरे अज्ञान को भगाने के लिये पर्याप्त हैं।

सज्जनो! श्री सिद्धकिशोरी जी के स्नेह से सने अत्यन्त मधुर अपनपौ से भरे वचनों को सुन-सुन कर मेरा तो हृदय भर आया। मेरे प्रेमाश्रुओं ने उनके चरणकमलों को भिंगो दिया और मेरे मन में उठने वाली समस्त शंकायें निर्मूल हो गईं। प्यारी बहिन ने मुझे अपने वात्सल्य स्नेह से स्नान करा कर प्रेमसागर में निमग्न कर दिया। इधर बहनोई श्री राम जी भी तो कृपा और गुणों के सागर; दया के निधि तथा शोभा के धाम ही मिले। उनके पुनीत प्रेम एवं आश्वासन से भी मेरा समस्त शोक सन्ताप दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ।

सज्जनो! श्री जानकीकुण्ड पर कई दिन तक बड़े ही समारोह के साथ श्री विवाह-कलेवा, चौथारी उत्सव एवं रँगीली झाँकियों

भी हुई ! यद्यपि समस्त जनता वाह-वाह करती रही, परन्तु मैं सच कहता हूँ कि श्री सिद्धकिशोरी जी की वह अनुपम प्रेम भरी मधुर वाणी और शील स्नेहमय स्वभाव के सामने मुझे तो उत्सव फीका सा ही लगा ! उस समय के परमानन्द को मैं यहाँ लिख कर नहीं बता सकता। प्रत्येक सुहृद अपने हृदय से ही अनुमान करके जान लेंगे, कि उस समय कैसा आनन्द एवं सुख का प्रवाह बहा होगा। श्री किशोरी जी के उन प्रिय एवं मधुर वचनों की जब कभी याद आ जाती है तो उनके विछोह से चिन्तित होने के कारण नेत्रों में आँसू भर आते हैं और उनकी याद में रोया करता हूँ "होने को तो हो ही जाता है निशदिन साँझ-सवेरा, परन्तु ! श्री सिद्धकिशोरी जू बिन नीरस है जीवन मेरा।"

मैं तो उन महात्माओं के भाग्य की सराहना किया करता हूँ। धन्य हैं वह सन्त, जिन्होंने निरन्तर श्री युगल सरकार की सेवा में रह कर सुख लूटा और धन्य है उन सज्जनों को भी जो अनुभव की आँखों से उन्हें हर समय देखते हुये उन्हीं की नित्य लीला में मग्न रहते हैं और परम धन्य हैं ऐसे भाव भीने प्रेमी भक्तजन, जो निरन्तर, उस लीलाधर प्रभु के श्री युगल नाम की रट्टन लगा कर प्रेमरस का आस्वादन करते हुये प्रेम विह्वल होकर कभी तो रुदन करते, कभी हँसते तो कभी मस्त होकर नाचने भी लगते हैं ! "प्रेम की अकथ कहानी न जाने ज्ञानी ध्यानी। सुर नर मुनि गये सब हार।" तब बताओ कि लेखनी घुमाने वाला मुझसा एक अनाड़ी लेखक भला सरकार की लीला एवं महत्ता को क्या जान सकता है ? हाँ तो कहाँ का प्रसंग और कहाँ चला आया ? मैं तो कुछ आगे ही बढ़ गया, खैर, बात भी तो है श्री विदेह राजकुमारी की, और मैं भी ठहरा उन्हीं का भूला-भटका पाला-पोसा, लाड़ला भैया लक्ष्मीनिधि। तब तो आगे पीछे की कौन

बिचारे। एवं ठीक भी है, आगे ही बढ़ा हूँ न ! राजकुमारों को तो आगे बढ़ना ही चाहिये, न कि पीछे हटना। पीछे को तो कायर लोग रहा करते हैं।

महोत्सव समाप्त होने के पश्चात् श्री युगल सरकार, उनके पुजारी जी, श्री स्वामी जी एवं श्री धर्मभगवान जी से भी बहुत विनय-प्रार्थना की गई कि यदि अधिक न हो सके तो केवल तीन-चार दिन के लिये तो कर्वी में पधार कर अपनी चरण-रज द्वारा स्थान को पावन करते हुये हमारे श्री गुरु महाराज जी को भी दर्शन देकर कृतार्थ करें। कारण कि श्री गुरु महाराज जी कुछ अस्वस्थ होने के कारण श्री जानकीकुण्ड पर आपके शुभ दर्शन करने से वञ्चित रहे हैं। परन्तु पटना से सरकारी तिलक आ चुका था, इसलिये हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई।

(७२) जिस समय श्री बिहौती समाज श्री जानकीकुण्ड से कर्वी रेलवे स्टेशन पर पधारा, उस समय मैं (लेखक) भी सरकारी दर्शनार्थ स्टेशन पर पहुँच गया था। आज सरकार यहाँ से पटना के लिये प्रस्थान करेंगे, यह सुन कर उनके विछोह में मेरा हृदय कातर होने लगा; जी तो चाहता था कि उनके साथ-साथ पटना तक चला जाऊँ, परन्तु स्थान में श्री गुरु महाराज के अस्वस्थ होने के कारण श्री युगल सरकार ने आज्ञा नहीं दी। मेरी इस प्रार्थना पर "कि फिर सरकारी दर्शन मुझे कब प्राप्त होंगे ?" श्री सिद्धकिशोरी जी ने उत्तर दिया कि कल इलाहाबाद में, कारण कि आज हमको गाड़ी न मिलने से कर्वी में ही रहना होगा। और आपको गुरु आज्ञानुसार आज इलाहाबाद जाना होगा। यह सुनते ही मैं बड़ी असमंजस में पड़ गया कि मुझे कल इलाहाबाद में कैसे दर्शन होंगे, और अभी तो गाड़ी के आने में एक घण्टा की देरी है, गाड़ी भी इनको कैसे न

मिलेगी ? देखिये ! मोटर लारी जिसमें सामान लद कर चित्रकूट से आ रहा था उसका एक पक्का रास्ते में ही फट गया, उसके ठीक कराने में काफी समय लग गया, यहाँ तक कि सवारी गाड़ी चली गई, और उसके एक घण्टा बाद ही इनके सामान की लारी स्टेशन पर आई।

इधर इलाहाबाद मुट्ठीगंज के एडवोकेट बाबू रामनामाप्रसाद जी की बहिन का (जो कि कई दिनों से श्री जानकीकुण्ड पर सरकारी उत्सव का आनन्द ले रही थीं) परमाग्रह था कि पटना जाते समय केवल एक रात्रि के लिये इलाहाबाद में हमारे भाई साहेब के मन्दिर में युगल झाँकी का आनन्द दिखाते हुये तब पटना जायँ, जिसको श्री पुजारी जी ने स्वीकार भी कर लिया था! अब देखिये, इधर तो वकील साहब की बहिन को इलाहाबाद जाना है, कल रात्रि को उनके मन्दिर में झाँकी होना निश्चित है। मुझे भी आज श्री गुरु महाराज ने किसी आवश्यक कार्यवश इलाहाबाद वकील साहब के मकान पर जाने के लिये आदेश दिया। अहा! स्नेह का कैसा सुन्दर मेल (संयोग) होता है एवं सिद्धकिशोरी जी की भविष्यवाणी भी किस प्रकार सिद्ध होती है कि "कल आपको इलाहाबाद में दर्शन होंगे!" केवल इतना ही नहीं, और भी देखिये तो आगे की घटना कितनी अपूर्व है। आज तो रात्रि की गाड़ी से मैंने भी वकील साहब की बहिन के साथ-साथ जाने का निश्चय कर लिया, जाते समय श्री किशोरी जी ने फिर मुझसे कहा आज तो आप वकील जी के यहाँ जा रहे हैं और कल हमको भी उनके मन्दिर में रात्रि के नौ बजे पहुँचना है, क्या आप कोई सवारी लेकर स्टेशन पर हमको लेने के लिये आ सकेंगे ? मैंने उत्तर दिया कि हाँ! अवश्य गाड़ी से एक घंटा पहले स्टेशन पर सवारी सहित पहुँचूँगा। इधर श्री सिद्धकिशोरी जी का कथन था कि

भइया जी ! आप स्टेशन पर नही आवेंगे । यद्यपि मैंने प्रतिज्ञा-पूर्वक उनको विश्वास दिलाने के लिये भी कई बार कहा कि अवश्य आऊँगा मगर श्री किशोरी जी का बारम्बार यही कथन था कि आप नहीं आ सकोगे । मुझे यह क्या मालूम था कि इसमें भी कोई रहस्य छिपा है । खैर, सरकार से विदा होकर हम दोनों इलाहाबाद पहुँचे । वकील साहब तो मुझे देखते ही बड़े प्रसन्न हुये, और कहने लगे कि अच्छा हुआ आप इस शुभ अवसर पर स्वयं आ गये । इसलिये कल की युगल झाँकी का सम्पूर्ण प्रबन्ध आपके ही जिम्मे रहेगा । मैंने भी इसको प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और दूसरे दिन शाम के छै बजे तक मैंने सिंहासन आदि का प्रबन्ध किया और करीब आठ बजे दो मोटर गाड़ी लेकर स्टेशन जाने को तैयार हुआ, तभी मुझे अचानक जाड़ा देकर बुखार आ गया और शरीर तक की सुधि नहीं रही । मुझे तो वकील सा० ने कम्बल उढ़ाकर सिंहासन के समीप ही सुला दिया और स्टेशन पर सवारियाँ भिजवा दीं । रात्रि के साढ़े नौ बजे समाज ज्योंही मन्दिर में पहुँचा, तो आते ही सिंहासन के समीप मुझे सोया हुआ देखकर श्री किशोरी जी ने मेरे मस्तक पर अपना करकमल फेरते हुये मुझे भैया-भैया कह कर जगा दिया । और कहने लगीं कि आपने तो स्टेशन पर सवारी लाने की प्रतिज्ञा की थी अब कहाँ गई वह आपकी प्रतिज्ञा? मैंने जो घटना थी सब कह सुनाई । श्री किशोरी जी ने मेरी नाड़ी देखते ही कहा कि आपको बुखार कहाँ है ? डाक्टर साहब जो मेरे समीप बैठे थे, उन्होंने कहा कि अभी इनको १०४ डिगरी बुखार है । श्री किशोरी जी ने थर्मामीटर लगाने को कहा, जब थर्मामीटर लगा कर देखा गया तो बुखार बिल्कुल नहीं था । न जाने श्री किशोरी जी के स्पर्शमात्र से ही मेरा ज्वर कहाँ भाग गया । इस प्रकार की अपूर्व घटना को प्रत्यक्ष देखकर डाक्टर

सा०, वकील साहब, एवं दूसरे उपस्थित प्रेमीजन भी चकित हो गये, वह सब श्री सिद्धकिशोरी जी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये उनकी विद्वाई के भी कायल हो गये। रात्रि को केवल दो घंटे तक रँगीली झाँकी हुई, व्यारू हुई; मैंने भी व्यारू प्रसाद सेवन किया, यह तो सरकारी लीला थी और उनकी वाक्यसिद्धि का चमत्कार था। जो कुछ ही आप अपने मुखारविन्द से कह दिया करती थीं, वह कभी निष्फल नहीं जाता था।

(७३) पटना के विवाहोत्सव में शीघ्र पहुँचना था। इसलिये सवेरे ही की गाड़ी से समाज ने पटना जाने की तैयारी कर ली। उनकी विदाई के समय मेरा धैर्य्य भाग गया, और श्री युगल सरकार कें युगल चरणों को पकड़ कर मैं व्याकुल हो छटपटाने लगा। मेरी यह दशा देख कर श्री सिद्धकिशोरी जी ने मुझे आश्वासन देते हुये मेरे मस्तक पर अपना करकमल फेरा और कहा कि भैया जी घबराओ मत, धैर्य्य रखो। थोड़े ही दिनों के बाद प्रधान श्री. रामविवाह पञ्चमी का उत्सव अगहन मास में होने वाला है, उस समय आपको श्री अयोध्या जी में पूर्णानन्द मिलेगा। और यह भी कहा कि आप को हमारे संग चार महीने तक देशाटन भी करना होगा। मैंने फिर प्रार्थना की कि विवाह पञ्चमी के अवसर पर एक स्थानीय मुकदमा के कारण मेरा वहाँ रहना बहुत जरूरी है, तब मुझे आप का दर्शन कैसे प्राप्त होगा ? श्री सिद्धकिशोरी जी ने उत्तर दिया भैया जी आप इसकी चिन्ता न करें, सब कार्य ठीक हो जायगा और आपको हमारा दर्शन अवश्य मि..गा। बस ! इतना कह कर आशीर्वाद देते हुये. श्री युगल सरकार विदा हो गये। इस आधार को पाते ही मुझे भी कुछ संतोष हो गया, और धैर्य बँध गया, कारण कि "डूबते को तिनके का सहारा भी काफ़ी होता है।" इधर कुछ दिनों बाद मेरे दिल में फिर यह

शंका उठी कि स्थानीय मुकदमा के कारण चार पाँच दिन का अवकाश मिलना तो कठिन है, फिर श्री युगल सरकार के साथ चार महीने रहने का सौभाग्य कैसे प्राप्त होगा ?

श्री विवाह पञ्चमी के दिन ज्यों-ज्यों निकट आने लगे, त्यों-त्यों मेरा चित्त भी सरकारी दर्शनों के लिये अकुलाने छटपटाने लगा। परन्तु भारी संकोच तो इस बात का था, कि श्री गुरु महाराज से दस पाँच दिन का अवकाश माँगू भी तो कैसे माँगू ?

पाठको ! भगवत् लीला की माप भला कौन कर सकता है ? भक्तों के कार्य का संचालन तो भगवान स्वयं एक निराले ही ढंग से किया करते हैं, जिसको कोई जान नहीं सकता। भगवान कब क्या और क्यों करते हैं, यह कहना तो शेष जी से भी शेष रह जाता है, तब मेरे जैसा कागज रँगने वाला अनाड़ी, भगवान की लीला को क्या समझ सकता है। भगवान बड़े खिलाड़ी हैं, उनकी लीला व रहस्य को समझ लेना क्या कोई साधारण बात है। देखिये ! स्थानीय मुकदमा की तारीख सात आठ महीने के लिये टल गई, अब दस पाँच दिन की कौन कहे, श्री गुरु महाराज ने विवाहोत्सव के दर्शनार्थ प्रसन्नतापूर्वक बीस पचीस दिन की आज्ञा दे दी।

भगवत् लीला के सम्बन्ध में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। प्रभु की लीला का वितान भी किस ढंग से तना हुआ है, यह भी कहना बुद्धि से परे की बात है। देखिये एक जंगली शेर अच्छे शिकारी को देख कर तो लापता हो जाता है और फिर वहीं शेर कुछ दूरी पर जाकर एक महात्मा के चरणचुम्बन करता हुआ दिखाई पड़ता है। तथा एक मनुष्य तो पाषाण (पत्थर)की मूर्ति को देख-देख कर हँसी उड़ाता है(नास्तिक लोग) और दूसरा उसी में अपने इष्टदेव की ही भावना से मस्त नजर

आता है। (भगवत्‌भक्त) ! एक तो पत्थर के खम्भे में बाँधकर जान से मारने को खंजर उठाता है (हिरण्यकश्यप) तो दूसरा उसी खम्भे में से अपने प्रभु को ही प्रकट कर दिखाता है। (श्री प्रह्लाद जी) अहा ! कैसी विचित्र लीला है।

पाठको ! अब आप जरा अपने हृदय से तो पूछिये कि इस विषमता का क्या कारण है, जरा अपने मस्तिष्क से विचार तो करिये कि इस अन्तर में क्या हेतु है ? यों तो संसार के सभी मनुष्यों की विचारधारा एक सी हो नहीं सकती। सब की विचार पंक्तियाँ न्यारी-न्यारी होने के कारण एक मार्ग में चल नहीं सकतीं। फिर भी मीमांसा के अन्त में सब का निष्कर्ष एक यही निकलता है, कि "विश्वासो फल दायक: ।" अपनी-अपनी भावना एवं विश्वास के अनुकूल ही फल भी मिलता है। मनुष्य अपनी श्रद्धा, विश्वास का बना हुआ एक पुतला है। जैसा जिसका विश्वास होता है वैसा ही वह हो जाता है।

उस हकीम (साँवलिया वैद्य) का सब काम हिक़मत के साथ होता है। भगवान अपने आश्रितों की रक्षा हर प्रकार से करते हैं। और यह भी एक तुली हुई बात है कि भगवान तो वही करते हैं, जिससे जीव का भला हो, चाहे जीव अज्ञानवश उसको प्रतिकूल समझे। भगवान की इच्छा भक्त की इच्छा के प्रतिकूल कब हो सकती है ? देखिये ! मेरी उत्कट इच्छा थी कि श्री युगल सरकार का विवाह पञ्चमी पर दर्शन हो जाय, भगवत्कृपा से दर्शन हो ही तो गया। इसलिये—

"उसे फ़ज़ल करते नहीं लगती बार, न हो मायूस उस से उम्मेदवार।"

(७४) मैं श्री राम विवाह पञ्चमी से पहिले ही श्री अयोध्या जी पहुँच गया। और प्रियभाषी मन्दमुसकान वाले श्री दशरथ

राजकुमार श्री कौशिल्या किशोर जू एवं श्री मिथिला मानसर की कुमुदिनी चन्द्र एवं चन्द्रमा से भी कोटि गुणा शीतल सुकुमारी श्री मिथिलेश राजकुमारी के युगल श्री चरणों के दर्शन एवं स्पर्श मात्र से मैं कृतकृत्य हो गया। और मेरे हृदय की असह्य व्यथा पानी बन-बन कर आँखों से बहने लगी। जिसको प्रिय बहिन-बहनोई श्री सीताराम जी ने अपनी चूँदरी एवं पीताम्बर की छोर से पोंछ कर कम कर दिया।

हाँ तो! श्री राम विवाह पंचमी का महोत्सव श्री बिहौती-भवन में प्रधान मानां जाता है। अहा! अगहन शुक्ला पंचमी तिथि कितनी भाग्यशाली है, आज के दिन विवाह में आनन्द की लहरें उछलेंगी, मेरी बहुत दिनों की आशा बेलि आज फली फूली, और मैं दलदल में फँसा हुआ सरकारी दर्शन करके सुखी हुआ। तिलक के अवसर पर श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपने श्री गुरुदेव (श्री पुजारी जी महाराज) से इस बात की विनयपूर्वक प्रार्थना करते हुये अनुरोध भी किया कि स्थान कर्वी (चित्रकूट) के अधिकारी श्री रामगोपालदास जी को मैं श्री जानकी-कुंड के महोत्सव से ही अपना भैया मान चुकी हूँ। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि वह जब तक इस मृत्यु लोक में रहें, बिहौती-भवन में प्रत्येक विवाह कलेवा उत्सव पर जहाँ तहाँ वह उपस्थित हो सकें उन्हीं के द्वारा समस्त तिलक, विवाह एवं कलेवा की विधि सम्पन्न हुआ करें। इस से हमको अधिक प्रसन्नता होगी, और यदि किसी ने हमारे इस संकल्प में कोई बाधा डाली, तो हमको भारी खेद होगा। श्री किशोरी जू की इस वार्ता को श्री पुजारी जी ने प्रेमपूर्वक सुना तो जरूर, उन्हें संकोच केवल इस बात का था कि अधिकारी जी पढ़े-लिखे एवं एक भारी गद्दी के स्वतन्त्र अधिकारी होते हुये एक सिद्ध महान पुरुष के शिष्य भी हैं इसलिये हो सकता है, कि वह इस भावना को

स्वीकार न करें, परन्तु सबके हृदय की जाननहारी श्री सिद्ध-किशोरी जी अपने श्री गुरु महाराज के हृदय की बात को भी ताड़ गईं, इसलिए श्री महाराज जी से कह ही तो दिया कि आप किसी बात की चिन्ता न करें, यह सब कार्य मैं स्वयं उनसे करा लूँगी, केवल उन्हें मेरे पास शृंगारकुंज में भेज तो दें। श्री किशोरी जू ने गुप्तरूप से पंडित दुर्गादत्त जी के द्वारा श्रीमान् श्री अवधनरेश जी के यहाँ से एक बहुमूल्य नई राजसी पोशाक भी मँगवा रक्खी थी। इसके अतिरिक्त राजा साहब की मोटर एवं आठ सिपाही भी पोशाक तथा बन्दूकों से सुसज्जित होकर बिहौतीभवन में पहुँच चुके थे। मुझे ज्योंही श्री पुजारी जी ने संदेशा दिया, मैं तुरन्त श्री सिद्धकिशोरी जी के समीप पहुँच गया; तो श्री किशोरी जी ने मेरा हाथ पकड़ा और भैया-भैया कह कर अपने समीप बैठाकर कहने लगीं कि आप का तिलक कुछ बिगड़ गया है, लाओ उसे सुधार दूँ। इतना कहते ही अपने करकमलों द्वारा मेरा तिलक सुधार कर केसरिया चन्दन की खौर लगा मेरे सामने राजसी पोशाक का एक बक्स भी रख दिया, और मुझे आज्ञा दी कि भैया जी इन वस्त्रों को पहिन लें। आप ही के द्वारा आज श्री रामजी की तिलक विधि, कल विवाह एवं परसों कलेवा उत्सव होगा। बस इस प्रकार आज से हमारा आपका तो बहिन भाई का एवं श्री रामजी से आप का साले बहनोई का दिव्य नाता दृढ़ होकर सदैव अटल अविकल और अचल रहेगा, जो कभी टूट न सकेगा। इतना सुनते ही मुझे भारी संकोच हुआ। मेरी प्रार्थना थी, कि मैं. एक कुरूप दाढ़ी मूँछ वाला बाबा जी मैं इस योग्य कदापि नहीं हूँ कि राजसी शृंगार धारण करके बिवाह की रस्म को अदा कर इस भावना.को भी निभा सकूँ। यह सेवा तो किसी सुन्दर बालक से ही लेनी उचित है।

मेरा उत्तर सुनते ही श्री किशोरी जी मचल कर कहने लगीं कि मैं तो आपको श्री जानकी-कुंड से ही अपना लक्ष्मीनिधि भैया मान चुकी हूँ, फिर आप टाल मटोल क्यों कर रहे हैं। क्या दाढ़ी मूँछों वाले भैया नहीं होते हैं ? यदि आपने राजकुमार का शृंगार न किया तो मैं भी अपना शृंगार न करूँगी, और भोजन भी न करके भूखी सो जाऊँगी।

सज्जनो ! श्री किशोरी जी के इस प्रकार के वचन सुनते ही मैं तो सहम गया। मेरी साँप-छछूँदर की सी दशा हो गई और सोच सागर में गोते लगाने लगा, कि अब करूँ तो क्या करूँ। यदि उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता, तो भारी अनर्थ हुआ जाता है, और अगर आज्ञा मानता हूँ तो साधु समाज में मेरी भारी हँसी होती है। जब श्री गुरु महाराज को मेरी इस भावना की खबर मिलेगी, तो न जाने वह भी कितने रुष्ट होंगे। और हो सकता है कि मुझसे कुछ रंज मान कर मेरा स्थान से परित्याग भी कर दें। मुझे चिन्तित और मेरा मुख मलीन देखते ही अन्तर्यामिनी श्री किशोरी जी मेरे मन की गति को तुरन्त जान गईं, और कहने लगीं कि आपके श्री गुरु जी महाराज रुष्ट न होकर आपकी इस भावना को देख सुन कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे, इस भावना द्वारा आपकी सम्पूर्ण मनोकामनायें पूर्ण होकर आपको अति सुख और परमानन्द भी प्राप्त होगा, अच्छे भावुक संत जन आपके इस भेष व भावना को देख सुनकर प्रफुल्लित होंगे, आप से अधिक स्नेह प्रेम भी करेंगे। यदि कोई अभागा आप से रुष्ट होगा तो उसकी चिन्ता नहीं। उस समय कई प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे। जिनमें से श्री स्वामी सत्याशरण जी महाराज एवं पूज्य श्री धर्मभगवान जी भी थे। इन्होंने मुझे उपदेश दिया कि अपने ऊपर श्री किशोरी जी की असीम कृपा समझो, जो आपका संसारी झूठा नाता तोड़ कर

दिव्य नाता जोड़ रही हैं। तब मैंने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य किया। मेरे मन का सब मलाल जाता रहा। प्रसन्नतापूर्वक शृंगार करके तैयार हो गया। मेरा किरीट-मुकुट एवं शिरपेंच स्वयं श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपने ही करकमलों से पहिनाया। उधर तिलक की समस्त सामग्री पहिले से ही तैयार रखी थी, सब सिपाही भी सुसज्जित हुये केवल मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। मंडप में जाते समय मैंने श्री किशोरी जी से प्रार्थना की कि मुझे सभा में बोलने में संकोच लगेगा, इसलिये मौन रह कर ही सब कार्य करूंगा। मुझे मुख छिपाने के लिये अपना प्रसादी रूमाल दे दिया जाय। इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने मुस्करा कर कहा कि भइया जी ! रूमाल तो मैं दे देती हूँ, परन्तु मेरी इस बात को भी याद रखना कि आज आप दरबार में इतना बोलेंगे जिसकी कोई सीमा नहीं। मैंने रूमाल ले लिया, उनको प्रणाम कर आशीर्वाद ले मंडप की ओर चल दिया। मेरे पहुँचते ही तिलक की सब सामग्री मंडप के समीप पहुँच गई, और बन्दूकें भी चलने लगीं। श्री पुजारी जी महाराज मेरा राजकुमार का शृंगार देखकर मुस्कराये और कहने लगे कि श्री किशोरी जी ने असम्भव को भी आज सम्भव ही कर डाला। उस समय तुरन्त नाऊ को बुला उसे आज्ञा दी कि भैया लक्ष्मीनिधि जी श्री मिथिला जी से तिलक की सामग्री लाये हैं, पहिले इनके चरण पखार कर इनको आसन पर विराजमान करा दो तभी तुम्हारा नेग मिलेगा। इतना सुनते ही नाऊ ने जल लाकर पहिले तो मेरे पाँव धोये, फिर मेरे बैठने के लिये एक पत्तल का आसन बिछा दिया। पाठको ! मेरे बराबर बड़भागी कौन हो सकता था, जिसका किरीट मुकुट स्वयं श्री किशोरी जी ने अपने ही करकमलों द्वारा धारण किया हो ? फिर इधर मेरे लिये एक पत्तल का आसन बिछाया जाना कितना अपमानजनक था उसको मेरा ही दिल जानता

है। भरे दरबार में एक नाऊ द्वारा अपना इस प्रकार का निरादर देख कर मुझे तो आवेश आ गया। मैंने नाऊ को बुरी तरह से फटकारा और पूछा कि अरे मूर्ख! क्या मेरे बैठने के लिये यही आसन लाया है? उसने उत्तर दिया हाँ सरकार! यह सुनकर मेरा क्रोध बढ़ा और जोश में आकर कहना पड़ा कि मुझे भारी प्रसन्नता थी कि हमारी लाड़ली बहिन श्री चक्रवर्ती राजकुमार के यहाँ रह कर सुख पायेगी, परन्तु आज पत्तल का आसन देखते ही मुझे भारी खेद हुआ, कि जिनके घर में बैठने के लिये आसन तक का ठिकाना नहीं, फिर वहाँ सुख कहाँ? मेरे सब विचार मिट्टी में मिल गये और मेरी आशा निराशा के रूप में बदल गई।

सज्जनो! मेरा यह सम्वाद सुनते ही दरबार में सन्नाटा छा गया और हजारों दर्शक मेरे मुख की ओर ताकने लगे। चारों तरफ से गुनगुनाहट के शब्द मेरे कानों में भी पड़ने लगे, कि अरे यह तो कर्वी (चित्रकूट) स्थान के अधिकारी हैं। और यह भी देखने-सुनने में आया कि श्री सिद्धकिशोरी जू के कथनानुसार प्रेमी भावुकजनों को मेरी यह भावना एवं राजसी शृंगार तो अच्छा लगा, परन्तु जो कोई भावुक तथा प्रेमी न थे, उनको जरूर मेरी यह भावना भी अच्छी न लगी और भेष भी खटका। तभी तो कोई-कोई कहने लगे कि साधु होकर भी साले ने कोट पाजामा पहन रक्खा है। उधर अटारी में से खड़ी-खड़ी श्री किशोरी जी मेरा चरित्र देख-सुन कर मुस्करा रही थीं। इधर मौक़ा पाकर श्री पुजारी जी ने मुझे समझाया कि हमारे यहाँ की विधि ही इसी प्रकार की है, और कोई बात नहीं है, आप चिन्ता न करें। आप की कृपा से श्री चक्रवर्ती महाराज के यहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं है, यहाँ आपकी श्री बहिन जी को कोई कष्ट न मिलेगा। इतना कह कर मानो मेरे क्रोध की अग्नि पर

पुजारी जी ने पानी डालते हुये उसे ठंडा कर दिया, तब तो मेरा क्रोध तुरन्त शान्त हो गया और मैंने अपने शब्दों को वापस ले लिया। इधर तिलक की विधि आरम्भ होने लगी। सर्व प्रथम मैंने अपने हाथों से दूल्हा भेष श्री राम जी के उन चरणकमलों को पखारा जिनके दर्शनों के लिये देवी-देवता एवं बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि तरसा करते हैं। उसके पश्चात् वस्त्र तथा आभूषण पहना कर द्रव्य से पूजन किया। अन्त में आरती एवं निछावर विधि हुई। वहाँ की अन्तिम विधि यह भी थी कि सार-बहनोई परस्पर हाथ से हाथ मिला कर गले लगें। मैंने दास भावना के अनुसार सरकारी चरण सेवा को छोड़ कर कभी उनके दूसरे अङ्ग को स्पर्श तक न किया था। यह केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा है जो सरकार से गले लगने और हाथ से हाथ मिलाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। उस समय मेरे स्नेह की धारा उमड़ उठी जिसको यह जड़ लेखनी लिखने से लाचार है! उत्सव समाप्त होने के पश्चात् ज्यों ही मैंने शृंगार कुंज में जा कर श्री किशोरी जी के चरण स्पर्श किये, तो वे मुस्करा कर बोलीं, कहो भैया जी! कहाँ गया आपका वह मौन व्रत और क्या हुआ वह रेशमी रूमाल जिससे मुँह छिपा कर गये थे। मैंने केवल यही उत्तर दिया कि आप की लीला अपरम्पार है, भला यह शक्ति किसमें है कि आपकी लीला को कोई जान सके! उस दिन से न जाने मेरी लाज कहाँ चली गई। श्री किशोरी जी की आज्ञानुसार मैं चार महीना तक उनकी सेवा में भी रहा देशाटन भी खूब हुआ। लेखनी नहीं मानती, इसलिये कुछ संक्षेप रूप से चार महीने की उन घटनाओं को भी लिखूँगा जोकि मेरे ही सामने हुई थीं। मैंने आज तक उनकी आज्ञाओं का पालन किया और जब तक उनकी इच्छा होगी भविष्य में भी पालन करता रहूँगा। दिव्य नाता हो जाने

से मेरा मन अब कभी सरकारों से चलायमान नहीं हो सकता ! श्री बिहौतीभवन के वर्तमान लीला स्वरूपों में भी मेरा पूर्ण आदर भाव है एवं स्नेह भी कुछ कम नहीं है। पहिले समाज में केवल युगल सरकार रहते थे। परन्तु इधर २० वर्ष से चार युगल अर्थात् आठ स्वरूप रहते हैं। मुझे इन सब की सेवा करने अथवा इनकी सीथ प्रसादी लेने में भी न तो कोई शर्म है, न संकोच, न ही कोई हिचक। किसी प्रकार की घृणा और हिचक तो तब हो जब कि नाता कच्चा हो जहाँ नाता अटल और अचल हो, वहाँ हिचक और ग्लानि कैसी ?

सज्जनो ! श्री सिद्धकिशोरी जू के लिए मेरा हृदय विचित्र प्रेमावेश में निरन्तर मग्न रहा करता है। कभी मिलने की मधुरता में मग्न, तो कभी विरह की व्याकुलता में व्यथित। क्या उनके उस समय का आनन्द एवं अनुपम सुख इस जड़ लेखनी द्वारा कागज पर लिखा जा सकता है ? कदापि नहीं। उनकी दयालुता और उदारता का कथन करना लेखक की साधारण बुद्धि से परे है। यों तो श्री किशोरी जी समस्त शुभ गुणों की भंडार थीं ही, परन्तु उनके उदारता गुण की याद आते ही उनकी मानसिक मूर्ति भी मेरे नेत्रों के सामने आ जाती है। जैसे चुम्बक लोहे को खींच लेता है, उसी प्रकार उनकी सरसता एवं सरलता भी हृदय को खींच लेती थी। किसी भी निर्धन या दुखी को आप देख लेतीं तो उसको धन, धान्य, वस्त्रादि से संतुष्ट किये बिना न मानती थीं। आप अपने ओढ़ने पहिनने के वस्त्र तक किसी भी याचक को याचना पर प्रसन्नता पूर्वक दे दिया करती थीं। चाहे मनुष्य में करोड़ों गुण क्यों न हों यदि उसमें उदारता नहीं, उसका हृदय कृपण है, तो उसके समस्त गुण व्यर्थ हो जाते हैं। कंजूसी तो एक दुर्गुण है, जैसे मनुष्य

सर्वाङ्ग सुन्दर हो और उसके मुख पर थोड़ा सा कुष्ट हो, तो जैसे थोड़ा सा कुष्ट सभी सौंदर्य को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार कृपणता भी सभी सद्गुणों पर पानी फेर देती है।

सज्जनो ! उनकी उदारता की एक दलसिंहसराय की घटना मुझे याद आ गई है। हम लोग जब दलसिंहसराय पहुँचे तो स्टेशन पर उतरते ही श्री युगल सरकार की अनुपम सुकुमारता एवं आभा को देख-देख कर सैकड़ों लोग जमा हो गये, मानो एक भारी मेला सा लग गया। कुछ प्रेमीजन तो दर्शन करते मात्र ही करुणा एवं प्रेम से पिघल गये, और मुझसे कहने लगे कि यह श्यामगौर दोनों सुकुमार तो आँखों में बिठलाने योग्य हैं, फिर आपने इनको लकड़ी की कुर्सियों पर कैसे बैठा रखा है। इनका शुभ नाम क्या है ? किस देश को अपने विछोह से व्यथित करके इस देश में किस बड़भागी के यहाँ पधारे हैं। यहाँ से किस देश के प्रेमी समाज के नेत्रों को सफल करने का विचार है, कृपया इनका सत्य-सत्य परिचय तो बतलाइये ?

सज्जनो ! मेरा उत्तर यह था, कि कौशल देश के श्री अयोध्या नगर से पधारे हैं। एक महारानी श्री कौशिल्या अम्बा जू के लाल हैं, तो दूसरी श्री सुनयना अम्बा जू की लली। श्याम वर्ण वाले तो मेरे प्रिय बहनोई श्री राम जी एवं गौर वर्ण वाली मेरी प्रिय लाड़ली बहिन श्री किशोरी जी हैं। मैं लक्ष्मीनिधि श्री किशोरी जी का भइया अपने परम आदरणीय पूज्य प्रातःस्मरणीय श्री विदेहराज पिता श्री जनकजी महाराज की आज्ञानुसार इनको अपने घर श्रीजनकपुर ले जा रहा हूँ। वहाँ हमारे पाहुन कृपा कर हमारे ही महलों में कुछ काल निवास करके सबको सुख देंगे। अब इस समय मार्ग का परिश्रम निवारणार्थ तथा आप सब प्रेमीजनों के नेत्रों को सफल बनाने की इच्छा से भक्त

श्री चन्द्रकला शरण जी के परमाग्रह एवं अनुरोध पर ही केवल दो दिन के लिये इनके पाहुने बनकर इन्हीं के सुन्दर बगीचे में निवास करेंगे। सबेरे से सन्ध्या तक कई प्रेमी लोग जो सरकार के आगमन की प्रतीक्षा में भूखे प्यासे स्टेशन पर पड़े थे, इतना सुनते ही उन सब की आँखों से प्रेम की वर्षा होने लगी और उसी वर्षा के जल से इन प्रेमीजनों ने श्री युगल सरकार के चरण कमल पखारे तथा आनन्द रस में स्वयं भींग गये। यहाँ तक कि किसी को शरीर की थकावट एवं भूख प्यास तक का ध्यान ही नहीं रहा। कुछ देर के बाद होश आने पर सब लोगों ने बाजे-गाजे के सहित पुष्पों की वर्षा करते हुये मोटर द्वारा आदरपूर्वक अपने ग्राम के बाहर ले जाकर, अपने ही बगीचे की कोठी में निवास स्थान दिया। चन्द्रकला शरण जी पुजारी जी के अनन्य प्रेमी श्रद्धालु शिष्य हैं। आपके ही प्रेम के कारण समाज को वहाँ दस बारह दिन तक रुकना पड़ा। तब आनन्द की खूब वर्षा हुई, जिसको वहाँ की प्रेमी जनता ने नेत्रों के प्यालों से छक-छक कर छवि सुधा का पान किया।

सज्जनो ! कई बार देखने में आया कि श्री सिद्धकिशोरी जी के सामने यदि कोई दीन पुरुष आ जाता तो आप उसके यथोचित कष्ट निवारण का प्रयत्न करतीं। आप में अपूर्व त्याग भी था। एक दिन एक दुखी जाड़े के मारे काँपता हुआ आपके दर्शनार्थ बगीचा में चला आया। आप को उसकी दीन दुखी दशा पर दया आ गई तो बहुमूल्य अपना दुशाला उतार कर उसको उढ़ा दिया, एवं औषधि के लिए भी दस रुपया नकद दे उसे भोजन कराके विदा कर दिया। अहा ! धन्य है आपकी उदारता, दयालुता एवं परोपकार को ! निस्वार्थ प्रेम एवं सेवा इसी को कहा जाता है।

(७६) श्री बिहौतीभवन में प्रधान विवाहोत्सव अगहन शु:० ५

को, कलेवा होकर छठ को होता है एवं चौथारी उत्सव के साथ-साथ भण्डारा भी प्रतिवर्ष अष्टमी को हुआ करता है। इस अवसर पर श्री पुजारी जी महाराज अपनी उदारता, प्रेम एवं त्याग का पूर्ण परिचय दिया करते हैं। पहिले तो प्रतिवर्ष चिट्ठी बाँट कर ही संत महन्तों को निमंत्रण दिया जाता था परन्तु इस वर्ष श्री सिद्धकिशोरी जी ने एक हजार मूर्ति के लिए सामग्री का प्रबंध हो जाने के पश्चात् ही श्री महाराज जी को मेरे ही सामने बाध्य किया कि आज से इस भण्डारा के लिये चिट्ठी द्वारा किसी को निमंत्रण न भेजा जावे। जो कोई भी सन्त, महन्त, अभ्यागत, अतिथि, सेवक, एवं कँगले आ जावें, उन सबको सादर प्रेमपूर्वक पंगत में ही बिठा कर समस्त सामग्री (भोग पदार्थ) से पूर्ण कराया जाय। इतना सुनते ही पुजारी जी कुछ संकुचित हुये। ऐसा न हो कि मूर्तियों के बढ़ जाने से सामग्री कम पड़ जाय। परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि यदि किसी का अपमान न हुआ तो सामान कदापि कम न पड़ेगा, किन्तु बच ही जायगा। और ठीक हुआ भी ऐसा ही !

सज्जनो ! एक हजार मूर्तियों के लिये सामग्री का प्रबन्ध होने पर लगभग चार हजार मूर्ति पंगत में जमा हो गये और अटूट खर्च होने पर भी सामान बच ही गया। मालपुआ तो इतना बचा जो चार दिन तक अटूट खर्च करने पर ही खतम हुआ। केवल भोजन ही नहीं, भोजन के पश्चात् सब को विदाई में भी किसी को थाल, किसी को लोटा, किसी को गिलास तो किसी को कटोरा, किसी को रामायण, तो किसी को छाता, किसी को खड़ाऊँ, किसी को चट्टी, किसी को अचला तो किसी को दुपट्टा, किसी को धोती तो किसी को चदरा, किसी को साफी तो किसी को माला झोरी, किसी को कुछ तो किसी को कुछ सब

संत महन्तों को बिदाई की वस्तु के साथ-साथ द्रव्य भी दिया गया। समस्त गरीब कंगले भूखे नंगों को भी बैठा कर ही भोजन से पूर्ण कराया गया। ऐसा कोई न था जो इस दरबार से खाली गया हो। श्री सिद्धकिशोरी जू के आशीर्वाद एवं आज्ञानुसार प्रति वर्ष इस प्रधान भंडारे में ऐसे ही हुआ करता है। सामान कभी कम नहीं पड़ता बल्कि बच ही जाता है, जिसको श्री पुजारी जी कई दिनों तक स्थान-स्थान में घूम कर स्वयं अपने ही हाथों से प्रसाद रूप में मालपुआ द्रव्य एवं वस्त्रादि वितरण किया करते हैं। श्री पुजारी जी पर तो श्री सिद्धकिशोरी जी की पूर्ण दया एवं असीम कृपा हो चुकी है। तभी तो आप किसी दूसरे की सहायता कभी नहीं चाहते। और सच भी है, दयानिधान की दया जिस किसी भी भाग्यशाली के ऊपर हो जाती है, तब वह दूसरे के सहारे की परवाह ही कब करता है ? लक्ष्मीपति जिसके स्वयं अपने हो गये, तो वह संसारी लक्ष्मी के झूठे विलासों को महत्व भी कब दे सकता है ?

(७७) किसी महात्मा ने बिहौतीभवन में आकर श्री सिद्ध-किशोरी जी को बाध्य किया कि हम से किसी वस्तु की सेवा स्वीकार की जावे, लाचार होकर श्री किशोरी जी ने उससे थोड़ा करेले का मुरब्बा लाने को कह दिया। वह फ़ैजाबाद से प्रयाग तब काशी होता खाली हाथ वापस आया, करेले का मुरब्बा उसे कहीं भी नहीं मिला तब श्री किशोरी जी ने मुझसे कहा। भइया जी ! आप ही करेले का मुरब्बा लाइये। मैंने निवेदन किया कि कहीं करेले का मुरब्बा भी होता है ? तो श्री किशोरी जी ने कहा हाँ, आप ही ने तो एक दिन हमको खिलाया था, मैंने उत्तर दिया, कि वह करेले का नहीं, परवल का मुरब्बा था, परन्तु श्रीकिशोरी जी का बार बार यही कथन था कि नहीं वह परवल का नहीं किन्तु करेले का ही मुरब्बा था। ज्योंही मैं उस परवल के मुरब्बे का

बर्तन उठा कर लाया तो क्या देखता हूँ कि उसमें करेले का ही मुरब्बा भरा है। श्री किशोरी जी ने उसका भोग लगाकर सब प्रेमियों को भी प्रसादी बाँटी तो वास्तव में वह करेला ही निकला। इस चमत्कार को देख सुन कर सब लोग दंग रह गये, और वह प्रेमी तो छक ही गया।

(७८) एक दिन श्री युगल सरकार बिहौती मन्दिर के बाहर आँगन में टहल रहे थे कि इतने में एक संत आये और खड़ाऊँ उतार कर मन्दिर में दर्शनार्थ चले गये, वापस लौट कर ज्योंही वह खड़ाऊँ पहनने लगे, तब श्री किशोरी जी ने सन्त जी से पूछा कि यह सुन्दर खड़ाऊँ कहाँ की बनी है। उत्तर मिला कि हमने इनको पीलीभीत से अपने गुरु जी के निमित्त खरीदा था, और गुरुजी ने इनको कुछ दिन पहन कर प्रसादी हमें दे दी हैं। बस इतना सुनते ही श्री किशोरी जू को भारी दुख हुआ, महात्मा जी से पूछने लगीं कि चेला के लिये गुरु की प्रसादी खड़ाऊँ को पाँवों में पहिनना किस शास्त्र में लिखा है? शिष्य का धर्म है कि अपने गुरु की पादुका की प्रतिदिन सेवा पूजा करे और उनका चरणामृत लेवे। देखिये! श्री भरत जी महाराज ने श्री रामजी महाराज की पादुकाओं का कितना भारी आदर सत्कार किया था, वह तो अपने भाई की पादुका को शिर पर रख कर चित्रकूट से लाये थे, परन्तु कितने दुख का विषय है कि आप अपने गुरुदेव की पादुका पाँवों में पहिने घूमते फिरते हैं। बस! इतना सुनते ही महात्मा जी निरुत्तर होकर लज्जित भी हुये और श्री किशोरी जी के चरणों में गिर कर अपराध की क्षमा माँगी। श्री सिद्धकिशोरी जी की इस प्रकार की गुरुनिष्ठा पर सब लोग प्रसन्न हुये और उनके सुन्दर भाव तथा गुरुभक्ति की सराहना करने लगे।

पाठको! मुझे इस समय एक घटना की याद आ गई है,

श्री पुजारीजी महाराज कहा करते हैं कि मैं एक समय श्री युगल सरकार के समीप मन्दिर में बैठा कुछ सत्संग वार्ता कर रहा था, इतने में कोई भला आदमी मेरे पास आया, और कुछ वार्तालाप करने लगा, वार्तालाप होते-होते उसने हमको कुछ तर्कनापूर्वक कठोर शब्दों में धमकी भी दे डाली। यद्यपि १०-१२ अन्य प्रेमी लोग भी उस समय वहाँ बैठे थे, मगर किसी की हिम्मत न पड़ी कि उस भले आदमी को चुप करा दे, परन्तु धन्य है, श्री सिद्धकिशोरी जी की गुरुनिष्ठा, प्रेम, भक्ति, साहस एवं निडरपने को। आपका मुखारविन्द उस समय लाल-लाल हो गया, हाथ में एक डंडा उठा कर उस आदमी को डाँटने लगीं कि बस चुप हो जाओ, अगर तुमने फिर हमारे श्री गुरुमहाराज को हमारे सामने धमकी दी, अथवा कोई अपशब्द कहा, तो इसी डंडा से तुम्हारी खोपड़ी फोड़ दूँगी। श्री महाराज जी ने तुरन्त श्री किशोरी जी को तो अपनी गोदी में ले लिया, और वह भला आदमी लज्जित होकर चुपके से खिसक गया। इनके तेज व प्रभाव के सामने उसकी दाल न गली, और बोलती बन्द हो गई।

(७६) श्री भण्डारा उत्सव के दूसरे ही दिन एक साधु (श्री मनीरामदास जी विद्यार्थी श्री जयदेव वैष्णव संस्कृत कालेज कर्वी (चित्रकूट) मुझ (लेखक) से श्री बिहौतीभवन में आकर मिले। मैं उनसे स्थान का एवं श्री गुरुमहाराज जी का कुशल समाचार पूछ ही रहा था, कि श्री किशोरी जी ने मुझसे पूछा भैया जी! यह साधु कहाँ रहते हैं? मैंने उत्तर दिया कि यह हमारे ही स्थानीय कालेज के विद्यार्थी हैं। तब श्री किशोरी जी ने उनको कुछ मालपुआ जलपान करने को देकर कुछ वस्त्र भी उनको देने के लिये मुझसे पूछा, मैंने निवेदन किया जो आप की इच्छा। श्री किशोरी जी ने इनको अपने शृंगार

का प्रसादी लहँगा देने की इच्छा प्रकट की, मगर मेरा निवेदन था कि यह साधु केवल विद्यार्थी हैं, यह लीलास्वरूपों के भावुक या प्रेमी नहीं हैं, कहीं ऐसा न हो कि लहँगे का तिरस्कार कर दें, अथवा आप के प्रति कोई कटु-शब्द का प्रयोग ही कर बैठें, इसलिये इसको कोई दूसरा वस्त्र दे दिया जाय। परन्तु अन्तर्यामिनी श्री किशोरी जी ने कहा भैया जी ! जितनी प्रसन्नता इनको लहँगे के मिलने से होगी, उतनी खुशी किसी दूसरे वस्त्र से न होगी। इतना कहकर आप अन्दर चली गईं, दो बीड़ा पान एवं एक अपना प्रसादी लहँगा लाकर उनको दे ही तो दिया। न जाने उस लहँगा में कोई आकर्षण था, अथवा सरकारी स्पर्श में ही कोई जादू टोना था, कि तुरन्त महात्मा जी उन के चरणों में गिर पड़े, चरण स्पर्श करके उठते ही लहँगे को अपने गले में डाल खूब नाचने लगे, इधर तो उनकी अश्रुधारा चल रही थी, उधर लहँगे को अपनी आँखों पर लगा-लगा कर अपने भाग्य की सराहना करते हुये कह रहे थे अहो-भाग्य ! जो आज श्री किशोरी जी ने अपना प्रसादी लहँगा देकर अपनी अन्तरंगसखी बनाना हमको स्वीकार किया है। उस समय उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न थी, इसी प्रकार उछलते कूदते प्रसन्न होते थोड़ी देर के बाद महात्मा जी ने उस लहँगा को तो लपेट कर बगल में दबाया, और गोलाघाट के महन्त श्री पुरुषोत्तमशरण जी के समीप तुरन्त जा पहुँचे। यहाँ का सम्पूर्ण वृतान्त उनसे कह सुनाने के बाद प्रार्थना की, आप रसिक आचार्य हैं, हमको सखी भावना का सम्बन्ध-पत्र शीघ्र देने की कृपा कर, कारण कि श्री किशोरी जी का यह प्रसादी लहँगा इस बात का सूचक है कि उन्होंने हमको अपनी अन्तरङ्ग सखी बनाना स्वीकार कर लिया है, यदि ऐसा न होता तो हमको अपना लहँगा क्यों देतीं ? कोई दूसरा ही वस्त्र क्यों न

दे देतीं ? महात्मा जी की ऐसी सुन्दर भावना एवं उत्कट अभि-लाषा को टाल न सके, इसलिये श्री महन्त जी ने सखी भावना का सम्बन्ध-पत्र उनको दे ही तो दिया। दूसरे दिन वह खुशी-खुशी बिहौतीभवन में आये, श्री किशोरी जी के चरणों का चरणामृत पान करने के पश्चात् केवल एक दिन भोजन भी किया, फिर उस दिन से आज तक उनका दर्शन मुझे नहीं हुआ। भगवान की लीला भगवान ही जानें, न जाने इसमें भी क्या रहस्य भरा था।

(८०) एक दिन श्री सीतामढ़ी के श्री अयोध्या बाबू मुख्तार-अदालत एवं पटना के स्पीकर साहब तथा पं० दुर्गादत्त जी बिहौतीभवन में श्री किशोरी जी के समीप बैठे हुये कुछ वार्ता-लाप कर रहे थे। इतने में मैं भी (लेखक) वहाँ पहुँच गया। सत्संग हो ही रहा था कि अकस्मात् श्री किशोरी जी उठ खड़ी हुई और घबरा कर कहने लगीं; भैया जी, भइया जी! आपका जल का लोटा कहाँ है ? जल्दी लाओ। मैंने सोचा कि इनको अधिक प्यास लगी है, इसलिये उतावली हो रही हैं, मैं भी तुरन्त उठा और जल के लोटे के साथ-साथ गिलास भी ले आया। सरजू जल भरा लोटा मेरे हाथ से छीनकर समस्त जल धरती पर गिरा दिया, और खाली लोटा मेरे सामने रख कर मन्द-मन्द मुस्कराने भी लगीं। मैंने दिल में अनुमान किया कि श्री किशोरी जी ने मुझे छकाने के लिये ही आज यह हँसी की है, इधर मैं भी विनोदार्थ उनसे मचल कर कहने लगा कि बहिन जी! आज आपने हँसी करके मेरा समस्त सरयू जल व्यर्थ में गिरा दिया है; इसलिये मैं आज भोजन नहीं करूँगा परन्तु श्री किशोरी जी ने मुझे प्रेमपूर्वक पुचकारते हुये कहा भइया जी! मैंने व्यर्थ में आपका जल नहीं गिराया; केवल परमार्थ में ही इसको खर्च किया है, इसमें आपको भी पुण्य होगा। देखिये! अयोध्या बाबू के मकान पर उनकी पूजन की धूप से अग्नि

सुलग रही थी, यदि मैं पानी न डालती तो इनको बहुत हानि पहुँचती; अभी तो केवल एक ही कपड़ा जला है। यह सुनकर सबको अचम्भा हुआ, अयोध्या बाबू घटना स्थल पर आये, तो देखा कि वास्तव में बात सच्ची है। तभी से वह श्री किशोरी जी को अपना सर्वस्व और प्राण ही मानने लगे थे और कई बार सीतामढ़ी में भी सरकारों को ले गये। अपने ही क्वार्टर में आठ दस दिन रख कर खूब आनन्द एवं सुख लिया। श्री सिद्ध-किशोरी जी के इस प्रकार के अनेक चमत्कारों को देख सुनकर लोगों को इनमें अटूट श्रद्धा होने लगी। सीतामढ़ी में अच्छे-अच्छे हाकिम एवं अहलकारों को माला झोली गले में डाले भजन करते मैंने स्वयं देखा था। यह सब प्रेमीजन संध्या समय प्रतिदिन कीर्तन भवन में जाकर कीर्तन भजन किया करते थे।

(८१) भंडारा उत्सव समाप्त होने के बाद निमंत्रण में बाहर जाने के लिये मुहूर्त निकाला जा रहा था, तो श्री सिद्धकिशोरी जी ने तुरन्त मना करते हुये श्री पुजारी महाराज से कहा कि श्री हजारा बाबा जो कई दिनों से बीमार पड़े हैं, वह केवल तीन दिन के ही मेहमान हैं, आज से निश्चय तीसरे दिन यह परलोक की यात्रा करेंगे, इसलिये पहिले इनकी यात्रा होने दें। तब कहीं की यात्रा के लिये मुहूर्त निकालना। श्री पुजारी जी इनके कई चमत्कार देख सुन चुके थे, इसलिये इनका कहना मान कर यात्रा स्थगित कर दी। ठीक तीसरे ही दिन महात्मा जी परलोक सिधार ही तो गये। इसको कहते हैं अन्तर्यामीपना एवं सिद्ध चमत्कार।

(८२) बिहौती समाज श्री अयोध्या जी से चलकर जिस समय कानपुर स्टेशन पर पहुँचा, उस समय के स्वागत का वर्णन करना कठिन है। गाजे-बाजे एवं अनेक प्रकार की सवारियों और प्रेमियों द्वारा अगवानी होकर स्वागत हुआ।

बादशाही नाका में सेठ श्री हुलासीराम, रामदयाल जी के मन्दिर में आठ दस दिन तक अष्टयामविधि अनुसार ही श्री विवाह कलेवा, झाँकी उत्सव बड़े ही समारोह के साथ हुये। स्वामी श्री सत्याशरण जी एवं श्री धर्मभगवान जी, श्री अवध से कुछ पहिले ही कानपुर में पहुँच चुके थे; आपके ही सुप्रबन्ध से यह महोत्सव सानन्द एवं निर्विघ्न समाप्त हुआ। सेठ जी के सब लड़कों ने अपने-अपने घरों में ले जाकर बड़े उत्साह, श्रद्धा और प्रेम से समाज का आदर सत्कार एवं मान सम्मान किया। पाँव पुजाई एवं बिदाई के समय तो अनेक प्रकार के बहुमूल्य वस्त्रों एवं रजतपात्रों से सेठ जी के समस्त परिवार ने श्री युगल सरकार की सेवा करते हुये अपनी प्रेमाभक्ति एवं उदारता का पूर्ण परिचय दिया।

इस मन्दिर के अतिरिक्त शहर में लक्ष्मीनारायण जी पाँडे के यहाँ भी विवाह-कलेवा उत्सव बड़े समारोह के साथ हुआ। इन लोगों ने भी तन-मन-धन से सरकारी सेवा करके अपने प्रेम व भक्ति का परिचय दिया। श्री युगल सरकार की अनुपम एवं मधुर रंगीली झाँकी तथा विवाह-उत्सव का दर्शन करके कानपुर की जनता तो कृतकृत्य एवं निहाल हो गई।

कानपुर में एक दिन झाँकी होते समय श्री सिद्धकिशोरी जी ने अकस्मात् मुझ (लेखक) से कहा, भइया जी ! आपके स्थान कर्वी में एक बूढ़े महात्मा तपस्वी सियारामदास जी की (जिनकी आयु १०० वर्ष से अधिक है) कल मृत्यु होने वाली है, और आपको आपके श्री गुरुमहाराज जी बुलायेंगे, परन्तु आपका तो अन्न-जल यहाँ का लिखा है, तब वहाँ कैसे जा सकेंगे। ठीक हुआ भी ऐसे ही ! महात्मा जी परलोक भी सिधार गये। श्री गुरु महाराज जी का पत्र भी श्री स्वामी जी के नाम से आया, कि हमारे शिष्य चिरंजीव रामगोपालदास को शीघ्र भिजवा दिया

जाये, महात्मा जी की तेरही तिथि पर कुछ भंडारा करने का विचार है, इसलिये दो गाँठ कपड़ा मारकीन भी यहाँ से लेना आवेगा। देखिये सज्जनो! श्री किशोरी जी के कथनानुसार मैं कर्वी स्थान में भी नहीं गया। वहाँ से दूसरा आदमी आकर कानपुर से कपड़ा खरीद कर ले गया, मेरा अन्न-जल यहाँ का था इसलिये गुरु महाराज जी की आज्ञा का पालन भी न कर सका और सरकारी सेवा में रह कर यहीं आनन्द लेता रहा! देखिये श्री किशोरी जी की भविष्यवाणी कितनी सच्ची निकली।

(८३) फतेहपुर अन्तर्गत श्रीसीताराम मन्दिर गुरुधौली (औंग) के भावुक महन्त श्री सियारामशरण जी महाराज के निमन्त्रण पर जिस समय बिहौती समाज औंग स्टेशन पर पहुँचा उस समय श्री महन्त जी ने कई प्रेमियों के सहित उत्साहपूर्वक गाजे-बाजे द्वारा अगवानी की। गुरुधौली जाने के लिये कई सवारियों के साथ-साथ रोशनी का भी बहुत ही अच्छा प्रबन्ध था, वहाँ पहुँचते ही द्वारचार विधि मनाते हुये श्री राम जी की बारात को जनवासा में विश्राम दिया, एवं ब्यारू का भी बहुत ही सुन्दर प्रबन्ध किया गया। दूसरे दिन बारात भी बड़ी धूमधाम से निकली। तीसरे दिन विवाहोत्सव के समय मेरा (लेखक का) लक्ष्मीनिधि की भावना का राजसी शृंगार हुआ देखकर महन्त जी महाराज के मन में भी दूल्हा सरकार के चरणों को पखारने की उत्कट अभिलाषा जग उठी, तभी तो आप भी श्री जनक जी महाराज की भावना से राजसी शृंगार धारण करके दरबार में उपस्थित हो गये, इधर मिथिलावासियों का यह रंग-ढंग और ठाट-बाट देख कर भला चक्रवर्ती जी महाराज कब चुप बैठ सकते थे? आप भी तुरन्त राजसी शृंगार द्वारा सुसज्जित होकर

अपने अवधवासी बरातियों के दरबार में आ पहुँचे। अब विवाह की विधि प्रारम्भ होते ही परमानन्द की वर्षा होने लगी, जिस किसी ने दर्शन किया, निहाल हो गया।

श्री धर्मभगवान जी (जो वहाँ उपस्थित थे) का कथन है, कि गुरुधौली में एक पं० बाबू राम जी हैं, जो कि श्री लीला-बिहारी स्वरूपों के प्रेमी नहीं हैं। श्री विवाह उत्सव का समाचार पाते ही आप के मन में भारी शंका उत्पन्न हुई कि लड़कों से लड़कों का विवाह कैसा ? तुरन्त घर से मन्दिर की ओर चल दिये, रास्ते में आप ने अपने मन ही मन में यह विचार लिया था, कि आज येन केन प्रकारेण उत्सव के रंग में भंग कर दूँगा, और लीला करने वालों से पूछूँगा कि इस प्रकार के विवाह का किस शास्त्र में प्रमाण है। ज्यों ही पंडित जी मन्दिर में पहुँचे, तुरन्त श्री सिद्धकिशोरी जी ने उनको अपने समीप बुलवा कर पहिले तो एक बीड़ा पान उन को दिया फिर कहा पंडित जी ज़रा सावधान होकर बैठ जावें मैं अभी-अभी आप को यह प्रमाण दिखलाती हूँ, कि लड़कों से लड़कों का विवाह होना किस शास्त्र में लिखा है। बस इतना सुनते ही पंडित जी के होश गुम हो गये, लज्जित होकर श्री किशोरी जी के चरण पकड़ते हुये क्षमा भी माँगने लगे !

पण्डित जी का कथन था कि मैंने केवल अपने ही मन में घर से चलते समय इस बात की शंका की थी, किसी से न इसकी चर्चा की; और न किसी से सलाह ही ली; मेरे यहाँ आते ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने जब मेरे मन की बात को जान लिया; तब तो मुझे मुक्तकंठ से यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यह बालक नहीं; साक्षात् श्री किशोरी जी हैं; जो कि बालक के भेष में लीला कर रही हैं, इसलिये मैं भी इनको श्री सिद्ध-

किशोरी जी ही कहूँगा। दूसरे दिन कलेवा उत्सव में यह पण्डित जी तो सर्वप्रथम ही आ पहुँचे, दण्डवत्-प्रणाम कर आनन्द-पूर्वक उत्सव देखने लगे, पहिले जिन स्वरूपों की सीथ प्रसादी को पं० जी लड़कों की जूठन कह कर उससे घृणा किया करते थे, आज उसी जूठन को श्री युगल सरकार का महाप्रसाद कहते नहीं अघाते। श्री सिद्धकिशोरी जी के एक बीड़ा पान ने आज वह करामात दिखाई, पं० जी की बुद्धि ने ऐसा पल्टा खाया कि जो पहिले लीलास्वरूपों के प्रेमी न थे आज वही इनके प्रमी भावुकभक्त बन गये।

गुरुधौली से थोड़ी दूर श्री गंगा जी के तट पर प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थस्थान शिवराजपुर (आदि काशी) भी है। यहाँ पर मीरा के प्रभु गिरधर नागर जी का प्राचीन मन्दिर है, जिसमें भगवान की शालिग्रामी शिला पर अष्टभुजी मूर्ति की सुन्दर झाँकी है। वहाँ के प्राचीन एक रईस घराने के दोनों भाई भक्तवर श्री प्रियाशरण जी एवं भक्त ललिता प्रसाद जी भी प्रति-दिन गुरुधौली में अपने प्रेमी समाज के सहित दर्शनार्थ आते रहे, आप दोनों भ्राता भगवत्-भागवत् एवं श्री लीलाबिहारी स्वरूपों के भी परम श्रद्धालु प्रेमी भक्त हैं, इस महोत्सव में आप ने अपनी सेवा द्वारा अपने प्रेमभक्ति का पूर्ण परिचय दिया था। आप दोनों भ्राता अभी भी विद्यमान हैं, आपके द्वार पर पहुँचे हुये कोई भी अतिथि अभ्यागत एवं साधु-सन्त कभी खाली नहीं जाते, आप बड़े उत्साह से प्रेमपूर्वक साधु सेवा करते हुये उनका मान-सम्मान भी करते हैं। आप को सत्संगति बहुत प्रिय है, तभी तो साधुओं के दर्शनमात्र से आप कृतकृत्य हो जाते हैं, आपके पुरखों द्वारा निर्माण किया हुआ भगवान श्री राधाकृष्ण जी महाराज का गंगा तट पर एक विशाल मन्दिर भी है, जिसमें विधिवत् वैष्णव ब्राह्मणों द्वारा निरन्तर

सेवा पूजा होती है, एवं बड़े समारोह के साथ भगवान के उत्सव समइया भी मनाये जाते हैं। आपका समस्त परिवार भी बाल बच्चे तक वैष्णव हैं एवं सभी भगवान के श्रद्धालु भक्त हैं। प्रतिदिन भगवान के सम्मुख बाजा यन्त्रों द्वारा भजन-गायन एवं भगवन्नाम कीर्तन भी किया करते हैं। मुझ (लेखक) को भी वहाँ तीन-चार बार जा कर दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

(८४) गुरुधौली से लौट कर बिहौनी समाज को फर्रुखाबाद के निमन्त्रण में जाना पड़ा। पं० श्री शीतलदीन जी उस समय फर्रुखाबाद में स्कूल मास्टर थे। जिस प्रकार आप भगवन्-भागवत के अनन्य उपासक एवं लीलाबिहारी स्वरूपों के भी कट्टर प्रेमी हैं, उसी प्रकार वहाँ के बाबू भगौतीप्रसाद वकील भी हैं। आप दोनों के आग्रह एवं निमन्त्रण पर ही समाज को फर्रुखाबाद जाना पड़ा था। सात-आठ दिन तक वहाँ श्री विवाह-कलेवा उत्सव एवं अपूर्व झाँकियाँ भी हुईं। श्री राम जी की बारात का दृश्य भी अनुपम एवं अद्वितीय था। जिन-जिन लोगों ने दर्शन किये मुग्ध हो गये। वहाँ के कई वृद्ध लोगों का कथन था, कि हमने अपनी उम्र में आज तक न तो कभी ऐसी बारात देखी है, और न ही दूल्हा स्वरूपों की ऐसी मधुर मनोहर सुन्दर झाँकी का ही अवलोकन किया है। बारात के समय हिन्दुओं ने श्री युगल सरकार को फूलों के अनेक गजरे पहिनाये एवं पुष्पों की खूब वर्षा भी की, यह तो उनका पुनीत कर्तव्य एवं धर्म ही था, परन्तु उस शुभ अवसर पर वहाँ की मुसलिम जनता भी पीछे नहीं रही, कई मुसल्मानों को भी फूलों की मालायें लाते एवं पुष्पों की वर्षा करते हुये देखा गया था।

पं० शीतलदीन जी का कथन है कि जैसे स्वाति जल बूँदों का पान करने के लिये समुद्र की सीपियाँ मुख खोल देती हैं

उसी प्रकार श्री सिद्धकिशोरी जी का वचनामृत पान करने के निमित्त प्रेमी लोग भी अपने श्रवण सम्पुटों को खोल कर अपलक नेत्रों से श्री युगल सरकार की ओर निहारा करते थे, अन्त तक वह वेचारे अतृप्त ही रहे, उनको तृप्ति नहीं हुई।

फरुखाबाद की एक घटना इस प्रकार है, जिस मुकाम पर सरकार ठहरे हुये थे; वहाँ से श्री गंगा जी ६ मील की दूरी पर थीं। एक दिन श्री युगल सरकार की प्रबल इच्छा श्री गंगा स्नान के निमित्त हुई तो सवारी के लिये प्रेमी लोग पूछने लगे, श्री किशोरी जी ने तो एक्का ही पसन्द किया, परन्तु श्री राम जी मोटर के लिये चाहना करने लगे। श्री राम जी का कथन था कि एक्के से जाने में देरी होगी, परन्तु श्री किशोरी जी का कथन था कि इस एक्के की बराबरी मोटर न कर सकेगी। दूसरे दिन प्रात:काल के लिये श्री किशोरी जी ने तो एक्के के मालिक (सेठ जी) को एंक्का भेजने के लिये कहा; एवं श्री राम जी ने एक मोटर के मालिक को मोटर भेजने के लिये। प्रात:काल सर्व प्रथम एक्का ही पहुँचा, उसी पर श्री युगल सरकार, श्रृंगारी जी, एवं मैं (लेखक) बैठ कर श्री गंगा स्नान के हेतु गये। ज्यों ही एक्का चला त्यों ही पीछे से मोटर ड्राइवर भूँ-भूँ करता अपनी मोटर को एक्का के समीप लाने के कई उपाय रचे, परन्तु एक्का के समीप वह मोटर को नहीं ला सका; उसकी मोटर एक्का से लगभग तीन सौ गज पीछे ही रही।

रास्ते में यद्यपि एक विचित्र घटना यह भी हो गई थी कि एक्का का कोचवान (जब कि घोड़ा बहुत तेजी से जा रहा था) अकस्मात् एक्का से नीचे गिर पड़ा, वह कूद कर फिर बैठ गया, उसको कोई चोट भी नहीं लगी और सबसे पहले गंगा जी पर

वही एका पहुँचा। उसके बाद ही मोटर पहुँची। देखिये श्री किशोरी जी के वचन में कितनी भारी शक्ति थी, कितनी सत्यता थी कि मोटर इस एक्के की बराबरी न कर सकेगी।

(८५) श्री बिहौती समाज फर्रुखाबाद से प्रस्थान करके मुजफ्फरपुर पहुँचा। पंडित रघुवंश जी शुक्ला हेड क्लर्क डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने (जो कि स्टेशन के समीप ही मकान में रहते थे और श्री किशोरी जी के अनन्य उपासक एवं श्रद्धालु प्रेमी भी थे) ज्योंही सुना कि श्री युगल सरकार पधारे हैं, स्टेशन पर नंगे सिर, नंगे पाँव दौड़े-दौड़े आये, और विह्वल होकर सरकारी चरण पकड़ रोने लगे। सरकार ने उनको उठाया एवं सान्त्वना दी, तब वह अपने मकान पर ले गये। वहाँ दो दिन झाँकी होने के पश्चात् हम लोग लहेरिया सराय चले गये। उस प्रान्त के प्रेमीजनों को दर्शन देते दिलाते समाज श्री अयोध्या जी वापस पहुँचा। वहाँ से मैं भी श्री युगल सरकार से बिदा होकर कर्वी (चित्रकूट) अपने स्थान पहुँचा, तो मेरे पास शुक्ला जी की कुछ अंग्रेजी चिट्ठियाँ पहुँचीं, जिससे मालूम हुआ कि वह श्री सिद्धकिशोरी जी के हाथों बेदाम बिक चुके हैं। उन्होंने तो किशोरी जी के विछोह में दुखी होकर अपनी नौकरी से भी त्याग पत्र दे दिया था, मेरे पत्र व्यवहार द्वारा बहुत कुछ समझाने पर (कि घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है, तुम अपनी निष्काम भक्ति किये जाओ। श्री युगल सरकार आपके प्रेम से खुश हैं, तुम विश्वास रखो, यदि तुम्हारा सच्चा और दृढ़ प्रेम होगा, तो सरकार को आपके प्रेमपाश में बँध कर अवश्य आपके समीप पहुँच कर दर्शन देना ही पड़ेगा) उन्होंने अपना चार्ज लिया, और काम तो करने लगे परन्तु रात दिन श्री सिद्धकिशोरी जी के दर्शनों की लालसा उन्हें परेशान और व्याकुल करने लगी।

सज्जनो ! सच्ची लगन क्या नहीं कर सकती ? शुक्ला जी की सच्ची लगन (प्रेम के चुम्बक) ने कुछ ही दिनों के बाद श्री युगल सरकार को अपनी ओर खींच ही तो लिया (उनका इस विषय का एक अंग्रेजी पत्र मेरे पास भी आया था) सरकारी दर्शन करके वह इतने प्रसन्न हुये, इतने मग्न (निहाल) हुये कि उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। वह खुशी के मारे फिर संभल भी नहीं सके। जिस प्रकार अत्यन्त ग़मी, मनुष्य की मृत्यु का कारण बन जाती है। उसी प्रकार अधिक प्रसन्नता भी शुक्ला जी की मृत्यु का कारण बन गई। श्री सिद्धकिशोरी जी के अधिक बिछोह के कारण श्री शुक्ला जी उनकी स्मृति में घड़ियाँ गिनते-गिनते परलोक सिधार गये, और दिव्य लोक में श्री सिद्धकिशोरी जी के चरणों में पहुँच कर उनकी सेवा के अधिकारी बने।

(८६) भैरोंगंज (चम्पारन) स्टेशन के समीप ही एक नड्ढा ग्राम है। ग्राम में जाते समय पुजारी जी ने हम लोगों को रास्ते में एक तालाब दिखलाया, जिसका जल बहुत ही गन्दा होकर उस पर काई भी जम गई थी। श्री युगल सरकार को भी समझा दिया कि भूल से भी इस जल को कभी न पीना, नहीं तो बीमार हो जाओगे। श्री सिद्धकिशोरी जी को बहुत प्यास लगी थी, सब की आँख बचाकर उसी तालाब का जल पी लिया। मुक़ाम पर पहुँचते ही सेवक लोग मीठे कुएँ का जल भर लाये। सबने हाँथ-पाँव धोये, श्रीराम जी ने तो उसे प्रसन्नतापूर्वक पिया, परन्तु श्री किशोरी जी ने उस जल के केवल दो घूँट पीकर कहा, कि यह जल अच्छा नहीं है इस जल से तो उसी तालाब का जल बहुत ठंडा और मीठा भी है। पुजारी जी इतना सुनकर बहुत दुखी हुये, परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी के बार-बार आग्रह करने पर कि उस तालाब का जल इस कुएँ के जल से अधिक

ठंडा एवं मीठा भी है, तब तो सब को भारी अचम्भा हुआ, वहाँ जाकर देखने पर वास्तव में वह जल स्वच्छ प्रतीत हुआ, और उस समय उस पर काई भी नज़र नहीं आई। जब कुछ प्रेमियों ने उस जल को पिया, तो बहुत ही ठंडा एवं मीठा लगा। तब से ग्राम के सभी लोग उसी तालाब का जल पीते हैं। धन्य है, श्री किशोरी जी को जिन्होंने अपनी प्यास बुझाने के निमित्त अपने हस्त-कमल के स्पर्शमात्र से उस गन्दे जल को भी गंगावत् सुन्दर एवं स्वादिष्ट बनाकर जनता का भारी उपकार किया। आपके स्पर्श गुण की जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम ही है।

(८७) पाठको! कपड़धीका ग्राम भी भैरोगंज स्टेशन के समीप ही है, सन् १९३७ में जब बिहौती समाज वहाँ पहुँचा तो विवाह-कलेवा उत्सव एक कच्चे फूस के मण्डप में हुआ, और हम लोगों के रहने के निमित्त भी एक कच्चा फूस का ही मकान मिला। स्वाभाविक मैंने श्री किशोरी जी से कह दिया था कि यदि यहाँ भी पक्का विवाह मण्डप बन जाता तो बहुत ही अच्छा होता, तुरन्त श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया, भैया जी! कुछ ही दिनों के बाद आप लोग यहाँ पक्का मन्दिर (श्री सीताराम जी का) देखेंगे, परन्तु मुझे जल्दी चले जाना है, इसलिये मैं न देख सकूँगी। सचमुच वहाँ श्री सीताराम जी का पक्का मन्दिर बन गया जिसका अधिकार उस प्रेमीभक्त ने श्री पुजारी जी महाराज को सौंप दिया है। मुझे भी तीन बार उस मन्दिर को देखने का अवसर मिला। परन्तु दुःख इस बात का है, कि श्री सिद्ध: किशोरी जू अपने कथनानुसार अपने असली घर (साकेत धाम) को चली गई, और फिर दृश्यस्वरूप से वहाँ का दर्शन नहीं कर सकी।

(८८) बहावल (चम्पारन) में बिहौती समाज द्वारा वहाँ प्रेमी जनता ने आठ दस दिन तक श्री विवाह-कलेवा तथा झाँकियों का

आनन्द लूटते हुये अपनी शक्ति से भी अधिक सेवा करके भारी श्रद्धा प्रेम दरषा अपने प्रेम का भी पूर्ण परिचय दिया। प्रेमियों की इस प्रकार की उदारता को देख कर मैंने श्री किशोरी जी से निवेदन किया कि जिस प्रकार यहाँ की जनता ने दिल खोल कर प्रेम से सेवा की है, यदि यहाँ रहने का मकान एवं विवाह मंडप भी घास फूस का न रह कर पक्का बन जाता, तब तो सोने में सुगन्ध हो जाता। इतना सुनते ही श्री किशोरी जू ने मुसकाते हुये मुझसे कहा भैया जी! दो साल के भीतर-भीतर यहाँ इतना सुन्दर और विशाल मन्दिर तथा माड़व बनेगा कि उसके पटतर केवल श्री अयोध्या जी को छोड़ कर किसी दूसरी जगह न होगा। इसीमें मन्दिर, इसी में श्रृंगार घर, विवाहमंडप, भंडार, कोठार, कूप, फुलवारी, गौशाला सब कुछ इसीमें होगा। आप लोग कई बार इसको देखेंगे परन्तु मैं फिर यहाँ न आ सकूँगी मुझे जल्दी अपने घर (साकेत धाम) चले जाना है। यद्यपि उस समय मैंने कहा कि ऐसा शब्द आप न कहें हमको सुन कर अति दुख होता है; तब उत्तर मिला, कि जो बात यथार्थ होने वाली हो, तो उसके कहने में दोष ही क्या है। सज्जनो! ठीक श्री किशोरी जी के कथनानुसार मन्दिर, उनके पश्चात् ही बन कर तैयार हुआ, उसमें श्री सीताराम जी के अतिरिक्त श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट का भी प्रतिदिन पूजन होकर भोग लगता है। मेरे ख्याल में इस समय यह मन्दिर पचीस तीस हजार रुपया की लागत से कम का न होगा। जब उसमें बड़े-बड़े शीशे (दर्पण) लगा कर उसे सजाया जाता है तब तो वह शीशमहल के सदृश ही प्रतीत होने लगता है। उसी में मन्दिर, उसी में निवासस्थान, श्रृंगार-कुंज, रसोइ भवन कोठार, फुलवारी एवं कूप इत्यादि भी हैं। मन्दिर में पुजारी रसोइया भगवान की सेवा पूजा के लिए रहते हैं। आगन्तुक अभ्यागत,

अतिथि, साधु संत का सेवा-सत्कार भी प्रेमपूर्वक होता ही है। इस मन्दिर के प्रबन्धक इस समय मुन्शी श्री राधामोहन प्रसाद जी (श्री पुजारी जी महाराज के लँगोटिया यार) हैं। जिनका भगवत्, भागवत् तथा लीलाबिहारी स्वरूपों में भाव, भक्ति एवं प्रेम सराहनीय है, आप के एक रजिस्ट्री इकरारनामा द्वारा इस मन्दिर में प्रतिवर्ष विवाह-महोत्सव श्री पुजारी जी के स्वरूपों द्वारा ही फाल्गुन शुक्ला २ से दशमी तक बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। श्री मुन्शी जी ने अपने जीवन के बाद मन्दिर का एवं इसमें लगी हुई भूमि का भी समस्त अधिकार पुजारी श्री रामशंकरशरण जी के नाम से लिख दिया है।

सज्जनो! श्री सिद्धकिशोरी जू के कथनानुसार यह मंडप उनके बाद ही पूर्णतया तैयार हुआ; मैं भी चार बार वहाँ का दर्शन कर चुका। श्री किशोरी जी की प्रतिमा की यों तो मन्दिर में प्रतिदिन पूजा होती ही है, परन्तु दुख इतना है कि वह प्रत्यक्ष रूप में इसको न देख सकीं, उनकी लीला अपरम्पार है, जिसका न कोई पारावार है।

(८६) सरयाँ जिला छपरा, यह वह मुकाम है, जहाँ भक्तवर श्री रामाँ जी महाराज ने स्वयं पक्के चार विवाह-मंडपों का (श्री अवध, श्री बक्सर, श्री सीतामढ़ी, श्री जनकपुर) निर्माण करते हुये श्री नौशा बबुआ दुल्हा सरकार श्री सीतराम जी के शुभ विवाह-कलेवा, चौथारी एवं झाँकी उत्सवों का प्रचार कर परम आनन्द प्राप्त करते हुये अन्तिम समय में भी इसी ग्राम से श्री साकेतधाम के लिये प्रस्थान किया था। उधर आप की शुभस्मृति में सड़क के समीप ही तालाब के किनारे पुजारी श्री रामशंकरशरण जी महाराज ने एक पक्की समाधि भी बनवाई

है। और इधर सरयाँ ग्राम निवासी श्रीमान् राजाबाबू एवं राजेन्द्र बाबू के द्वारा श्री बिहौती समाज के स्वरूपों द्वारा ही छः सात दिन के लिये विवाह-कलेवा उत्सव प्रतिवर्ष हुआ करता है। सन् १६३७ में जब कि मैं (लेखक) भी समाज के साथ यहाँ पहुँचा था, विवाह उत्सव समाप्त होते-होते श्री पुजारी जी ने विवाहमंडप में ही जनता को इस बात की घोषणा की थी, कि कल प्रातःकाल आठ बजे से इसी मंडप में कलेवा उत्सव प्रारम्भ होगा। सूचना पाते ही दूसरे दिन प्रातःकाल से आसपास के ग्रामों की भावुक जनता दर्शनार्थ एकत्रित होने लगी। नौ बजते-बजते हजारों लोग जमा हो गये। परन्तु किसी कारणविशेष से कलेवा ८ बजे न होकर एक बजे दिन से ही आरम्भ होने लगा। सब प्रेमी भूखे थे, राजाबाबू का कथन है कि मुझे भी भूख लगी थी इसलिये घर में जो दाल भात साग बना था, मैं ने चुपके से उस का भोजन कर लिया और किसी से कुछ कहा नहीं। और कलेवा उत्सव की समस्त भोग की सामग्री को टोकरों में भर भरा प्रेमी लोगों से उठवा कर, मैं स्वयं कलेवा-मंडप की तरफ लिवा जा रहा था, कि श्री सिद्धकिशोरी जू (जो कि उस समय श्री सीतामंढ़ी-मंडप में विराजमान थीं) मुझे बुलाकर कलेवा की समस्त सामग्री अपने ही समीप रखवाली, और अपने दयालु स्वभाववश कई प्रेमीजनों को जो कि भूखे थे, बुला-बुला कर अपने हस्तकमलों द्वारा बालभोग बाँटने लगीं। राजा बाबू का कथन है कि सब की देखा देखी मैंने भी जब बालभोग माँगा तो मुझे श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि आप तो छुप कर घर में दाल, भात, साग खाकर पेट भर आये हैं। आप भूखे तो हैं नहीं, अच्छा आप भी दो पूड़ी और साग प्रसाद-रूप में ले लें। राजाबाबू ने प्रसाद तो ले लिया, परन्तु जब देखा कि बहुत लोग हाथ फैलाये हैं और सबको श्री किशोरी जी प्रसाद बाँट

रही हैं, तो समीप के कलेवा-मण्डप में जाकर तुरन्त श्री पुजारी जी को इस की सूचना दे दी, श्री पुजारी जी श्री किशोरी जू के समीप चले आये और प्रार्थना करने लगे कि सरकार! यह समस्त सामग्री तो कलेवा के निमित्त घर में बनाई गई है यदि आप इसको बालभोग में ही बाँट देंगी तो फिर कलेवा उत्सव कैसे होगा? श्री किशोरी जू ने उत्तर दिया, कि आपकी सूचना पाकर यह सब प्रेमी लोग दूर-दूर से प्रातःकाल ही आ गये हैं, अब दो बजना चाहते हैं, जो भूखे हैं, इनको बालभोग दे रही हूँ, आपको इसमें क्या आपत्ति है। पुजारी जी ने उत्तर दिया कि केवल एक घण्टा के पश्चात् हमको इस सामग्री की कलेवा के निमित्त जरूरत पड़ेगी, अगर यह सब बँट गई, तो राजाबाबू की हँसी होगी। श्री किशोरी जी ने कहा, आप जाईं महाराज जी! सामान कम न पड़ी। यदि इस समय भूखों को बालभोग मिल गया तब तो राजा बाबू की प्रशंसा होगी, और यदि यह लोग भूखे रह गये, तभी तो इनकी हँसी होगी। श्री पुजारी जी इनके अनेकों चमत्कार देख चुके थे, इनको विश्वास हो गया कि सामग्री कम न पड़ेगी। दो बजे से कलेवा उत्सव प्रारम्भ होकर ६ बजे समाप्त हुआ। क्यों न हो? जिस सामिग्री में श्री किशोरी जू के करकमल का स्पर्श हो जाय, तब भला वह कम कैसे पड़ सकती थी? उस कलेवा प्रसादी को आड़े हाथों दर्शक गणों में बाँटा गया तो भी कम नहीं पड़ी, बल्कि बच ही गई।

पाठको! राजा बाबू को भारी अचम्भा पहिले तो इस बात का था कि हमारे गुप्त रूप से भोजन करने का हाल श्री सिद्ध-किशोरी जू ने जान लिया, दूसरे कलेवा की सामग्री खूब आड़े हाथों लुटाने पर भी कम नहीं पड़ी; इसलिये श्री किशोरी जू को जो श्री सिद्धकिशोरी जी कहा जाता है, वास्तव में यह अक्षरशः सत्य है। इस प्रकार के अनुपम चमत्कार को प्रत्यक्ष देख कर

राजा बाबू तो बड़े ही प्रभावित हुये। तब से प्रतिवर्ष आप प्रेम-पूर्वक इस बिवाहोत्सव को मनाते ही जा रहे हैं, आप को दृढ़ विश्वास हो चुका है कि इस उत्सव के कराने से हमें कभी कुछ हानि नहीं हुई बल्कि लाभ ही होता है। श्री सिद्धकिशोरी जी के पश्चात् मुझे भी (लक्ष्मीनिधि) चार पाँच वार सरैयाँ जाकर राजा बाबू के घराने का सरकारों के प्रति पुनीत प्रेम देखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

(६०) लहरिया सराय जाने के लिये हमको दरभंगा स्टेशन पर गाड़ी बदलनी थी। ज्योंही गाड़ी से हम लोग उतरे, श्री युगल सरकार के गौर-श्याम मनोहर दर्शनमात्र से स्टेशन के बाबू एवं यात्री छक गये। सब ने चारों तरफ़ से सरकार को घेर लिया, उस समय श्री युगल सरकार की आभा, तेज, अनोखा एवं अनुपम प्रतीत हो रहा था, मालूम पड़ता था कि भगवान ही साकेतलोक से पधारे हैं। थोड़ी देर में उनके दर्शन के लिये समस्त ट्रेन के यात्री गाड़ी से उतर-उतर कर मुझसे पूछने लगे बाबा जी! कहिये! आप लोग कहाँ से पधारे हैं, कहाँ के रहने वाले हैं; कहाँ जाने का विचार है और क्या आप ही इस समाज के मुखिया और मालिक भी हैं? उस समय श्री पुजारी जी एक मैली सी खादी की बंडी पहिने, ऊपर से एक फटा पुराना कम्बल ओढ़े बैठे-बैठे सरकारी सामान की रखवाली कर रहे थे। मैंने उन्हीं की तरफ़ संकेत करके मुसाफिरों से कहा कि इस कीर्तन समाज के मालिक आपही हैं, जो कुछ भी पूछना चाहें इन्हीं से पूछ लें। जब वह लोग पुजारी जो से पूछने लगे तो आप उत्तर देते हैं, बाबू साहब! आप लोग तो पढ़े लिखे बुद्धिमान हैं फिर इन महात्मा जी की बातों में कैसे आ गये। हम मालिक कहाँ के हैं हम तो निकम्मे मजदूर हैं, इनका सामान ढो देते हैं और कुछ सेवा भी कर देते हैं, तब खाने को मिल जाता है। पहले इन

बाबा जी की सूरत और पोशाक को, इन दोनों बालकों की सूरत और पोशाक से मिलान करके तो देखो तब आप को मालूम हो जायगा कि मालिक कौन हैं और नौकर कौन ? इस प्रकार की चतुरता से श्री पुजारी जी स्वयं तो पृथक हो गये और झगड़े में मुझे ही डाल दिया। उन सब के बारम्बार बाध्य करने पर मुझे भी सच-सच कह देना पड़ा, कि न तो मैं मालिक हूँ और न ही यह दोनों बालक मेरे लड़के, भाई या चेले हैं, बल्कि मालिक यही (पुजारी जी) हैं। इन्हें कुछ कम न समझना, यह तो गुदड़ी में छिपे हुये लाल हैं। यह दोनों बालक इन्हीं के चेले हैं, और भी हज़ारों लोग इनके चेले हैं, कई हाकिम, अहलकार एवं सेठ-साहूकार भी इनको अपना पूज्य गुरुदेव मानते हैं।

गाड़ी चले जाने के बाद स्टेशन स्टाफ़ ने हम लोगों को फर्स्ट क्लास वेटिङ्गरूम में निवास देकर जलपान का भी प्रेमपूर्वक प्रबन्ध किया; और गाड़ी के आते ही हम सबको फर्स्ट क्लास में बैठा कर लहरिया सराय स्टेशन पर भिजवा दिया। चार बजे हम लोग लहरिया सराय स्टेशन पर पहुँच कर बाबू जंगबहादुर जेलर के क्वार्टर में पहुँचे। उन्होंने जब श्री युगल सरकार का समाज सहित अचानक दर्शन किया तो कृतकृत्य और निहाल हो गये, और कहने लगे कि मैं तो स्वयं सरकारी दर्शनार्थ श्री अयोध्या जी जाने वाला था। अहोभाग्य! "कुआँ प्यासे के पास आया!" आप ने बड़े प्रेम और उत्साह से सबका आगत स्वागत करते हुये ब्यारू एवं रात्रि के विश्राम के लिये भी यथोचित प्रबन्ध किया। आप श्री युगल सरकार के अनन्य भक्त एवं पुजारी जी महाराज के गुरु भाई भी हैं; जो कि इस समय श्री गया जी में Jail supdt. हैं। दूसरे दिन रात को श्री युगल झाँकी होनी थी, इधर सवेरे श्री सिद्धकिशोरी जी ने जेल के अन्दर के समस्त कैदियों को देखने की अभिलाषा

प्रकट की तो जेलर सा० ने तुरन्त उनकी रुचि के अनुसार जेल का दृश्य दिखलाया। मैं भी श्री युगल सरकार के साथ था, अन्दर जाकर क़ैदियों को देखते ही श्री किशोरी जू के दयालु हृदय में एक भारी करुणा उत्पन्न हुई, तभी तो स्वयं जेल के अन्दर जाकर समस्त क़ैदियों को अपना अनुपम दर्शन देकर उन को कृतार्थ किया, इधर क़ैदियों ने श्री सरकार के दयालु स्वभाव की प्रशंसा करते हुये अपने भाग्यों की भी सराहना की, बहुत से क़ैदी तो श्री युगल सरकार की विदाई की ख़बर सुन कर जेल में रोने ही लगे, बहुत प्रेमावेश में आकर गुणों का गान करने लगे, तो बहुत से उनकी छविमाधुरी का अवलोकन कर अपने भाग्य की ही सराहना करने लगे, कि सरकार ने स्वयं यहाँ पधार कर और हम सब को दर्शन देकर कृतार्थ किया है।

बाबू जंगबहादुर साहब ने बिदाई के समय प्रेमपूर्वक सेवा करते हुये अपनी उदारता का पूर्ण परिचय दिया, धन्य है आपकी भक्ति एवं आपके पुनीत प्रेम को। आपका अधिक समय भगवत् कीर्तन एवं श्री रामायण जी के गाने-बजाने में ही व्यतीत होता है, आप एक उच्चकोटि के कवि भी हैं।

(६१) श्री रामदयालुसिंह जी स्पीकर लेजिसलेटिव एसेम्बली पटना के यहाँ हाजीपुर जाते समय की एक अनुपम घटना जो रेलगाड़ी में ही हुई थी वह इस प्रकार है। श्री पुजारी जी अपने परिकर एवं सामान सहित थर्ड क्लास में बैठ गये थे, भीड़ अधिक थी, इसलिये मैं श्री युगल सरकार को लेकर सेकंड क्लास में बैठ गया और टी० टी० आई० को अधिक किराया देकर दो टिकट सेकण्ड क्लास के बनवा लिये। उस डिब्बे में केवल ६-७ यात्री बैठे थे, उनमें से एक नई रोशनी के भले मनुष्य भी थे, जिनकी आयु पचास से कम एवं साठ वर्ष से

अधिक न थी, जिनमें वर्तमान शिक्षा की तो कमी न थी, वह एम. ए. एल-एल. बी. थे। धार्मिक वातावरण का उनके मस्तक में स्थान ही कहाँ ? तीर्थ यात्रा एवं सत्संग में जिनकी रुचि न थी और शिमला आदि पहाड़ों की हवा खाने में जिनको हिचक न थी। चलती गाड़ी में उन्होंने पहिले तो श्री युगल सरकार की श्यामगौर सूरत को देखा, फिर मेरी ओर देख कर बोले कहिये बाबा जी! यह दोनों बालक आपके भाई हैं अथवा लड़के ? मैंने उत्तर दिया न भाई और न ही लड़के। तो क्या यह आप के चेले हैं ? मेरा जवाब था कि नहीं, यह मेरे चेले नहीं हैं, मैं ही इनका चेला हूँ! बस मेरा इतना कहना ही था कि वह साहब आपे से बाहर हो गये। झुँझला कर कटु शब्दों की बौछारें मेरे ऊपर डालते हुये बोले, कि पचास-साठ वर्ष के आप तो बूढ़े बाबा जी, और यह केवल दस ग्यारह वर्ष के छोटे-छोटे गृहस्थ बालक, हमें भारी अचम्भा होता है कि यह दोनों बालक आप के गुरु कैसे ?

पाठको! मैंने उनके कटु अपशब्दों की बौछारों को भी सहन करते हुये नम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि छोटी बड़ी उम्र एवं गृहस्थ विरक्त वेष-भूषा पर ही कुछ निर्भर नहीं रहता, जिस किसी से कुछ अच्छी शिक्षा प्राप्त हो तो उसको गुरु मानने में आप को कौन आपत्ति है ? देखिये ! श्री दत्तात्रेय जी महाराज के चौबीस गुरु थे, तो क्या वह सब उनसे उम्र में बड़े ही थे ? अजी जरा मन्त्र ही को लीजिये, एक छोटे से मन्त्र से परम स्वतन्त्र परमात्मा को भी वशीभूत होना पड़ता है। हाथी को ही देखिये वह कितना भारी मस्त मतवाला जानवर है, परन्तु उसको भी केवल लोहे का एक छोटा सा अंकुश ही अपने काबू में कर लेता है, कहाँ तक कहा जाय, घोड़े और बैलों को वश में करने अथवा हाँकने के लिये केवल एक छोटा सा चाबुक एवं डण्डा

ही पर्याप्त होता है ! तब विचारिये कि वहाँ छोटे बड़े का सवाल ही कहाँ रह जाता है ? किसी का तेज, प्रभाव, शक्ति एवं सिद्ध चमत्कार को ही देखा जाता है, न कि उसकी उम्र या बड़ी-बड़ी दाढ़ी मूछों को। देखिये तो ! परमहंस श्री सुखदेव जी महाराज कब बूढ़े थे और उनकी दाढ़ी-मूछें भी कहाँ थीं ? वे तो केवल पन्द्रह सोलह वर्ष के बालक ही थे न, जिनके चरणों में बड़े-बड़े सिद्ध ऋषि, मुनियों, महान पुरुषों के मस्तक नवते थे और उनको जगद्‌गुरु मानते हुये इसी में अपना गौरव समझते थे। केवल इतना ही नहीं श्री सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार जी को भी देखिये वह चारों तो केवल पाँच-पाँच वर्ष की आयु के बालक ही तो थे न; उनकी भी दाढ़ी मूँछ एवं लम्बी-लम्बी जटायें कहाँ थीं ? उनके चरणों की रज को तो अच्छे-अच्छे वयोवृद्ध, वीतराग, महात्मा ऋषि महर्षि तक अपने मस्तक पर धारण करने में ही अपना गौरव समझते हुये उनके उपदेश सत्संग द्वारा कृतकृत्य होकर पूर्ण मनोरथ हो जाते थे। तब आप ही बतलाइये कि छोटी बड़ी उम्र पर क्या निर्भर रह जाता है ? अजी एक छोटी सी अपकीर्ति भी मनुष्य की समस्त बढ़ी हुई कीर्ति को नष्ट कर देती है। इतने भारी शरीर में थोड़ा सा भी कुष्ठ सम्पूर्ण शरीर की शोभा को नाश कर देता है। घड़े भर जल को एक बूँद मदिरा भी अपेय बना देता है ! एक छोटी सी चींटी तो कान में घुस कर हाथी को भी मार देती है। एक छोटी सी कलम लाखों करोड़ों पुस्तकों को लिख डालती है। बाबू सा० ! कहाँ तक कहा जाय; जरा और भी देखिये तो, आग की जरा सी चिनगारी बड़े भारी शहर को जला देती है। और जरा सा संखिया (Poison) एक भारी पहलवान को मौत के घाट पहुँचा ही देता है। एक छोटा सा बीज भी बड़े भारी जंगल का निर्माण कर सकता है। बन्दूक का एक छोटा

सा जहरीला छर्रा या गोली एक मस्त हाथी एवं शेरे बबर तक को एक क्षण में हलाक़ कर सकती है। एक छोटा सा तोप का गोला बड़े भारी महल एवं पर्वत को चकनाचूर कर सकने में समर्थ है। एक छोटा एटमबम प्रलय का ही दृश्य दिखा देता है।

पाठको ! मैंने अपनी लघुबुद्धि अनुसार जहाँ तक मुझसे हो सका, अपना पल्ला छुड़ाने के लिये उनको प्रेमपूर्वक समझाया, परन्तु क्या कहूँ, वह तो बड़े जिद्दी एवं अभिमानी थे, इसलिये अपनी बुद्धि के सामने किसी को कुछ भी न समझते हुये मेरी एक भी न मानी, और यों ही बड़बड़ाते रहे, कि यह बाबाजी बड़े झूठे हैं, छोटे-छोटे लड़कों को अपना गुरु मान रहे हैं। यद्यपि दूसरे उपस्थित यात्रियों ने भी उनको समझाया कि यह दोनों बालक श्री सीताराम जी के लीलास्वरूप हैं, यदि बाबा जी ने इनके चरित्रों से प्रभावित होकर इनको अपना गुरु मान रखा है तो बुरा ही क्या किया है? अपनी-अपनी भावना अलग-अलग हुआ करती है, इसलिये हमारी समझ में तो इन्होंने कुछ भी अनुचित नहीं किया। अब इसमें आपको क्या आपत्ति है। दूसरों के समझाने-बुझाने पर भी वह साहब टस से मस नहीं हुये, किसी की एक भी नहीं मानी, और सच है मानते भी कैसे ? एक तो उन पर प्रभुता पाने से गर्व का भूत सवार, दूसरे जो सनातनधर्मी नहीं, जो अनीश्वरवादी हैं, अथवा जिसने अपने जीवन का ध्येय केवल खान-पान एवं हास-विलास को ही मान रखा हो, उसके लिये तो साक्षात् भगवान भी कोई वस्तु नहीं हैं। तब भला इनके सामने साधु-सन्त एवं श्री लीला-बिहारीस्वरूप किस गिनती में हो सकते थे ? एक तरफ से तो थी नास्तिकता की धुन सवार, और दूसरी तरफ से केवल श्री युगल सरकार के नाम के आधार पर जीवित रहने वाला मैं

श्री रामजी का सार, भला कर ही क्या सकता था। मैं तो भगवान के बल एवं भरोसे पर चुप लगा कर श्री युगल सरकार की रूपमाधुरी का आस्वादन ही करने लगा।

सज्जनो ! उसे तो भारी अभिमान हो गया था कि मैं सर्व-श्रेष्ठ और भारी विद्वान् हूँ। इसके अभिमान को चूर करना था; अतः गर्वहारिणी श्री सिद्धकिशोरी जू ने उसके गर्व को खर्व करने के निमित्त ही एक ऐसी क्रीड़ा रची; ऐसा विनोद किया, कि जिससे उसके अभिमान का अंकुर जड़मूल सहित नष्ट हो गया। मुझे जुकाम के कारण नाक साफ़ करने की ज़रूरत पड़ी, उस समय वायु जोरों से चल रही थी, और इधर के दरवाज़े के समीप श्री युगल सरकार विराजमान थे, चलती रेलगाड़ी में हो सकता था, कि गन्दगी उड़कर कहीं सरकार पर आ पड़े। इसी ख्याल से दूसरी तरफ के दरवाजे की ओर मैं जाकर ज्योंही खिड़की से झुक कर नाक साफ़ करने लगा, दरवाजा की सिटकनी खुली थी; अकस्मात् दरवाज़ा खुल गया; उसी के साथ मैं गिरकर ख़तम ही हो जाता, परन्तु दयासागरी श्री किशोरी जी ने अपनी जगह पर बैठे बैठाये आजानुबाहु का दृश्य दिखाते मुझे भैया ! भैया ! कह कर पकड़ लिया, और मैं नीचे गिरने से बच गया। जब कि मेरे गिरते समय भी उस भले आदमी ने खुशी का एक नारा लगाते हुये कहा "अच्छा हुआ।" परन्तु जो सेवक निरन्तर केवल भगवान के ही आसरे पर रहता हो तो उसकी रक्षा को भगवान भूल जायँ; भला ऐसा कब हो सकता था ? और उस मूर्ख को यह ज्ञान भी कहाँ था, कि अपने निरा-पराधी सेवक की इस प्रकार की दुर्दशा भी भगवान कब सहन कर सकते हैं ? यह तो केवल सरकारी लीला थी, उस अभिमानी का सुधार करना था ! श्री सिद्धकिशोरी जी के इस प्रकार के अनुपम चमत्कार एवं प्रभाव को प्रत्यक्ष देखकर गाड़ी में बैठे

हुये समस्त यात्री दंग रह गये और श्री युगल सरकार के साथ-साथ मेरे चरण छूते हुये मेरे भाग्य की भी सराहना करने लगे। अब तो उस भले आदमी का दिमाग भी ठिकाने आया, उनके हृदय में जो अहंकार का अंकुर उग कर जड़ पकड़ चुका था, इस अद्भुत घटना से वह भी जड़मूल सहित सर्वथा नष्ट हो गया। तभी तो वह लज्जित होकर श्री किशोरी जी एवं श्री रामजी के चरणों के साथ-साथ मेरे पाँव स्पर्श करते हुये बोले ! श्री युगल सरकार के अनुपम दर्शन कर मैं परम सन्तुष्ट हुआ। इस देह धारण करने का परम फल मुझे तो आज ही प्राप्त हो गया। मुझे इन बालकों का प्रभाव मालूम न था, आज मैं सचमुच आप की ही कृपा से कृतार्थ हो गया। आप से भी वृथा वाद-विवाद के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। इधर श्री युगल सरकार के चरण पकड़ कर फिर प्रार्थना करने लगे कि सरकार ! आपके कृपाप्रसाद की एक भिक्षा चाहता हूँ, कि मेरा मन सदा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं अभिमान से शून्य होकर निरन्तर आपका ही स्मरण, भजन करता रहे और सर्वकाल में सर्वदा सर्वत्र श्री सीताराम नाम को जपता रहे। इस प्रकार से श्री युगल सरकार का आशीर्वाद ले उनकी कृपा को प्राप्त कर उनके श्री चरण कमलों की धूलि को अपने सिर पर रख उनकी मन्द-मन्द मुसकान युक्त मधुर छवि को हृदय में धारण करते हुये वह साहेब (कलकत्ता वासी बाबू द्वारिकाप्रसाद जी) अगले स्टेशन पर उतर गये। देखा पाठको ! श्री सिद्धकिशोरी जी ने किस तरह से अपनी क्रीड़ा के लिए एक नया कौतुक रच कर उसके अहंकार को दूर किया एवं उस कट्टर नास्तिक को आस्तिक बना डाला। श्री लीलाधारी का विनोद एवं लीला ही तो ठहरी !

भगवान् के इस प्रकार के रहस्य को समझाने के लिये बहुत ही श्रद्धायुक्त हृदय की आवश्यकता है, क्या पाश्चात्य विद्या

के मद में धर्म को ढोंग एवं भगवत् लीला को केवल स्वांग समझने वाले पुरुष श्री सिद्धकिशोरी जू के ऐसे अपूर्व और अनुपम चमत्कारों द्वारा कुछ अपने हृदय के विकारों एवं तर्क-वितर्क को दूर कर सकेंगे ? इस घटना का विचित्र प्रभाव दूसरे यात्रियों पर भी पड़ा, उनकी भी श्री लीलाविहारी स्वरूपों में अटूट श्रद्धा एवं सच्ची भावना उत्पन्न हो गई, उन सब के हृदय में अपूर्व उल्लास था, अहलाद था, इसलिये श्री युगल सरकार की जयजयकार मनाते हुये श्री रामनाम प्रेम प्याला परस्पर पीने पिलाने की प्रतिज्ञा करने लगे।

थोड़ी ही देर बाद हम लोग हाजीपुर स्टेशन पर पहुँचे, श्री रामदयालु बाबू एवं वहाँ की समस्त प्रेमीजनता ने प्रेमपूर्वक उत्साह से जिस प्रकार स्वागत किया एवं आदरपूर्वक गाजे-बाजे सहित हमारे समाज को सवारियों पर बैठा कर अपने घर ले गये, उसका वर्णन करना कठिन है, दस-बारह दिन तक वहाँ विवाह-कलेवा एवं झाँकियों के अतिरिक्त झूले का भी अपूर्व आनन्द हुआ। उस आनन्द की वर्षा में लोगों ने प्रेम-पूर्वक स्नान किया एवं प्रेमी समाज ने छक-छक कर श्री युगल सरकार की छवि-सुधा का भी पान किया। वहीं की एक दिन की घटना का वर्णन इस प्रकार है।

(६२) श्री गंडकी (सालिगरामी गंगा जी) में नौका पर श्री युगल झाँकी हो रही थी, अचानक आँधी जोरों से आ गई हमारी नाव डूबना ही चाहती थी कि मैं (लेखक) ने श्री किशोरी जी के चरण पकड़ कर निवेदन किया। सरकार ! क्या मेरे राम को अब श्री गुरु महाराज का दर्शन न होगा ? तब श्री किशोरी जी ने कहा भइया ! घबड़ाते क्यों हो देखो तो आँधी बह गई बह गई बस ! इतना कहते ही आँधी बन्द हो गई और हमारी नाव जो

मझधार में थी, देखा तो घाट के ही समीप खड़ी है।

(६३) जिस समय श्री बिहौती समाज पटना से मोटर द्वारा बड़ोराज्य स्टेट में पहुँचा तो वहाँ प्रतिदिन श्री युगल सरकार की अष्टयाम झाँकीयुक्त श्री रामार्चा:, श्री रामनाम एकाह:, श्री राम बिवाह-कलेवा के अतिरिक्त बड़े समारोह से नित्य नवीन बाँकी झाँकियाँ भी होती रहीं, १०-१२ दिन तक समाज को वहाँ रहना पड़ा। श्री सिद्धकिशोरी जू के अनुपम चमत्कारी चरित्रों को देख-सुन कर वहाँ की जनता अति प्रभावित हुई, यहाँ तक कि उस समय कई प्रेमीजन श्री पुजारी जी महाराज के शिष्य भी बन गये, विदाई के समय पर भी प्रेमी लोगों ने सेवा द्वारा अपनी उदारता एवं पुनीत प्रेम का पूर्ण परिचय दिया, यहाँ से बिदा होते समय की एक घटना इस प्रकार है :—

बड़ोराज्य से बिदा होकर मोतीपुर स्टेशन जाना था, स्टेशन वहाँ से केवल तीन मील दूर था। इसलिये श्री पुजारी जी मोटर-कार द्वारा अपने सामान एवं परिकर सहित पहले स्टेशन के लिये रवाना हो गये। जब वहाँ से मोटर वापस आया तो हमलोग (श्री युगल सरकार, शृंगारी जी, लेखक) चारों उस मोटर में बैठ गये तब मैंने ड्राइवर से गाड़ी जल्दी चलाने को कहा। इधर श्री किशोरी जी बोल उठीं कि हमको आज रेल गाड़ी तो मिल नहीं सकेगी, फिर शीघ्रता करने की क्या आवश्यकता है। ड्राइवर ने उत्तर दिया कि मोतीपुर स्टेशन यहाँ से केवल तीन मील है, रेलगाड़ी के आने में भी अभी एक घण्टे की देरी है, हम तो पन्द्रह-बीस मिनट में ही सरकार को स्टेशन पर पहुँचा देंगे, फिर गाड़ी कैसे न मिलेगी ? दुबारा श्री किशोरी जी ने कहा कि कितने भी उपाय क्यों न करो, हमको यह गाड़ी कदापि न मिल सकेगी, कारण कि इस मोटर का

एक चक्का (पहिया) डेढ़ मील की दूरी पर जाकर फटने वाला है है। परस्पर वार्तालाप हो ही रही थी कि कार का एक पहिया डेढ़ मील की दूरी पर जाकर श्री किशोरी जी के कथनानुसार फट ही तो गया, उसको ठीक करने कराने में अधिक समय लगा जिससे स्टेशन पर पहुँचते-पहुँचते रेलगाड़ी छूट गई। सज्जनो ! यह है श्री किशोरी जू की भविष्यवाणी का अपूर्व चमत्कार।

(६४) सज्जनो। श्री सिद्धकिशोरी जी की रुचि एवं आज्ञानुसार श्री बिहौती समाज में मुझे श्री युगल सरकार की सेवा में चार मास से कुछ अधिक काल तक रह कर देशाटन करने का भी शुभ अवसर प्राप्त हुआ जिसका मुझे स्वप्न में भी भान न था। श्री अवधधाम से श्री युगल सरकार का साथ छोड़ने की इच्छा न होने पर भी उनसे बिदा होकर अपने शुभ स्थान गुरुद्वारा जाने के लिये उनसे जब बिदा होकर श्री युगल सरकार को मैं अन्तिम दण्डवत् करने लगा, तो मेरा हृदय इतना भर आया कि उसका बोझा भी मुझसे सँभलना कठिन हो गया, मैं यथा-शक्ति चलने का प्रयत्न तो करता, परन्तु चल ही नहीं सकता था, आगे को कदम उठाता, परन्तु वह बरबस पीछे ही पड़ता कारण कि हृदय की लगन जिस ओर लग जाती है उसके बंधन अधिक से अधिक मजबूत हो जाते हैं।

इसी दिशा में न जाने मैं कितने दिनों तक श्री अयोध्या जी में ही चक्कर लगाता रह गया। एक दिन श्री सिद्धकिशोरी जू जब कि अपने मसहरीदार सुन्दर नवीन पलङ्ग पर बिराजमान थीं; उनकी चितवन मन्द-मन्द मुसकान से युक्त थी; वे अत्यन्त स्नेह से मेरी ओर निहारती हुई मुझसे कृपापूर्वक कहने लगीं, भैया ! आप अपने स्थान में जाने से क्यों इतना हिचकिचा रहे हो, किस लिए घबरा रहे हो ? यदि आप को गुरुदेव से डर